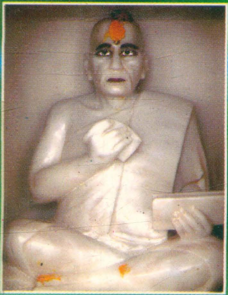

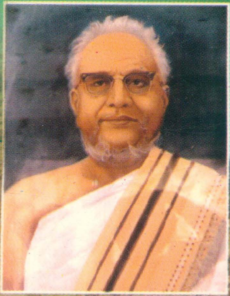

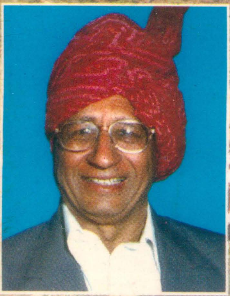

श्री चम्पालाल पारख (अध्यक्ष)

नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका

प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी

- भूरचन्द जैन

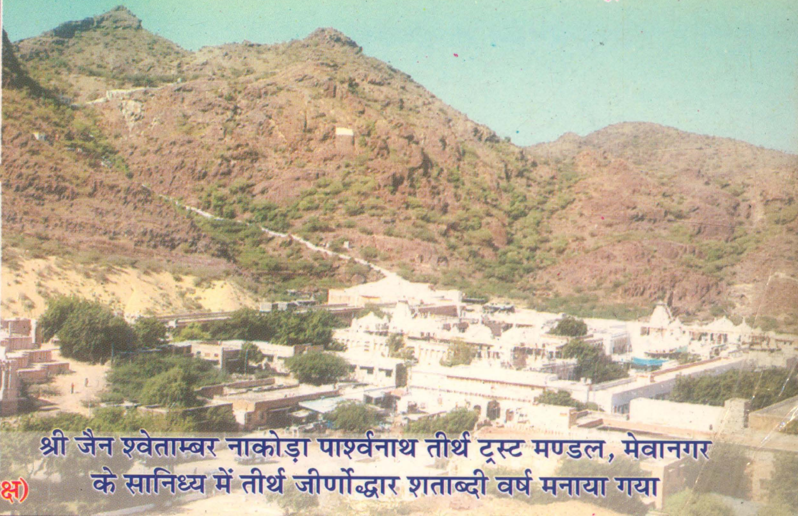

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट मण्डल, मेवानगर
के सानिध्य में तीर्थ जीर्णोद्धार शताब्दी वर्ष मनाया गया

प्रकाशन सहयोगी

श्री चम्पालाल पारख

श्रीमती रेशमीदेवी चम्पालाल पारख

श्री रतनलाल पारख

श्रीमती जसोदादेवी रतनलाल पारख

श्री कुशलराज पारख

श्रीमती लीलादेवी कुशलराज पारख

प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा.

नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका
प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी

- भूरचन्द जैन -पत्रकार
बाड़मेर (राज.)

नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी

- **समर्पण**

प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा.

- **प्रकाशन सहयोगी**

श्री चम्पालाल पारख
अध्यक्ष-श्री जैन श्वे.नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट मण्डल
मेवानगर (बालोतरा) जिला-बाड़मेर (राज.)

- **लेखक**

भूरचन्द जैन-पत्रकार
जूनी चौकी का वास, बाड़मेर (राज.)
फोन : (02982)220430 (O) 220943 (R)

- **प्रकाशन**

अरिहंत प्रकाशन
अरिहंत भवन, सदर बाजार, बाड़मेर (राज.)।
फोन : (02982)220430 (O) 220943 (R)

- **डिजायन सेटिंग**

विनोद दवे
दवे कम्प्यूटर्स, बाड़मेर (राज.)।
फोन : (02982) 223887 (R), 9414383676 (M)

- **प्रिन्टर्स**

श्याम प्रिन्टिंग प्रेस, जोधपुर।
फोन : (0291) 2553549, 2633133

- **संस्करण-** 2005 (वि.सं.2062)

- **अवसर**

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ मेवानगर
जीर्णोद्धार शताब्दी वर्ष

- मूल्य - 25/- (पच्चीस रूपये मात्र)

इस राशी का उपयोग श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ के लिए

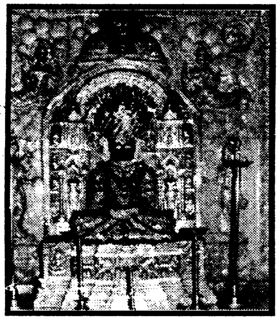

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथजी

अधिष्ठायक श्री नाकोड़ा भैरवजी

नमः

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ की जीवन पर्यन्त सेवा करने वाली परम पूजनीय प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी महाराज साहब के पावन चरणों में सादर समर्पित।

- चम्पालाल पारख
- भूरचन्द जैन

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथजी

अधिष्ठायक श्री नाकोड़ा भैरवजी

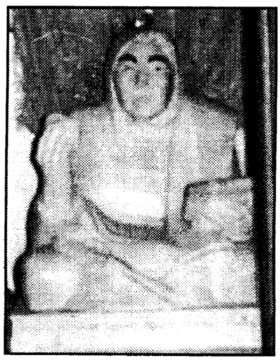

प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा.

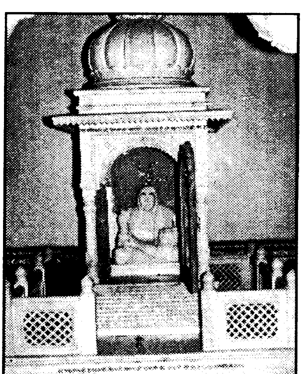

प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा.
की नाकोड़ा में छत्री

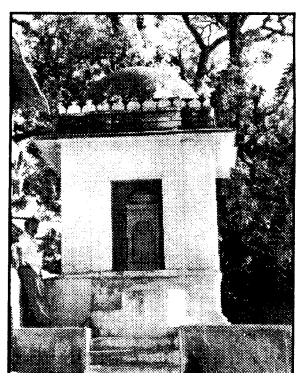

प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा.
की तखतगढ़ में छत्री

दो शब्द

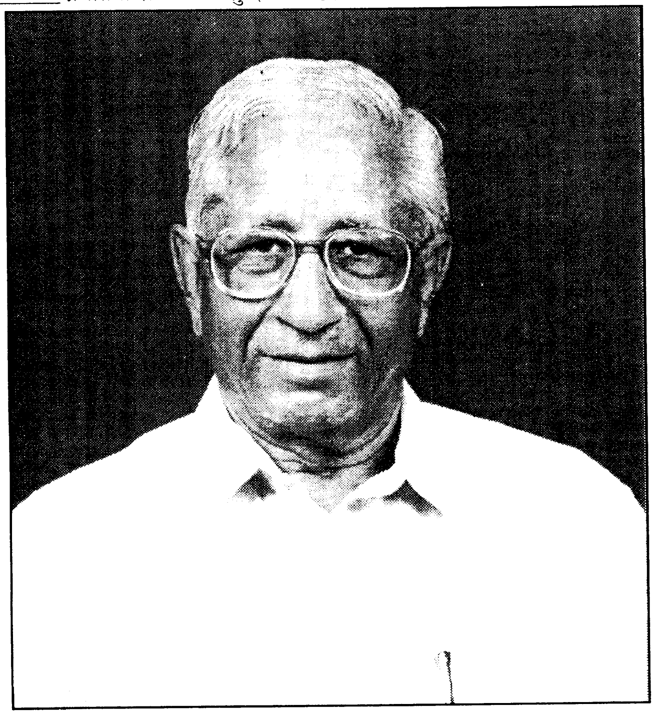

वर्तमान काल में श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजकों का अग्रगण्य तीर्थ है। लाखों यात्री यहां श्रद्धा एवं भक्ति के साथ हर वर्ष आते हैं। इस तीर्थ की प्राचीनता लगभग दो हजार वर्ष पूर्व के इतिहास से सम्बन्ध रखती है। पूर्व में इसका नाम वीरमपुर नगर था, जो वीरमसेन ने बसाया था। काल के अनेक थपेड़ों को सहन करते हुए नाकोड़ाजी तीर्थ उत्थान-पतन के अनेक खट्टे-मीठे अनुभवों का ज्वलंत साक्षी है। वह आज पुनः दूज के चांद की तरह विकासोन्मुख गतिविधियों से चहक रहा है।

विक्रम संवत् 1500 के आसपास यह तीर्थ पुनः विकास एवं समृद्धि के शिखर पर था। उस समय जैन ओसवाल समाज के 2700 (दो हजार सात सौ) परिवार यहां रहते थे। ऐसा भी उल्लेख है कि उस समय 50 (पचास) हजार की आबादी का यह नगर था। इसी अर्से में मेरे पूर्वज वर्तमान बालोतरा का पटवारी परिवार जो पालीवाल गच्छ के थे, गुजरात के पाटन नगर से यहां स्थलान्तर करके बस गये थे। तब से आज तक हमारे परिवार को इस तीर्थ की अनेक विध सेवाओं का लाभ प्राप्त होता रहा है। कालान्तर में यहां के राज्य परिवार के मनचले कुंवर ने जैन समाज के अग्रणी मालाशाह के परिवार के साथ तिरस्कार एवं तोछड़ापूर्वक ठस्सा मसकरी करने के कारण यहां के जैन परिवार नाराजगी के साथ अन्य अनेक नगरों में स्थलान्तर करके चले गये और धीरे-धीरे पुनः यह तीर्थ नगर वीरान हो गया।

पहाड़ों के बीच घने जंगलों से घिरा हुआ होने से यहां जंगली जानवर एवं सांप, बिच्छु आदि का प्रकोप बढ़ गया। दुर्गम रास्तों के कारण यात्रियों का आवागमन नहीं-वत हो गया। मन्दिर खण्डहरों में बदलने लगे और परमात्मा की भयंकर आशातना होने लगी। राजनैतिक वातावरण भी बिगड़ा हुआ था। यवनों के आतंक से धर्मप्रिय प्रजा भयभीत थी। ऐसे प्रतिकूल वातावरण में एक चमत्कार हुआ। पूज्य साध्वीजी प्रवर्तिनी श्री सुन्दरश्रीजी महाराज, जो मारवाड़, गोड़वाड, मेवाड़ एवं

सिरोही आदि क्षेत्रों में विचरती थी, उन्होंने इस तीर्थ की भयंकर दुर्दशा के दर्शन सपने में किये, यद्यपि उस समय वे इस तीर्थ से सर्वथा अनजान थी, अपरिचित थी। सपनों में तीर्थ की जीर्ण-शीर्ण अवस्था को देखकर उन्हें भयंकर वेदना हुई। उन्हें नाकोड़ाजी तीर्थ की कोई जानकारी नहीं थी, फिर भी उन्होंने दृढ़ निश्चय किया वे इस तीर्थ पर किसी भी प्रकार से पहुंचेगी और इसका पूर्ण शक्ति के साथ पुनरोद्धार करायेगी। अतः उन्होंने अपने गुरूदेव से आदेश एवं आशीर्वाद लेकर इस अनजान तीर्थ की तरफ प्रयाण किया। अनेक कष्टों को सहन करते हुए वे आज से लगभग 100 एक सौ वर्ष पूर्व संवत 1960 में यहां पहुंची। यहां पर तीर्थ की भयंकर दुर्दशा को अपनी सगी आंखों से देखकर उनका हृदय दु:ख से द्रवित हो गया। आंखों से आसूं की धाराएं बहने लगी। गम्भीर चिन्तन के बाद तत्काल पूज्य साध्वीश्रीजी ने दृढ़ संकल्प किया कि किसी भी कीमत पर वे इस तीर्थ का पुनरोद्धार करवायेंगी, चाहे उसमें उन्हें अपने प्राणों का बलिदान भी क्यों न करना पड़े। बालोतरा, बाड़मेर, जसोल, पचपदरा, सिवाना आदि नजदीक के नगरों के श्रेष्ठीवर्यों से सम्पर्क कर वे तीर्थोद्धार के विकट कार्य में तन-मन से जुट गई और रात-दिन एक कर दिया।

वर्तमान में हम नाकोड़ाजी तीर्थ का जो रूप और सौन्दर्य देख रहे हैं, और जहां दर्शन-वंदन एवं पूजा आदि अनुष्ठानों के लिये भक्तों का तांता सा लगा रहता है, उसका श्रेय पूज्य साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी महाराज को ही है, जिन्होंने ऊपर वर्णित मुजब लगभग 100 वर्ष पूर्व इस तीर्थ के पुनरोद्धार के कार्य को शुरू किया था। इस प्रकार पुनरोद्धार के 100 वर्ष की सम्पन्नता के उपलक्ष्य में तीर्थ के ट्रस्ट मण्डल ने शताब्दी वर्ष की उज्जमणी का आयोजन किया। नाकोड़ाजी तीर्थ भक्ति-आस्था एवं धर्ममय वातावरण का वर्तमान में पूज्य साध्वीजी की कृपा से देश का प्रमुख केन्द्र बन गया है। अब उसमें धार्मिक शिक्षण सेवा, शिक्षा, चिकित्सा, वैयावच्छ, जीव-दया एवं साधर्मिक भक्ति के अनेक आयामों को जोड़ने के संकल्प को श्री संघ सभा ने भी स्वीकृति प्रदान करके इस तीर्थ को जैन संस्कृति का प्रमुख केन्द्र बनाने के लिये ट्रस्ट मण्डल के प्रयासों को प्रोत्साहित कर एक आदर्श प्रस्तुत किया है जिसे यथा-समय क्रियान्वित करने का प्रयास किया जायेगा।

इस शताब्दी वर्ष में श्रीमान् भूरचंदजी जैन-वरिष्ठ पत्रकार, बाड़मेर ने पूज्य साध्वी सुन्दरश्रीजी महाराज के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए उनकी जीवन कथा प्रकाशित करने का प्रकल्प हाथ में लिया, जो अत्यन्त प्रशंसनीय है। उनका यह प्रयास नाकोड़ा तीर्थ एवं साध्वीजी महाराज के प्रति उनकी श्रद्धा एवं भक्ति का पूर्ण परिचायक हैं एवं शताब्दी वर्ष में पूज्य साध्वी श्रीजी को श्रद्धांजलि अर्पण करने का एक उत्कृष्ट कोटि का अनुमोदनीय प्रयास है-जो स्तुत्य है।

चम्पालाल पारख

अध्यक्ष

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट मण्डल

मेवानगर (बाड़मेर) राज.।

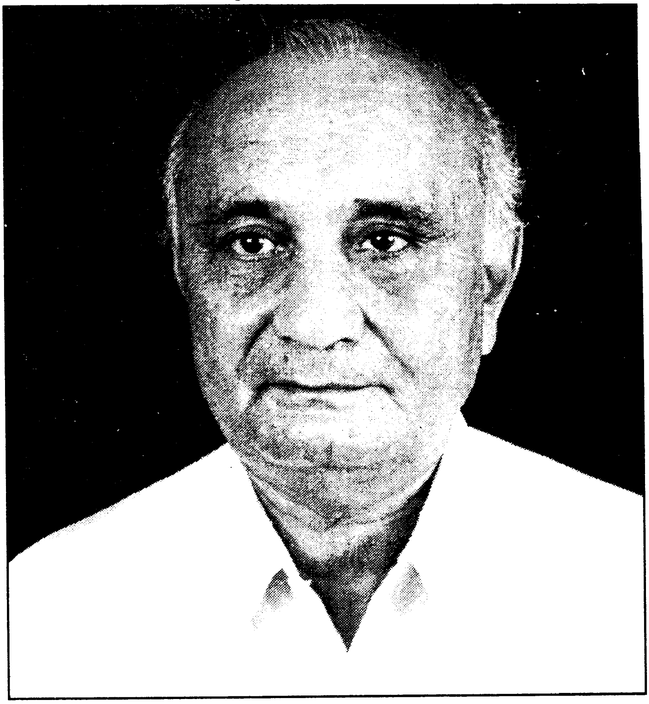

लेखकीय

भारत विख्यात श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ अपने जीर्णोद्धार का शताब्दी वर्ष मना रहा है। यह अपने आप में एक गौरवशाली इतिहास की स्मृति है। जब तपागच्छीय जैन साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को नाकोड़ा अधिष्टायक श्री भैरवदेवजी ने स्वप्न में नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा करने और इसके उद्धार का संकेत दिया तब प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी कई प्रकार की कठिनाईयों को पार करती हुई नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा पर पधारी।

नाकोड़ा तीर्थ की जीर्ण-शीर्ण स्थिति देखकर अत्यधिक व्याकुल हो उठी और इसके पुनरोद्धार की प्रतिज्ञा करते हुए, तीर्थ के जीर्णोद्धार का कार्य विभिन्न विकट परिस्थितियों में आरम्भ किया। जैन संघों, जैन परिवारों, भाग्यशाली जैन लोगों से धन आदि एकत्रित कर इस तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाया। जीर्णोद्धार के बाद इस तीर्थ की प्रतिष्ठा पन्यास श्री हिम्मत विजयजी (आचार्य श्रीमद् विजय हिमाचल सूरीश्वरजी) द्वारा सम्पन्न करवाई। तीर्थ का नाम उजागर होने लगा। तीर्थ पर अधिक श्रद्धालू भक्त आये उसके लिये मेले के आयोजन में सहयोग किया। तीर्थ जन-जन का प्रिय बन गया।

नाकोड़ा अधिष्टायक श्री भैरवदेव की प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी पर कृपा रही है। आपका आशीर्वाद मिलने पर तीर्थ दिनों दिन आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता हुआ प्रगति के पथ पर आगे बढ रहा है।

नाकोड़ा अपने जीर्णोद्धार का शताब्दी वर्ष मना रहा है। इस अवसर पर मूल तीर्थो उद्धारिका प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को इस अवसर पर स्मरण करना पहला कर्तव्य बन जाता है। इससे प्रेरित होकर मैंने नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दरजी के जीवन से आम नागरिक परिचित हो इस भावना से इनका सविस्तार जीवन परिचय इस पुस्तक में प्रकाशित करने का प्रयास किया है। इस महत्वपूर्ण प्रकाशन में श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट मंडल, मेवानगर के अध्यक्ष श्री चम्पालाल पारख ने 'नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी' पुस्तक प्रकाशन में जो रूचि एवं सहयोग दिया यह नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार शताब्दी वर्ष की सबसे बड़ी उपलब्धि रहेगी और प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पुस्तक को तथ्यों के आधार पर तैयार करने का भरसक प्रयास रहा है। फिर भी कुछ न कुछ अवश्य शेष रहा ही होगा जिसकी आपसे जानकारी मिलने के बाद उसे भविष्य के अन्य प्रकाशन में उसे प्रकाशित करने का प्रयास किया जावेगा, ऐसी मेरी भावना है। पुस्तक प्रकाशन में सहयोग देने वालों के प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

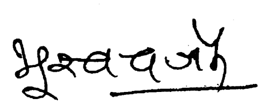

- **भूरचन्द जैन**
पत्रकार
बाड़मेर (राज.)

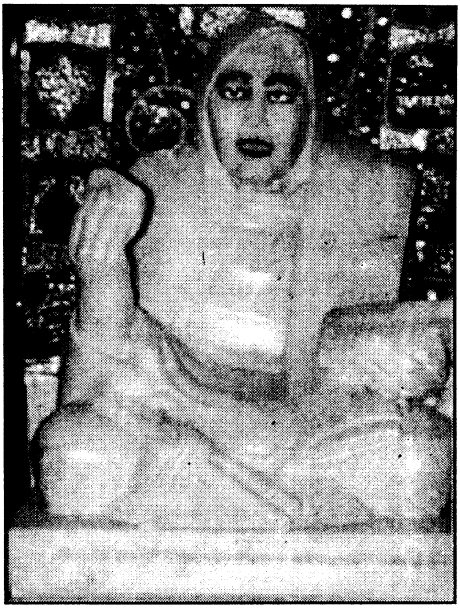

नाकोड़ा तीर्थोद्वारिका प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी

जैन धर्मावलम्बियों का नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर वर्तमान में पश्चिमी राजस्थान के सीमावर्ती थार रेगिस्तानी बाड़मेर जिले के बालोतरा उपखण्ड के बालोतरा नगर से 10 किलोमीटर दूर पहाड़ियों की गोद में प्रकृति के नयनाभिराम दृश्यों के बीच आया हुआ है। जिसका अपना प्राचीन गौरवशाली इतिहास रहा है। इस जैन धार्मिक स्थल ने कई ऐतिहासिक घटनाचक्रों के उतार-चढाव देखने के बाद भी यह अपना आध्यात्मिक महत्व लिये आज भी जन-जन की धार्मिक आस्था एवं विश्वास का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। प्राचीन इतिहास की गहराईयों में यदि गोते खाये तो इस स्थल का तीसरी शताब्दी से परिचय मिलता है। कई घटनाओं के घटित होने के साथ-साथ यह धार्मिक स्थल भी प्रभावित रहा। दसवीं शताब्दी में यह स्थल विशाल जैन बस्ती रही और उसके पश्चात् 17 वीं शताब्दी तक यहां शासकीय उथल-पुथल का प्रभाव इस धार्मिक स्थल पर पड़ा। लेकिन इन शताब्दियों के दौरान तीर्थ पर अनेक धार्मिक स्थलों के निर्माण की कहानी श्रद्धालू भक्तों की आस्था की

कहानी यहां के 10 वीं शताब्दी से लेकर 15 वीं शताब्दी के शिलालेख बता रहे है। इन शिलालेखों में नाकोड़ा तीर्थ स्थल पर मंदिरों का निर्माण, जीर्णोद्धार के साथ कई प्रकार के स्थलों के निर्माण का परिचय करवा रहे हैं।

भारत की धार्मिक एवं आध्यात्मिक कड़ी में नाकोड़ा का अपना एक विशिष्ठ स्थान रहा है। रियासती शासनकाल में भी राजपूताना के मारवाड़ राज्य के मालानी का यह धार्मिक स्थल स्थानीय शासकों के उतार-चढाव, ऐतिहासिक घटनाचक्रों से प्रभावित रहा। सतरहवीं शताब्दी में महेवा के शासक परिवार द्वारा जैन धर्मावलम्बियों के प्रति सद् व्यवहार के अभाव में यहां निवास करने वाले जैन धर्मावलम्बी इस स्थल को छोड़कर अन्यत्र चले गये। जिसके कारण वीरमपुर नाकोड़ा-मेवानगर उजड़ गया जो सदियों तक आबाद नहीं हो पाया। जैन धर्मावलम्बियों के इस क्षेत्र को छोड़कर जाने के पश्चात् प्राचीन जैन तीर्थ नाकोड़ा की बड़ी दुर्दशा हुई। इसकी सार सम्भाल करने के अभाव में यह स्थल जीर्णशीर्ण होने लगा।

वीरमपुर नाकोड़ा-मेवानगर-महेवा के रहने वाले जैन धर्मावलम्बियों के अन्यत्र चले जाने के बाद इस पवित्र जैन धार्मिक तीर्थस्थल की तीन शताब्दियों तक किसी ने भी सुध-बुध नहीं ली। लेकिन यहां के चमत्कारिक अधिष्टायक श्री भैरवदेव ने जैन धर्म के तपागच्छ के रेवताचल चित्तौड़ तीर्थोद्धारक परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजयनिति सूरीश्वरजी के पट्टधर सकलागम रहस्यवेदी परम पूज्य आचार्य श्री विजय हर्ष सूरीश्वरजी, गच्छाधिपति परमपूज्य आचार्य श्री विजय महेन्द्रसूरीश्वरजी, सिद्धाचल शणगार-तीर्थोद्धारक आचार्य श्री विजय मंगलप्रभ सूरीश्वरजी की आज्ञावर्तिनी-पूज्यपाद गुरूणीजी शणगारश्रीजी उनकी सुशिष्या नाकोड़ा तीर्थोद्धारक प्रवर्तिनी श्री सुन्दर श्रीजी को स्वप्न में नाकोड़ा तीर्थ दर्शन करने के साथ-साथ इसके उद्धार का संकेत दिया। यह घटना वि.सं. 1960 की थी। तब से प्रवर्तिनी श्री सुन्दर श्रीजी ने इस तीर्थ की कई बार यात्रा कर इस तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाया। जिनकी बदोलत आज श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ दिनों दिन प्रगति के पथ पर बढता हुआ जैन धर्मावलम्बियों का ही नहीं धार्मिक आस्था एवं विश्वास रखने वाले जन-जन का श्रद्धा का केन्द्र बिन्दु बना हुआ हैं। भारत के ख्याति प्राप्त विभिन्न धर्मों के धार्मिक स्थलों में और विशेषकर जैन धर्म के धार्मिक तीर्थ स्थलों की प्रथम पंक्ति में गिनने वाले जैन तीर्थ स्थलों की श्रेणी में इस धार्मिक स्थल की गिनती होने लगी है।

धार्मिक आस्था एवं श्रद्धा के इस भव्य जैन तीर्थ नाकोड़ा का तीर्थोद्धार परम पूज्य जैन साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने करवाकर जैन संस्कृति को जीवित रखने में अमूल्य योगदान दिया। जिसे इतिहास कभी भूल नहीं सकता और जैन समाज तो इनका सदैव ऋणी रहेगा। भारतीय आध्यात्मिक क्षेत्र की ऐसी महान् विभूति का जन्म भी राजपूताना में रियासती शासन व्यवस्था के समय मारवाड़ क्षेत्र के गोड़वाड़ के उस समय के व्यापारिक केन्द्र सेवाड़ी में हुआ। सेवाड़ी वर्तमान में राजस्थान के पाली जिले के बाली क्षेत्र में गोड़वाड़ की जैन पंचतीर्थ रणकपुर, नाडोल, नारलाई, वरकाना, घाणेराव मूंछाला महावीर के समीप एवं मेवाड़ के प्रदेश द्वार के रूप में पहचान बनाये हुए है।

सेवाड़ी वर्त्तमान में राजस्थान प्रदेश के पाली जिले के आजवला (अरावली) पर्वतमाला की तलहटी में बरसाती शैलबाला मीठड़ी नदी के किनारे पर प्राकृतिक सौन्दर्य लिये बसा हुआ गांव है। जो ग्राम पंचायत सेवाड़ी के नाम से अपनी लोकतंत्रीय पहचान बनाये हुए है। राजस्थान-राजपूताने के इतिहास में सेवाड़ी का अपना ऐतिहासिक महत्व भी रहा है। सदियों पूर्व समीपाटी, शत वाटीका, शत वापिका, सिव्वड़ी के नाम से सिवाड़ी अपना परिचय देता आ रहा है। इन नामों का उल्लेख कई प्राचीन शिलालेखों एवं इतिहास के पन्नों पर मिलता है। सेवाड़ी के जैन धर्मावलम्बियों के प्राचीन श्री शांतिनाथजी के मंदिर के वि.सं. 1167, 1172 एवं अन्य पांच शिलालेखों में सेवाड़ी के अलग-अलग नामों का उल्लेख विद्यमान है। इससे जाहिर है कि यह क्षेत्र प्राचीन रहा है और इसका इस क्षेत्र में घटित होने वाली प्राचीन ऐतिहासिक घटनाचक्रों से सम्बन्ध रहा है। इतिहास के संदर्भ से ऐसा लगता है कि इस क्षेत्र पर गुजरात के कुमारपाल सोलंकी, नाडोल के चौहान, मेवाड़ के राणा, जोधपुर के राठौड़ों का अधिपत्य रहा है। इन शासकों के काल में होने वाले युद्धों आदि से यह क्षेत्र-सेवाड़ी भी कुछ न कुछ स्वरूप में प्रभावित रहते हुए भी यहां के श्रद्धालू लोगों में धार्मिक वृत्ति बनी रही। जिसके कारण यहां कई धार्मिक स्थलों का समय-समय पर निर्माण एवं जीर्णोद्धार होता रहा है।

सेवाड़ी जैन धर्मावलम्बियों की पावन एवं पूजनीय धरा रही है। वहां अन्य धर्मावलम्बियों ने इस भौम में अपनी धार्मिक आस्था के लिये कुछ धार्मिक स्थलों का निर्माण करवा रखा है और आज भी पूर्ण आस्था, विश्वास एवं श्रद्धा के साथ पूजते

रहते है। यह सब सेवाड़ी के धर्मप्रेमियों का आपसी धार्मिक समन्वय ही है। जिसके कारण सेवाड़ी का धार्मिक महत्व एवं आपसी बन्धुत्व की भावना जगजाहिर है।

जैन धर्मावलम्बियों के यहां कई धार्मिक स्थल बने हुए हैं। जिसमें सबसे प्राचीन श्री शांतिनाथजी का मंदिर है। जिसमें वि.सं. 1167, 1172 के प्राचीन शिलालेखों के साथ अन्य शिलालेखों में इस मंदिर के निर्माण आदि कार्यों का उल्लेख मिलता है। इस मंदिर के मूलनायक श्री महावीर स्वामी रहे है। वि.सं. 2014 में पुनः इस मंदिर की प्रतिष्ठा होने के बाद मूलनायक श्री शान्तिनाथ भगवान है। यह मंदिर विशाल स्वरूप लिये बावन जिनालय के रूप में अपनी अद्वितीय पहचान बनाये हुए है। मंदिर के मूलनायक श्री महावीर स्वामीजी एवं श्री शांतिनाथ भगवान की प्राचीन भव्य सुन्दर एवं कलात्मक, चित्तआकर्षक, मनभावनी प्रतिमाओं के पीछे श्वेत पाषाणों का परिकर बना हुआ है। जिस पर सुन्दर एवं कलात्मक प्रतिमाएं उत्कीर्ण की हुई है। इस मंदिर में सोलह विद्या देवियों, यक्ष कुबेर, गजलक्ष्मी सहित कई प्रतिमाएं अपनी प्राचीनता के साथ दर्शनीय एवं पूजनीय बनी हुई है। मंदिर के बावन जिनालयों में प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाऐं भी प्राचीन है। मंदिर के विशेष देहरियों में आमने-सामने स्थापित श्री सरस्वती की प्रतिमाऐं शिल्पकला एवं प्राचीनता की पहचान करवाती है। इसके शिल्प सौन्दर्य एवं मूर्तिकला को देखते हुए लगता है कि सम्भवतः ये प्रतिमाऐं 11 वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

सेवाड़ी में जैन धर्मावलम्बियों के श्री महावीर स्वामी- श्री शांतिनाथजी भगवान के बावन जिनालय के अतिरिक्त श्री वासुपूज्य भगवान का एक अन्य मंदिर भी बना हुआ है। जो श्री वासुपूज्य वाटिका के नाम से परिचायक है। जिसमें मूलनायक श्री वासुपूज्य स्वामी के आजुबाजु तीर्थंकर प्रतिमाऐं प्रतिष्ठित की हुई है। इस मंदिर की प्रतिष्ठा वि.सं. 1982 में हुई। यह मंदिर सेवाड़ी गांव के जैतल बाव के समीप बना हुआ है। यहां पर जैन दादावाड़ी धार्मिक स्थल भी है। जैन मंदिरों एवं दादावाड़ी के अतिरिक्त जैन समाज की तरफ से सेवाड़ी में श्री जैन देवस्थान पेढी, श्री वीर समाज जैन पुस्तकालय, श्री जैन श्वेताम्बर उपाश्रय, भोजनशाला, आयंबिलशाला, ओसवाल समाज बगेची, श्री जैन श्वेताम्बर श्राविका उपाश्रय, न्याति नोहरा आदि के भवन बने हुए है जिसमें जैन धर्म, समाज आदि से सम्बंधित संस्थाऐं कार्यरत है।

वर्त्तमान में सेवाड़ी के जैन धर्मावलम्बी करीबन 600 से अधिक परिवार

देश के विभिन्न भागों में व्यवसाय आदि में कार्यरत रहते हुए अपने परिश्रम, बुद्धि कार्यकुशलता से खूब धनोपार्जन करते हुए समृद्धशाली बने हुए है। साधन सम्पन्न सेवाड़ी गांव के जैन धर्मावलम्बी परिवारों ने अपनी जन्मभूमि सेवाड़ी के लिये धन खर्च कर कई सार्वजनिक स्थलों का निर्माण करवाया है और यह क्रम जारी है। सेवाड़ी में श्री राजकीय महावीर जैन जनरल हॉस्पीटल, राजकीय वसनोबाई भबुतमलजी सुराणा पशु चिकित्सालय, जे.एस. कोठारी टावर, राजकीय कोठारी उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्री दिलखुश रूपचन्द दोशी विज्ञान भवन, श्री उम्मेद कोठारी पोस्ट ऑफिस भवन आदि कई सार्वजनिक भवनों आदि का निर्माण करवाने में आर्थिक सहयोग जैन बन्धुओं ने दिया है।

जैन धार्मिक स्थलों के अतिरिक्त सेवाड़ी धर्मभूमि-भौम में अन्य कई धार्मिक स्थल विद्यमान हैं। जिसमें श्री हनुमानजी का मंदिर, श्री महाकाली का मंदिर, श्री मुंजाजी वीर की छत्री, श्री खेतलाजी का मंदिर, श्री भैरवनाथजी का मंदिर, श्री महालक्ष्मीजी का मंदिर, श्री हिंगलाज माताजी का थान, श्री वीर बावसी का स्थल, राणा सु स्वामी माताजी का स्थान आदि विद्यमान है। जिसे धर्मप्रेमी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ पूजते है।

धर्मप्रेमियों की ऐतिहासिक भूमि, प्राचीनता की खान, धर्मस्थलों की भौम, भामाशाहों की जन्म स्थली, सेवाड़ी का आज भी अपनी प्राचीन धार्मिक परम्पराओं को अपनी कोख में लिये जन-जन की आस्था का केन्द्र स्थल बनी हुई है। सेवाड़ी फालना रेलवे स्टेशन से पक्के सड़क मार्ग से 20 किलोमीटर दूर बाली से जवाई बांध-सिरोही सड़क मार्ग पर स्थित है। नाणा जैन तीर्थ से 17 किलोमीटर एवं हथुण्डी-राता महावीर जैन तीर्थ स्थल से 9 किलोमीटर दूर सेवाड़ी है। सेवाड़ी गांव ग्राम पंचायत मुख्यावास होने के नाते विकास की दौड़ में भी निरन्तर दौड़ता रहता है। यहां आधुनिक साधन सुविधाओं में बिजली, पानी, चिकित्सा, टेलीफोन, सड़क, शिक्षा, डाकघर, बैंक, पुलिस चौकी, यातायात बस सुविधा आदि उपलब्ध है। सेवाड़ी उन्नत कृषि के लिये भी सर्व विख्यात है। यहां करीबन 125 से अधिक कुओं पर अरहट से खेती के लिये सिंचाई होती है। जिसके कारण यहां फसले अच्छी होने से किसान भी आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता की ओर बढ़ते है। सभी लोगों में धार्मिक विचार होने से यहां का धार्मिक समन्वय अद्वितीय है। गोड़वाड़ श्री जैन पंचतीर्थी के दर्शन करने

आने वाले सेवाड़ी की धर्म भौम पर स्थित जैन मंदिरों के अवश्य दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त करते है।

सेवाड़ी के धार्मिक प्रवृतियों में विशेष रूचि लेने वाले सभ्रान्त जैन परिवार से समाज में अपनी सादगी एवं शिष्टाचार से अपनी पहचान बनाये सेठ वीसा श्रीमाली गदैया गौत्र के श्री देवीचंद जैन के यहां सुसंस्कारवान धर्मनिष्ठ श्रीमती भूरीबाई की कोख से जैन धर्मावलम्बियों के सर्वश्रेष्ठ पयुर्षण पर्व के दौरान वि.सं. 1916 भादवा सुदि 2 को प्रात: चार बजे मांगलिक वेला में एक बालिका का जन्म हुआ। घर में बालिका का जन्म होते ही प्राकृतिक रूप से घर में विशेष प्रकाश फैलता नजर आया और सभी के चेहरों पर अत्यन्त ही आनन्द एवं उल्लास अपने आप झलकने लगा। आस-पड़ोस में भी स्वत: ही उल्लास एवं उमंग का वातावरण फैल गया। सभी इस अनहोने प्राकृतिक वातावरण को देखकर महसुस कर आनन्दित हो रहे थे और एक-दूसरे को कौतुहलवश पूछने के साथ बधाई दे रहे थे। श्री देवीचंद के घर में पुत्री जन्म पर अपार हर्षित हो रहे थे। यह सब स्वभाविक रूप से हो रहा था जबकि बच्ची (लड़की) के जन्म पर अक्सर ऐसा होता नहीं है।

धर्मनिष्ठ, सादगी के धनी, सदाचारी, दयालू, समाजसेवी श्री देवीचंद वीसा श्रीमाली गदैया के यहां अच्छे संस्कार वाली, धार्मिक प्रवृति वाली, स्नेह एवं सादगी की दयावान श्रीमती भूरी बाई की कोख से जन्म लेने वाली बालिका का नाम समणीबेन रखा। गोदी का बालपन व्यतीत होने के बाद जैसे ही बालिका अपने नन्हें पांवों पर लड़खड़ा कर चलने लगी कि सभी के स्नेह प्यार की पात्र बन गई। सभी बालिका समणी को अपार स्नेह, लाड-प्यार, दुलार देने को आतुर होने लगे। परिवार, कुटुम्बजन, परिजनों के अतिरिक्त जो कोई भी समणी को देखता तो उनके दिल में दो क्षण इन्हें स्नेह, प्यार, दुलार देने के भाव स्वत: ही उमड़ पड़ते। इधर समणी बेन भी अपने पर स्नेह, प्यार, मोहब्बत देने वालों के प्रति अपनी बाल हंसी से मुस्कराकर अभिवादन करने से कतई पीछे नहीं रहती। चारों ओर बालिका समणी के प्रति प्यार, दुलार की बौछारे होने लगी।

लड़खड़ाते कदमों की पगडंडी पारकर समणी बचपन की अठखेलियों में अपने अड़ोस-पड़ोस के हम उम्र के बालक-बालिकाओं के साथ जीवन व्यतीत करने लगी। अक्सर बालिका अपने परिवार के पुरूष वर्ग विशेषकर अपने पिता को

रोजमर्रा के बही खातों में लिखते देखा तो इसका मन भी पढने की ओर उतावला होने लगा। लेकिन उस समय शिक्षा का उचित बन्दोबस्त के साथ बालिकाओं के प्रति परिवारजनों की रूचि नहीं होने के कारण समणी बेन शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा होते हुए भी शिक्षा को ग्रहण नहीं कर पाई। लेकिन इसके व्यवहारिक ज्ञान गरिमा को देखकर सभी इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा किये बिना नहीं रहते।

समणी बचपन से ही अपने माता-पिता एवं परिजनों की धार्मिक वृति के प्रति विशेष आकर्षित रही। अक्सर वह अपनी माता के साथ मंदिरों में देवदर्शन करने, पूजा करने में रूचि लेने, प्रतिक्रमण में माता के साथ एकाग्रचित होकर बैठकर देखने, साधु सन्तों, सती साध्वियों के प्रवचन सुनने आदि के लिये सदैव तैयार और तत्पर्य रहती। बचपन के दिन व्यतीत होते-होते बालिका जवानी की पगदंडी पर चढने लगी। माता-पिता एवं परिजनों का समणी के अधिक धार्मिक बनना जरा भाने नहीं लगा और सभी इसे गृहस्थ जीवन जीने के कामकाज के लिये प्रेरित एवं बाध्य करते। समणी घर गृहस्थी के कामकाज अपने माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं हो अवश्य करती लेकिन इसमें इसका मन नहीं लगता। जब किसी धार्मिक कामकाज करने का इन्हें परिवार की ओर से संकेत मिलता तो यह इन्हे उत्साह एवं उमंग के साथ करने की सदैव तैयार रहती।

सेवाड़ी का सेठ वीसा श्रीमाली गदैया गोत्र के श्री देवीचंद जैन अपनी लाडली बेटी समणी के जवान होने पर इनके हाथ पीले करवाने की फिराक में अपनी बेटी के लिये सुन्दर, सुशील एवं सुयोग्य वर की खोज करने लगे। कई जगह पूछताछ की गई। अपने सगे सम्बन्धियों को समणी के लिये अच्छा वर ढूंढने में सहयोग करने की बात की। आखिर वि.सं. 1929 को शिवगंज निवासी वीसा श्रीमाली सेठ फुलपगर राठौड़ गोत्र के युवक के साथ आपकी शुभ मुहुर्त में बिना दिखावे आदि के साथ सादगीपूर्ण शादी कर दी। समणी बेन अब श्रीमती समणी बेन बनकर ससुराल गई। ससुराल में धार्मिक वातावरण एवं अच्छे संस्कारों को पाकर वह बड़ी खुश रहने लगी। अपने पीहर की भांति ससुराल में भी इसे वही मान सम्मान मिलने लगा और धार्मिक क्रिया कलाप करने में इसको प्रोत्साहन मिलने लगा। बस इस कारण से श्रीमती समणी बेन अपने ससुराल वालों की सेवा करने के साथ-साथ धार्मिक क्रियाकलापों में व्यस्त रहने लगी। पारिवारिक सुखी जीवन और धार्मिक गतिविधियों

में मिलने वाले प्रोत्साहन से श्रीमती समणी बेहद खुश होकर जीवन यापन करने लगी।

सुखी पारिवारिक जीवन के चार वर्ष भी श्रीमती समणी बेन नहीं गुजार पाई कि इनके पति का अचानक स्वर्गवास हो गया। श्रीमती समणी बेन विधवा हो गई। विधवा का सामाजिक जीवन इनके लिये धर्म आराधना में कांफी हद तक बाधक बना लेकिन इस विकट परिस्थिति में रहते हुए भी श्रीमती समणी ने अपनी धर्म आराधना, उपासना, ईश्वर भक्ति को नहीं छोड़ा। लेकिन बाल विधवा होने के ससुराल में उसे धार्मिक जीवन व्यतीत होने में घुटन होने लगी। यद्यपि ससुराल वाले भी विधवा की मर्यादा में रहकर इन्हें धर्म आराधना उपासना करने में कदापि बाधक नहीं बने। फिर भी अपनी धर्म आराधना के लिये श्रीमती समणी अपने पीहर सेवाड़ी आई और यहां इसने अपने माता-पिता की छत्र छाया में धार्मिक क्रियाकलापों को तीव्रगति के साथ करना शुरू कर दिया। माता-पिता ने इसे धर्म शिक्षा देने के लिये पूरा अवसर दिया।

जवानी में समणी बेन का विधवा होना और फिर लम्बी जिन्दगी जीने की सभी परिजनों को चिन्ता सताये रहती थी। परन्तु समणी बेन अपने जीवन के प्रति इसलिये अधिक चिन्तित नहीं थी कि इसने अपना अधिक समय धर्मक्रियाओं में व्यतीत करना शुरू कर दिया और इससे इन्हें जो आध्यात्मिक शक्ति के साथ जो मानसिक शांति मिलती उससे अधिक खुश थी और अपने पूर्वभव की पुण्याई मानने लगी। श्रीमती समणी बेन के धार्मिक आचरण, धर्म के प्रति बढते रूझान को देखकर इनकी खिमेल वाली मौसी श्रीमती नगी बाई इसे कुछ समय के लिये खिमेल ले आई। अपने परिवार द्वारा यहां बनाये 52 जिनालय के दर्शन करवाती और पंच प्रतिक्रमण सीखाने के साथ-साथ अन्य धार्मिक ज्ञान के गुण समझाती। समणी अपनी मौसी श्रीमती नगी बाई के धार्मिक आचार, विचार से प्रभावित होकर यहां इसने उपवास करने के साथ-साथ श्री सिद्धाचल की ओली तपस्या भी की।

खिमेल में मैसी के साथ कुछ समय व्यतीत कर श्रीमती समणी बेन अपने ननिहाल बाली चली गई। जहां अपनी नानी श्रीमती जेती बाई ने इसके धार्मिक जीवन में ओर अधिक वृद्धि कर दी। नानी सदैव उसे अपने साथ मंदिर जिन दर्शन एवं जिन पूजा करवाने ले जाती और जैन उपाश्रयों में साधु सन्तों, साध्वियों आदि की

भक्ति करने का अवसर देती। समणी इसे पाकर अत्यधिक आनन्द की अनुभूति करती। इनके मामा भी कट्टर धार्मिक आचार-विचार वाले व्यक्ति होने के कारण इसने अपने मामा से धार्मिक ज्ञान भी प्राप्त किया। लेकिन मामा इसे अकेले में उपाश्रय आदि जाने में अवश्य रोकते।

बाली में नानी श्रीमती जेती बाई ने समणी बेन के लिये पूजा के वस्त्रों की व्यवस्था की। इसके बाद तो श्रीमती समणी बेन प्रतिदिन अनुकूलता के साथ जिन भक्ति, पूजा, उपासना, आराधना दूने उत्साह के साथ करने लगी। मामा-मामी, नानी इसकी धार्मिक प्रवृतियों को देखकर संतोष की सांस लेते। श्री जिनेश्वर प्रभु की पूजा-भक्ति का क्रम प्रतिदिन चलता रहा। पूजा के वस्त्रों में श्री जिनेश्वर प्रभु की पूजा करते हुए समणी के दिल में अचानक वैराग्य की भावना जाग उठी और अपनी इस भावना को अपनी नानी श्रीमती जेती बाई के सामने नि:संकोच होकर प्रकट किया और कहा नानी मुझे दीक्षा के वस्त्र ला दो। मैं एक क्षण भी इस संसार के मोहमाया ममता में नहीं रहना चाहती। नानी ने इसकी बात को समझते हुए कहा कि तुम जिनेश्वर भक्ति करती रहो इसी में तुम्हारा कल्याण है।

समणी अपनी नानी को अपनी जिनेश्वर भक्ति में आनन्दित होते देखकर समणी बेन ने नानी से जैन साध्वी दीक्षा वस्त्रों के प्रति अपनी जिज्ञासा प्रकट की और ऐसे वस्त्र लाने का आग्रह भी किया। नानी इस बात को जानबूझकर टालती रही। नानी का दीक्षा के वस्त्र लाने के लिये ज्यों-ज्यों टालना होता था त्यों-त्यों समणी बेन को दीक्षा वस्त्र शीघ्र प्राप्त करने की लालचा जगने लगी। अखिल समणी के अति आग्रह करने पर नानी ने इसे दीक्षा के वस्त्र लाकर दे दिये। जैन साध्वी के पहनने वाले वस्त्र प्राप्त कर समणी बेन की खुशी का कोई पार नहीं रहा। वह इसे देखरेख कर अत्यधिक प्रफुल्लित होती, आनन्द के साथ नाचने लगती। इसके चेहरे पर विशेष खुशी झलकने लगी। इसके मन में शीघ्र दीक्षा के वस्त्र पहनकर जैन भगवती दीक्षा लेने की भावना जाग उठी। वस्त्र कब पहने जाय बस इस विचार में ध्यान मग्न होकर आध्यात्मिक-सोच के गहरे सागर में गोते खाकर चिन्तन करने लगी।

समणी बाई को साध्वी वेष देने के बाद इसकी नानी श्रीमती जेती बाई इसकी खिमेल वाली मौसी श्रीमती नगी बाई को तत्काल बाली बुलाया और कहा कि समणी बाई ने जैन दीक्षा लेने का मानस बना लिया है। मैंने इसे दीक्षा नहीं लेने के

लिये कई बार समझाया लेकिन वह मेरी बात मान नहीं रही है। इसे समझाने के लिये तुम शीघ्र बाली आजावों। श्रीमती समणी बाई के दीक्षा लेने की जानकारी प्राप्त करते ही इसकी खिमेल वाली मौसी श्रीमती नगीबाई तत्काल बाली आई। जब यह बाली आई तब समणी बाई ने उपवास पर रखा था। दूसरे दिन जब पारणा करने का आग्रह किया गया तो इसने कहा जब तक मैं दीक्षा ग्रहण नहीं करूंगी तब तक पारणा नहीं करूंगी। इस पर इनकी मौसी ने समझाबुझाकर पारणा तो करवा दिया लेकिन इसके दीक्षा विचार को बदल नहीं सकी।

सांयकालीन प्रतिक्रमण करने के बाद समणी बाई ने अपनी नानी एवं मौसी को अपने दिल की बात बताते हुए कहा कि मैं दीक्षा लूंगी। इसे कोई रोक नहीं सकता। नानी मौसी ने इसके दृढ़ निश्चय को देखकर इसकी दीक्षा की बात गोपनीय रखी और इसे दीक्षा लेने की अर्न्तमन से हां भर दी। इसके बाद इसकी मौसी श्रीमती नगी बाई खिमेल चली गई।

प्रातः होते ही समणी बाई अपनी नानी के साथ प्रतिदिन की धार्मिक क्रियाकलाप करने की राह पर चल दी। वह सीधी अपनी नानी के साथ बाली में विराजमान यति के उपाश्रय में पहुंची और अपने मन की बात यतिजी को बताते हुए दीक्षा का शुभ मुर्हूत बताने का आग्रह किया। यति समणी के मुख से दीक्षा लेने की बात सुनकर एक बार तो आश्चर्यचकित हो गये और उसे दीक्षा लेने पर आने वाली कठिनाईयों, परेशानियों, बाधाएं आदि बताते हुए दीक्षा नहीं लेने के लिये समझाने का प्रयास किया। परन्तु समणी और इसकी नानी ने दीक्षा लेने के दृढ़ मानस को बताते हुए दीक्षा का शुभ मुहुर्त देने का विनती भरा आग्रह किया। यति ने शुभ मुहुर्त निकालकर दिया। इस पर दोनों ने यतिजी से पुनः आग्रह किया कि दीक्षा वाली बात आप किसी को नहीं बतावे, ऐसी हम पर कृपा करें।

दीक्षा के शुभ दिन एवं शुभ मुर्हूत के दिन समणी प्रतिदिन की भांति श्री जिनेश्वर प्रभु की पूजा करने के लिये जिन मंदिर में पहुंची। आनन्द विभोर होकर जिनेश्वर प्रभु की पूजा की और अपने साथ लाये दीक्षा के वस्त्र उत्साह के साथ पहनकर श्री जिनेश्वर प्रभु के सामने भावपूर्वक दीक्षा अंगीकार कर, मंदिर के एक कोने में जैन साध्वी वेष धारण किये समणी प्रभु आराधना-उपासना करने के लिये माला जपते हुए शान्तचित्त भाव से बैठ गई।

श्री जिनेश्वर प्रभु के मंदिर में आने वाले दर्शनार्थियों ने जब समणी बाई को साध्वी वस्त्र वेष में देखा तो इसका कारण इससे पूछना चाहा लेकिन प्रभु ध्यान में मग्न समणी ने किसी को जवाब तक नहीं दिया। समणी ने साध्वी वेष धारण कर लिया है यह बात चारों तरफ आग की भांति फैल गई। जिन मंदिर में समणी को देखने की भीड़ जमा होने लगी और लोग तरह-तरह की चर्चा करते हुए आपस में बतियाने लगे। समणी की नानी-मामा मामी के साथ इसकी खिमेल वाली मौसी व माता भी सेवाड़ी से चलकर आई। समणी को जैन दीक्षा नहीं लेने के लिये खूब समझाया गया लेकिन वह तो अपने ध्यान में प्रभु-आराधना के अतिरिक्त किसी की बात पर ध्यान ही नहीं दे रही थी। समणी के परिजन एक-दूसरे पर समणी के दीक्षा लेने को प्रेरित करने को कहकर आपस में कहा सुनी करने लगे। आखिर सभी ने आपस में सलाह मशवरा करते हुए समणी के दृढ़ निश्चय की ओर ध्यान देते हुए इसे दीक्षा लेने की सहमति प्रकट की। जैसे ही समणी की दीक्षा लेने की स्वीकृति के साथ जिनशासन देव की जय बोली कि समणी का ध्यान टूटा और इस सुखद समाचार को सुनकर वह अत्यन्त ही आनन्द विभोर होकर चरवले पर बांधे कपड़े को ओगा समझकर खूब तन्मय होकर नाचने लगी।

श्री जिनेश्वर प्रभु के सामने भावपूर्वक दीक्षा स्वीकार करते हुए समणी ने अट्ठमतप (तेला-तीन उपवास) का पच्चक्खाण ले लिया था। समणी के मामा ने जब इससे पूछा कि तुमने जिनेश्वर प्रभु के सामने भावपूर्वक दीक्षा तो ले ली लेकिन अपना गुरू किसको बनाया। तब समणी ने कहा कि सोजत में विराजमान पूज्य साध्वी श्री सिद्ध श्रीजी की पूज्य साध्वी श्री सोनश्रीजी के सुशिष्या पूज्य साध्वी श्री शणगार श्रीजी मेरी गुरूणीजी है। तब उसी दिन बाली से चार श्रावक एवं चार श्राविका गुरूणीजी साध्वी श्री शणगारश्रीजी को बाली पधारकर समणी को दीक्षा देने की विनती करने सोजत गये। पूज्य साध्वी श्री शणगार श्रीजी भी अपनी साध्वी मंडल के साथ उग्र विहार कर पांच दिन में बाली पहुंच गई। उस समय समणी का पांचवा उपवास था। समणी ने मन में धारणा कर रखी थी कि जब तक मेरी दीक्षा नहीं होती तब तक मेरा उपवास करने का क्रम जारी रहेगा। जब पूज्य साध्वी श्री शणगार श्रीजी ने इसे तपस्या के बारे में पूछा तो इसने बताया कि गुरूवर्या मैंने सात उपवास का पच्चक्खाण कर रखा है। संयोग से सातवें दिन अक्षयतृतीया का शुभ दिन होने पर

और कोई जैन साधु उपस्थिति नहीं होने की विशेष परिस्थिति में गुरूणीजी साध्वी श्री शणगार श्रीजी ने समणी को जैन दीक्षा की लघुक्रिया करवाते हुए अपनी शिष्या बनाते हुए इसका नाम साध्वी श्री सुन्दरश्री रखा।

सेवाड़ी के सेठ वीसा श्रीमाली गदैया गोत्र के श्री देवीचंद जैन की सुपुत्री माता श्रीमती भूरी बाई की लाडली एवं शिवगंज के सेठ वीसा श्रीमाली फुलपगर राठौड़ गोत्र की भार्या ने जैन भगवती दीक्षा लेकर जैन साध्वी, पूज्य साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी बन जाने पर सभी परिजनों सहित आमजन समुदाय को बड़ा ही आनन्द हुआ और दीक्षा के निमित कई प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न किये। साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी की बड़ी दीक्षा तीन मास बाद उदयपुर में आगमशास्त्रवेता अनुयोगाचार्य पूज्य पन्यास श्री हित विजयजी गणिवर ने सम्पन्न करवाई।

जैन भगवती दीक्षा ग्रहण करने के बाद साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी ने अपनी गुरूवर्या पूज्य साध्वी श्री शणगारश्रीजी के साथ विचरणा आरम्भ किया। उदयपुर से आप अपनी गुरूवर्या के साथ विहार कर चाणोद पधारी। यहां आपकी गुरूवर्या को कई संघों ने अपने यहां चातुर्मास करने की विनती की। आखिर चाणोद जो पूज्य साध्वी श्री शणगारश्रीजी की जन्म भूमि होने के साथ यहां के संघ की जोरदार भावभरी विनती के कारण यहां चातुर्मास करने की जय बोली गई और अपनी गुरूणीजी के साथ पूज्य साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी ने अपना साधु जीवन का पहला चातुर्मास करते समय आपने अपनी पहली मासक्षमण (एक महीने के उपवास) की तपस्या की। वैसे भी आपश्री ने अपने जीवन के सभी चातुर्मासों के दौरान अट्ठाई (तीन उपवास) से लेकर मासक्षमण की तपस्याऐं की। तपस्या करने का क्रम आपका वैवाहिक जीवन के बाद से शुरू हुआ जो साध्वी जीवन में यथावत जारी रहते हुए अंतिम समय तक चलता रहा। आपने अपने जीवन में दो बार मासक्षमण, एक बार इक्कीस उपवास, दो बार पन्हरा उपवास, चौदह रत्न के चौदह उपवास एक बार, सिद्धि तप एक बार, चतारी अट्ठ दस दोय एक बार, निर्जली अट्ठाई नव बार, दस उपवास एक बार, नव उपवास एक बार, आठ उपवास एक बार, सात उपवास एक बार, तेहर काठिये के तेरह उपवास एक बार, इक्कीयासी आयंबिल, एक बार बड़ा पखवाड़ा एवं एक बार छोटा पखवाड़ा, भैरू पर्व की ओली, तीन वर्षीतप उपवास से दूसरा छट्ठ से तीसरा अट्ठम बीस स्थानक की ओली, बावन जेबाली एक बार, क्षीर

समुन्द्र तप, एक छःमासी-एक चौमासी-एक त्रेमासी-एक अठाईमासी-एक डेढ मासी गौतम स्वामी तप आदि किये। वैसे आपने संसारी जीवन में 13 वर्ष की उम्र से जीवन भर तक हर पयुर्षण पर्व में अट्ठाई की तपस्या की। वहां संसारी अवस्था में छः काय के छः उपवास, द्वितीया-पंचमी-अष्टमी-एकादशी-चतुर्दशी-अमावस्या व पूर्णिमा के दिन मात्र एक चावल के दाने के अखण्ड आयंबिल की घोर तपस्याऐं भी की। ऐसा बताया जाता है कि आपके साध्वी जीवन में शायद ही ऐसा कोई दिन आया होगा कि इन्होंने बिना पच्चक्खाण (तप) के दिन बिताया हो।

त्याग और तपस्या की मूर्ति साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने ज्ञान-ध्यान-संयम-तप-विनय-वैय्यावच्च आदि के साथ-साथ जनसमुदाय को धर्मोपदेश देना इनके जीवन का अंग बन चुका था। अपनी गुरूणाजी एवं अन्य साध्वियों के साथ जहां-जहां भी आपने चातुर्मास किये वहां आपने अपनी ज्ञान गरिमा, आदर्श जीवन, उज्जवल चरित्र, कठिन तपश्चर्या, अखण्ड जिनभक्ति, धार्मिक आराधना उपासना कर जन-जन को मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर करने के लिये प्रेरित एवं उद्‌बोधित किया। आपकी पीयूष एवं मधुर वाणी, शालीनता, धैर्य, शांत स्वभाव, आत्मीयता आदि गुणों से जन साधारण बड़ा ही प्रभावित रहता था। आपके धर्मोपदेश को सुनकर कई भावीजनों ने अपने जीवन में नई राह एवं रोशनी पाई। आपके सम्पर्क में, सत्संग में जो कोई एक बार आया आपके मधुर व्यवहार, स्नेह, आत्मीयता के साथ धार्मिक आचार विचार से प्रभावित होकर आपका श्रद्धालू भक्त बन गया। जैन धर्मावलम्बियों के अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बी भी आपके परम भक्त थे। आपकी वाणी, वचनों का इतना अधिक प्रभाव रहा कि कई लोगों ने अपने में छिपी बुराईयों का त्याग किया और सत्य पथ की ओर आगे बढ़ते हुए अपने जीवन को आदर्श बनाया। आपने लोगों को धर्म की ओर प्रेरित करते हुए न केवल मार्गदर्शन किया अपितु आत्मकल्याण करने की राह दिखाई।

गुरूणीजी साध्वी श्री शणगारश्रीजी के साथ उनकी कई साध्वियां भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विहार करते हुए जैन धर्म का व्यापक प्रचार प्रसार करती रही। जिसमें साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी की अहम् एवं महत्वपूर्ण भूमिका रही। यह साध्वी समुदाय प्राचीन समय के मारवाड़ राज्य के पाली, जालोर के गोडवाड़, अड़तालिसी, जालोरी पट्टी आदि के साथ-साथ सिरोही राज्य के अधिकांश भागों में विहार करती

रही और यहां लोगों में जैन धर्म की जागृति की ज्योत जगाती रही। गोड़वाड़ में इस साध्वी समुदाय का अधिक विचरण होने के कारण इसका इस क्षेत्र में व्यापक प्रभाव रहा। इस क्षेत्र के करीबन सभी जैन तीर्थों की यात्रा करने का आपने सौभाग्य प्राप्त किया।

साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी ने अपनी गुरूणी (गुरूवर्या) के साथ एवं अपनी साधु समुदाय के साथ साध्वी जीवन में और सांसारिक अवस्था में आपने अपने करीबन 78 वर्ष की आयु में कई जैन तीर्थों की यात्रा की। जिसमें सबसे अधिक बार आपने नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा की वहां देश के कई जैन तीर्थों में सतरह बार केसरियाजी, छः बार जैसलमेर लोद्रवा-अमरसागर पंच तीर्थों, कई बार गोड़वाड़ की जैन पंचतीर्थो, सिद्धाचल की नवाणु यात्रा, पांच बार गिरनार की यात्रा के साथ एक बार गिरनार की नवाणु यात्रा, आबू देलवाड़ा-अचलगढ की पंचतीर्थी, अहमदाबाद एवं इनके आसपास के तीर्थ, कावीगंधार, सिद्धपुर, पाटन, जीरावला, सूरत, भावनगर, घोघा पार्श्वनाथ, दाढा, तलाजा, कदबगिरि, कुम्भारियाजी, तारंगाजी, भोयणीजी, भिलड़ियाजी आदि बड़े तीर्थों की यात्रा की। इन सभी तीर्थों की यात्रा करते समय इनके आसपास एवं इनके मार्गों में आने वाले कई तीर्थों की यात्रा करने का आपको एवं आपकी साध्वी समुदाय को सौभाग्य प्राप्त हुआ। जैन तीर्थों की सुखद यात्रा के साथ-साथ आपने इन तीर्थों के विकास-विस्तार में कई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करावे। तीर्थ यात्रा के साथ आपकी आध्यात्मिक जनचेतना संदेश यात्रा भी यथावत जारी रही। यात्रा के दौरान आपने अपनी तपस्या किसी न किसी स्वरूप में जारी रखकर अपने कर्मों को काटने का प्रयास जारी रखा।

अपनी गुरूणीजी (गुरूवर्या) साध्वी श्री शणगारश्रीजी के साथ गोड़वाड़ क्षेत्र में विचरण-विहार करते हुए वि.सं. 1961 में सोजत पधारी। यहां पर कई जैन संतों ने अपने-अपने क्षेत्र में जैन साध्वियों के चातुर्मास हेतु गुरूणीजी श्री शणगारश्रीजी से विनती की गई। विनती करने में भाद्राजून जैन श्री संघ भी सम्मलित था। सभी संघों की विनती को सुनकर गुरूणीजी श्री शणगार श्रीजी ने साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को कुछ साध्वियों के साथ भाद्राजून में चातुर्मास करने की आज्ञा दी। भाद्राजून जैन श्री संघ ने इस घोषणा की जय-जयकार कर हर्ष प्रकट किया और साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी के चातुर्मास की तैयारी में जुट गया।

वि.सं. 1961 का साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी आदि साध्वी मंडल का चातुर्मास बड़े ही धार्मिक उत्सव महोत्सव आदि के साथ भाद्राजून में आरम्भ हुआ। यहां के जैन धर्मावलम्बी श्रावक-श्राविकाओं के साथ अन्य धर्म समुदाय के लोगों की साध्वी समुदाय के प्रति अच्छी भक्ति रही। चातुर्मास के दौरान होने वाले प्रवचनों एवं धार्मिक क्रिया कलापों में लोगों ने बढ़-चढ़कर रूचि ली। चातुर्मास खूब ठाट-बाट के साथ चलने लगा।

दीपावली के पश्चात कार्तिक शुक्ला दसमी को साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी आदि साध्वियां संघ के साथ सांयकालिन जैन उपाश्रय में प्रतिक्रमण कर रही थी। उपाश्रय के बाहर धुन्धाड़ा का एक भोजक (सेवक) जो जिन अनुरागी, धर्म आराधक, स्तवन, सज्जाय, प्रतिक्रमण आदि जैन साधना क्रियाओं को जानने एवं समझने वाला साध्वी के प्रतिक्रमण सम्पन्न होने के बाद दर्शन करने की अभिलाषा में खड़ा था। इस दौरान प्रतिक्रमण में साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी ने प्रकट प्रभावी पुरिसादाणी श्री पार्श्वनाथ भगवन्त का स्तवन अर्न्तमन से भाव विभोर होकर गाना शुरू किया। इस स्तवन में एक सौ आठ पार्श्वनाथ तीर्थों का उल्लेख किया गया है उसे सभी सामुहिक रूप से गाने लगे। सभी के भाव विभोर होकर इस स्तवन को सामुहिक रूप से, शांत चित्त से, धैर्य के साथ भाव पूर्ण रूप से गाने से सारे शांत वातावरण में एक अद्भूत सी आत्म शांति गाने वालों के साथ सुनने वालों को भी मिल रही थी। उपाश्रय के बाहर खड़े धुन्धाड़ा के भोजक (सेवक) इस स्तवन को साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी के मुख से सुरीले स्वर में सुनकर बड़ा ही आनन्दित हो रहा था।

सांयकालिन जैन प्रतिक्रमण सम्पन्न होने के बाद धुन्धाड़ा का भोजक (सेवक) उपाश्रय में गया और साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को पूर्व श्रद्धा के साथ सम्मानपूर्वक वन्दन किया। जैन धर्म सम्बन्धी चर्चा के साथ अपनी शंकाओं के समाधान हेतु कुछ निवेदन भी किया। साध्वी जी इनकी शंकाओं का बखूबी समाधान करती रही और भोजक साध्वीजी के जवाब से संतोष अनुभव करने लगा। भोजक ने निःसंकोच साध्वीजी से पूछा कि अभी आपने प्रतिक्रमण के दौरान जिस प्रगट प्रभावी श्री पार्श्वनाथ भगवन्त का स्तवन गया जिसमें एक सौ आठ पार्श्वनाथ का उल्लेख था। क्या आप इसमें आई एक पंक्ति - 'सहस फणा ने शामला, नाकोड़े तु धरत धधोल' को भी आपने अर्न्तमन से गाया है। कृपया आप बतावे कि आपने एक सौ आठ

पार्श्वनाथ भगवन्त के तीर्थों में किन-किन तीर्थों की यात्रा की? क्या आपने नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा की?

भोजक के मुख से श्री पार्श्वनाथ तीर्थों की यात्रा के साथ नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा सम्बन्धी प्रश्न का जवाब दिया कि हमने कुछ पार्श्वनाथ तीर्थों की यात्रा अवश्य की है लेकिन नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ की यात्रा अभी तक नहीं की है। यह तीर्थ कहां आया हुआ है आदि की जानकारी भोजक से ली। भोजक साध्वी समुदाय के दर्शन वन्दन करके तो चला गया लेकिन साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी के मन में नाकोड़ा के श्री पार्श्वनार्थ प्रभु के दर्शन की जिज्ञासा छोड़ गया। साध्वीजी के मन में नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा करने के भाव जगने लगे और शीघ्र से शीघ्र इस तीर्थ की यात्रा करने की मन में ठान ली। नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा, श्री पार्श्व प्रभु के दर्शन की अभिलाषा ने साध्वीजी को भाव-विभोर कर दिया। रात्रि में भी सोते समय नाकोड़ा तीर्थ यात्रा श्री पार्श्व प्रभु के दर्शन के भाव बने रहे। रात्रि के चौथे प्रहर में साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ध्यान मग्न होकर प्रभु भक्ति में लीन थी कि नाकोड़ा के अधिष्टायक श्री भैरवदेव एवं श्री कीर्तिचन्द्रसूरिजी ने साक्षात् आकर कहा कि-आप निःसंकोच, निर्भय, निडर होकर नाकोड़ा की तत्काल इसी वर्ष यात्रा करो। आपको इस यात्रा से बड़ा लाभ मिलने वाला है।

रात्रि के चौथे प्रहर में घटित इस शुभ घटना की चर्चा साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने अपना ध्यानपूर्ण करने के बाद किसी से नहीं कहीं। प्रातः जब सदैव की भांति श्रावक श्राविका वन्दन करने उपाश्रय आये तब आपने उनको कहा कि मेरी नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा करने के भाव है। आपने नाकोड़ा तीर्थ की महिमा का सभी के सामने वर्णन करते हुए कहा कि मैंने तो नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा का पक्का मानस बना लिया है और जब तक मैं इस तीर्थ की यात्रा नहीं करूंगी तब तक घी, शक्कर, गुड़ खाने का त्याग रखूंगी। साध्वीजी के मुख से ऐसे शुभ कार्यों शुभभावना के साथ लिये अभिग्रह की महत्ता को समझते हुए उपाश्रय में उपस्थित श्रावक श्राविकाओं में से पांच श्रावकों एवं दस श्राविकाओं ने भी जब तक नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा नहीं करते तब तक कुछ न कुछ वस्तुओं के त्याग का अभिग्रह लिया।

नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा करने की उस्तुकता साध्वीश्री सुन्दर श्रीजी आदि के मन में रह-रहकर उठने लगी। नाकोड़ा की यात्रा शीघ्र हो इसके लिये साध्वीजी ने

कार्तिक शुक्ला 13 को फीके चने का आयंबिल, चौमासा चौदस का उपवास एवं कार्तिक पूर्णिमा को फीके चावल का आयंबिल किया। आपकी इस तपस्या की कई श्राविकों ने अनुमोदना भी की वहां कुछ ने ऐसी तपस्या करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

अन्र्तमन से साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी द्वारा नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा करने के भावों से प्रभावित होकर भाद्राजून जैन श्री संघ ने भी आपकी इस यात्रा को शीघ्रातिशीघ्र करवाने की ठान ली। आखिर मिगसर वदी सप्तमी को साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी आदि साध्वी समुदाय के साथ यहां के ग्यारह श्रावक एवं पन्द्रह श्राविकाओं ने जैन तीर्थ श्री नाकोड़ा की यात्रा करने हेतु प्रस्थान किया। इस छोटे से संघ की व्यवस्था के लिये भाद्राजून जैन श्री संघ ने एक सेवक एवं एक सेवकानी को भोजन आदि की व्यवस्था के लिये साथ में भेजा।

भाद्राजून में साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी के चातुर्मास सम्पन्न होने के साथ जैन तीर्थ नाकोड़ा की यात्रा के लिये प्रस्थान की खुशी में सारा भाद्राजून खुशी के मारे झूम उठा। इस छोटे से संघ की नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा को लेकर जैन संघ में अपार खुशी एवं उत्साह झलक रहा था। सभी जैन परिवारों के अतिरिक्त अन्य समुदाय ने इस छोटे से यात्रा संघ को भावपूर्ण सुखद यात्रा सम्पन्न करने की शुभ भावनाओं के साथ ढोल के ढमाकों, थाली की खनखनाहट, झालर की झंकार, जन समुदाय ने जयघोष के नारों के साथ संघ को विदा किया।

भाद्राजून से नाकोड़ा तीर्थ के लिये संघ ने मिगसर वदी सप्तमी को प्रस्थान किया। पद यात्रा के दौरान चौबीस तीर्थंकरों का बराबर स्मरण करने के साथ जैन धार्मिक आराधना, उपासना, साधना, भक्ति करते हुए 24 वें दिन मिगसर सुदी पूर्णिमा को संघ जैन तीर्थ नाकोड़ा पहुंचा। इन चौबीस दिन की पैदल यात्रा को विभिन्न प्रकार की मार्ग की कठिनाईयों, असुविधाओं को पार करता हुआ छोटा संघ नाकोड़ा अवश्य पहुंचा। लेकिन संघ यात्रियों को प्रवास के दौरान रात्रि विश्राम करने के लिये कई स्थानों पर भवन-झूपों तक की आवासीय सुविधा नहीं मिलने पर पेड़ों के नीचे, छोटे तम्बू गाड़कर या फिर कपड़ों की ओट तैयार कर विश्राम करना पड़ा। मार्ग की कठिनाईयों के साथ विश्राम स्थल पर साफ-सफाई का अभाव संघ के यात्रियों एवं साध्वी समुदाय को होता रहा। ऐसी स्थिति में अक्सर गांवों आदि के ओरण अथवा

सीमा में परम्परागत बने तालाबों के किनारे पर खड़े पेड़ों की छत्र-छाया में विश्राम करने को मजबूर होना पड़ा। इसके अतिरिक्त कई स्थानों पर जैन परिवारों के नहीं होने से इन्हें नासमझ लोगों का तिरस्कार भी झेलना पड़ा। कई स्थानों पर जैन अजैन बन्धुओं ने इन्हें बड़ा सम्मान भी दिया।

भाद्राजून से संघ प्रयाण के साथ ही साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने प्रतिदिन आयंबिल की तपस्या करनी शुरू कर दी। इस तपस्या के प्रभाव से कई विघ्न बाधाएं स्वत: ही दूर होती रही। जब आप नाकोड़ा तीर्थ के सन्निकट अपने साथ यात्रा कर रही साध्वियों एवं संघ के लोगों के साथ पहुंची तब आपने निर्जला तेला (तीन दिन उपवास-अट्ठाम) की तपस्या मिगसर सुदी 13 से आरम्भ कर दी। मिगसर सुदी 14 को आप संघ के साथ बालोतरा पधारी। बालोतरा में जैन धर्मावलम्बियों की बस्ती होने के कारण यहां आपका एवं संघ का सम्मान किया गया। आप संघ के साथ जैन मंदिर दर्शनार्थ हेतु जा रही थी कि आपको यहां विराजमान श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी के शिष्य को गोचरी जाते हुए देखा। आपने इहें देखकर सोचा कि यहां कोई संत महात्मा अवश्य रहते है। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि यहां श्रीपूज्य जी विराज रहे है। आपने संघ के साथ जिनमंदिर के दर्शन कर सीधी संघ सहित श्रीपूज्यजी को सुखसाता पूछने के लिये उनके उपाश्रय पधारी।

बालोतरा के श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी ने यहां जैन साध्वियों के साथ संघ के साथ आते देख आश्चर्य में पड़ गये और सोचने लगे कि ऐसी हिम्मत करने वाली कोई साहसिक जैन साध्वी ही होगी। ये ऐसा विचार कर ही रहे थे कि जैन साध्वी श्री सुन्दर श्री जी ने आपसे सुख शाता पूछा। इस शिष्टाचार भेंट के बाद श्रीपूज्यजी ने साध्वीजी को सम्बोधित करते हुए कहा कि आपने इस बिहड़ रेगिस्तानी क्षेत्र में पधारने में जो साहस दिखाया है वह वास्तव में सराहनीय एवं अनुमोदनीय है। जबकि इस ओर आने का कोई साहस ही नहीं करता है। साध्वीजी की अन्त:करण से प्रशंसा करते हुए श्रीपूज्यजी ने अपने उपाश्रय के समीप बने उपाश्रय में स्थानीय संघ को कहकर व्यवस्था करवाई और साथ में संघ के श्रावक-श्राविकाओं को उचित स्थान पर ठहराया। साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी के नाकोड़ा तीर्थ दर्शन की भावना को देखकर श्रीपूज्यजी ने आपको इस कार्य के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

दूसरे दिन मिगसर पूर्णिमा को बालोतरा से पूज्य साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी

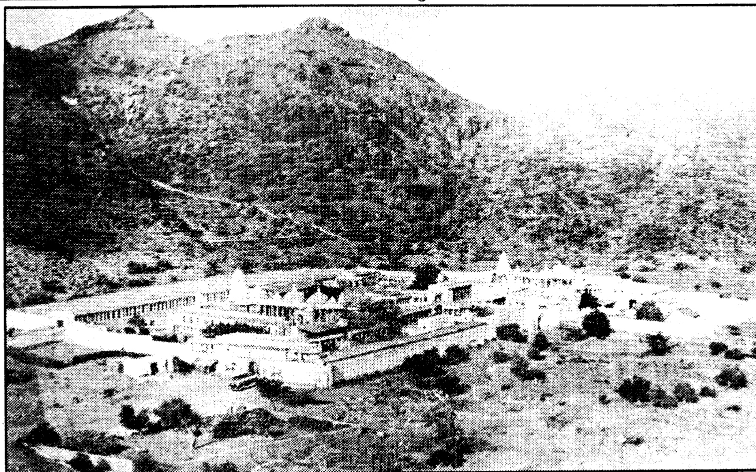

प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. द्वारा नाकोड़ा का जीर्णोद्धार करवाने के करीबन चालीस वर्ष बाद का नाकोड़ा

साध्वियों एवं अपने साथ संघ स्वरूप में आये श्रावक-श्राविकाओं के साथ नाकोड़ा के लिये प्रस्थान किया। इस संघ के साथ बालोतरा के ज्योतिष के विद्ववान जैन धर्म के ज्ञाता और अच्छे वैद्य के रूप में अपनी लोकप्रियता की पहचान बनाये श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी भी आपके साथ नाकोड़ा की यात्रा करने के लिये पैदल रवाना हुए। बालोतरा एवं नाकोड़ा के बीच जंगली घास फूस, कंटिली झाड़ियों, उबड़-खाबड़ पगदंडी मार्ग, जंगली कीट पतंगों आदि का सामना भी करना पड़ा। विशेष कर जंगली घास में पैदा होने वाले कांटेदार भुरटों, कंटिली झाड़ियों से कई बार उलझना भी पड़ा। इन मार्ग की कठिनाईयों एवं मुसीबतों को पार कर जैसे ही साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने नाकोड़ा पार्श्वनाथ जिनालय को दूर से संघ एवं श्रीपूज्यजी के साथ दर्शन किये तो इनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। सभी नाकोड़ा में श्री पार्श्वनाथजी के मंदिर को देखकर रास्ते की नाना प्रकार की कठिनाईयों, मुसीबतों, बाधाओं, व्यवधानों आदि को भूल गए और तत्काल बिना विश्राम के नाकोड़ा मंदिर में श्यामवर्णी श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथजी के दर्शन वन्दन करने के लिये पूर्ण आस्था एवं धार्मिक क्रिया के साथ प्रवेश किया और जैसे ही साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी ने नाकोड़ा पार्श्वनाथ जी के दर्शन किये तो इनकी खुशी का कोई पार नहीं रहा। अत्यधिक प्रसन्नचित्त होकर आपने श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जी की विधिवत उपासना कर आनन्द

विभोर हो उठी। यहां पर जब आपने प्रगट प्रभावी श्री पार्श्वनाथ जी का स्तवन तन्मय होकर गाया और जैसे ही 'साहसफणा ने शामला नाकोड़े तुंधरत धलोल' पंक्ति का उच्चारण किया तो आप गद्गद् हो गई। आपकी एवं आपके साथ पधारी अन्य साध्वियों-श्रावक-श्राविकाओं की प्रभु भक्ति देखकर बालोतरा के श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी भी भाव-विभोर हो गये।

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथजी

साध्वीश्री सुन्दर श्री जी सभी के साथ नाकोड़ा पार्श्वनाथजी के दर्शन कर मंदिर परिसर में फैली कंटिली घासफूस वाली झाड़ियों को पार करती हुई अन्य दोनों मंदिरों के दर्शन करने पधारी। सभी मंदिरों के दर्शन करने के बाद आप इनकी दुर्दशा को देखकर अत्यधिक दु:खी होने लगी। साध्वीजी के चेहरे पर दु:ख की लकीरों को देखकर ज्योति के महान् पंडित श्रीपूज्यजी इनके मन की पीड़ा को समझ गये कि यह श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ की इस स्थिति से अत्यधिक दु:खी एवं मन से पीड़ित हो रही है।

नाकोड़ा तीर्थ में ठहरने के स्थान के अभाव के बाद भी साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी,

अन्य साध्वियों एवं संघ के यात्रियों के लिये बड़ी मुश्किल से सभी ने स्वयं के परिश्रम से व्यवस्था जुटाई। साध्वीश्री सुन्दर श्रीजी ने श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी के साथ नाकोड़ा तीर्थ के सभी टूटे-फूटे, बिखरे, जीर्ण-शीर्ण मंदिरों को अत्यधिक बारीकी से देखा। सभी मंदिर न केवल जीर्ण-शीर्ण हो चुके थे अपितु इनके पाषाण धरातल पर आने को अपनी जगह छोड़ रहे थे। मंदिर का हर क्षेत्र घास-फूस से डटा हुआ था। जगह-जगह कंटिली झाड़ियों में भूरट, कांटों वाले पौधे, बोरड़ियों, आक, धतूरे, थोर, गूगलानी आदि कई प्रकार की झाड़ियों ने पूरे क्षेत्र पर अपना नाजायज कब्जा जमा रखा था। मंदिर के फर्श से लेकर शिखर तक का भाग जगह-जगह से टूट चुका था और उनकी छिद्र रेखाओं में कई प्रकार की घास एवं छोटे-छोटे पौधों ने अपने पांव पसार दिये थे जिसके कारण जो स्थिति उस समय मंदिर की थी वह इतनी दयनीय थी कि कभी भी प्राकृतिक की इस पनपने वाली पौध इन मंदिरों को कभी भी खण्डर में बदल सकती है। मंदिर में प्रवेश करने वाली सीढ़ियों के पाषाण अपना स्थान छोड़ चुके थे। जगह-जगह गड्ढे पड़ने एवं पत्थरों के इधर-उधर बिखरने के कारण मंदिर में प्रवेश पाना भी कठिन हो चुका था। मंदिर में फर्श का स्थान उगी घासफूस ने ले लिया था। मंदिर में दर्शन चैत्यवदन करने हेतु उपयुक्त स्थान भी दिखाई नहीं दे रहा था। मंदिर एवं परिसर की ऐसी दुर्दशा देखकर साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को अत्यधिक दु:ख एवं पीड़ा हो रही थी। इतना ही नहीं इन मंदिरों में प्रतिष्ठित मूर्तियों की सुरक्षा की कोई माकूल व्यवस्था नहीं थी। मंदिर के प्रवेश द्वार पर मात्र टूटा-फूटा दरवाजा था जिनके छिद्र में से आसानी से छोटे जंगली जानवर घुस सकते थे। मंदिर के चारों तरफ कंटिली बाड़ का परकोटा बना हुआ था जिसमें से जंगली जानवरों, पशुओं के साथ चरवाहों ग्वालों ने अपनी सुविधा के लिये बाड़ को तोड़कर अपना रास्ता बना रखा था। इस कारण जंगल में विचरने वाले जानवर मंदिर परिसर में ही नहीं मंदिर के सभा मंडल आदि क्षेत्र में उगने वाली घास को चरने पहुंच जाते थे। वर्षा के दिनों में तो इन मंदिरों एवं इनके परिसर में चारों तरफ पानी-पानी फैल जाता था। सभी मंदिर न केवल टपकते थे अपितु मंदिर के मूल गम्भारों पर बने टूटे शिखरों के छिद्रों में से पानी की धाराऐं बहती नजर आती थी। जिसके कारण मूल गम्भारों में कीचड़ ही कीचड़ हो जाता था जो कई महीनों तक रहता था। वर्षा के पनी की मार से बचने के लिये जंगल में पशु चरने वाले पशुपालक मंदिरों के मूल गम्भारों,

सभा मंडप आदि की टपकने वाली छतों के नीचे अपना डेरा जमाये रहते थे।

सदियों पुराने नाकोड़ा के इन मंदिरों की देखरेख करने के लिये जोधपुर राज्य की ओर से एक संत को मंदिरों की देखभाल एवं पूजा के लिये लगा रखा था। जिसने अपने अस्थाई आवास के लिये दो झूपे बना रखे थे। जो इतनी जीर्ण-शीर्ण थे कि उसमें रहना भी खतरे से खाली नहीं था। अक्सर वह यहां रहता भी नहीं था। वह भी इसकी तरफ बराबर ध्यान नहीं देता था और कई दिन तक नदारद रहता था। क्योंकि इस पर किसी का अंकुश एवं पूर्ण देखरेख नहीं था। व्यवस्था के नाम पर कुछ भी नहीं होने के कारण नाकोड़ा जैन मंदिरों की दिनोदिन दुर्दशा हो रही थी।

साध्वी श्रीसुन्दर श्रीजी नाकोड़ा तीर्थ की ऐसी दुर्दशा देखकर बड़ी व्यथित होने लगी और इनके मन में इस तीर्थ के जीर्णोद्धार करने के भाव जागृत होने लगे। इन्होंने अपने साथ संघ के आये श्रावक-श्राविकाओं को मंदिर में जगह-जगह फैली गन्दगी, रेत, घास-फूस को हटाने के लिये आग्रह किया। सभी इस कार्य में जुट गये। इस बीच मंदिर के दांई ओर गोडी यज्ञ के समीप बिखरे-फैले कचरे को साफ करने के लिये संघ के साथ आई नारंगी बाई सफाई कर रही थी कि पास के बिल में से भयंकर रूप धारण किये सांप निकला और नारंगी बाई को डसता हुआ वापिस अपने बिल में घुस गया। नाग के डसने के साथ नारंगी बाई जोर से चिल्लाती हुई नाग के डसने की बात, मौत के भय से घबराई हुई कहने लगी। नारंगी बाई के चिल्लाने पर साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी श्रीपूज्य फतेन्द्रसूरिजी सहित सभी इनके पास एकत्रित हुए।

सांप के डसने की बात सुनते ही श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी ने तत्काल नाकोड़ा की पहाड़ी में पैदा होने वाली औषधी मंगवाई और उसका लेप तैयार कर नारंगी बाई को जहां सांप ने डसा था वहां लगाई। कुछ ही समय पश्चात् नारंगी बाई का सांप का जहर उतर गया और वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गई। तब सभी ने सुख की सांस ली। नारंगी बाई का उपचार शुरू करने के बाद बातों ही बातों में श्रीपूज्यजी का ध्यान साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी के हाथ की रेखाओं पर पड़ा और तत्काल साध्वीजी को सम्बोधित करते हुए बोल पड़े कि आपके हाथ की रेखाओं से ऐसा लगता है कि आप इस तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाकर बहुत बड़ा जैन शासन पर उपकार कर यश एवं कीर्ति प्राप्त करोगी। साध्वीजी ने श्रीपूज्यजी के श्रीमुख से तीर्थ के जीर्णोद्धार सम्बन्धी बात सुनकर श्री पूज्यजी को आदर के साथ सम्बोधित करते

हुए कहा कि आपने मेरे मन की बात बताई है आज से मैं जीवन पर्यन्त इस तीर्थ के जीर्णोद्धार के कार्य में यथाशक्ति सहयोग करने का प्रयास करूंगा।

श्रीपूज्य जी तो बालोतरा चले गये लेकिन साध्वीजी के मन में तीर्थ की व्यवस्था, मंदिरों की देखभाल, जिन मंदिरों में प्रतिष्ठित, जैन प्रतिमाओं की सेवापूजा करने आदि को गम्भीर समस्याओं को सुलझाने के विचार उठने लगे। इसी दौरान संयोग से जोधपुर से सरकारी सेवा निवृत होकर श्री सरदारमलजी यात्रा की कई प्रकार की कठिनाईयों को पार करते हुए नाकोड़ा तीर्थ के दर्शन करने आये। आपने नाकोड़ा के जैन मंदिरों में प्रतिष्ठित जैन प्रतिमाओं के दर्शनकर यहां विराजमान साध्वीश्री सुन्दरश्रीजी आदि साध्वियों को भी वन्दन किया और साध्वियों के साथ भाद्राजून से आये श्रावक-श्राविकाओं से भी सम्पर्क किया। बातों ही बातों में साध्वी जी को मालूम हुआ कि जोधपुर से पधारे श्री सरदारमलजी अकेले है और ये सरकारी नौकरी से हाल ही में मुक्त हुए है। आप के मन मैं विचार आया कि इनकी सेवाऐं तीर्थ के लिये ली जाय तो उचित रहेगा आपने भी श्री सरदारमल जी को तीर्थ सेवा करने की प्रेरणा दी। श्री सरदारमल जी भी साध्वी जी की प्रेरणा एवं तीर्थ के जीर्णोद्धार की भावना से प्रभावित होकर तीर्थ की सेवा करने की स्वीकृति तो दे दी लेकिन सहज भाव से कहा कि मुझे यहां कार्य करने पर क्या तनख्वाह दी जायेगी। इस पर पांच रूपये मासिक तनख्वाह देना तय करते हुए साध्वीजी के साथ आए संघ ने आपस में पैसा एकत्रित कर दो वर्ष का वेतन इन्हें अग्रिम दे दिया।

नाकोड़ा में श्री सरदारमलजी को व्यवस्थापक तो बना दिया लेकिन व्यवस्थापक के रहने का कोई स्थान नहीं होने पर तत्काल उसकी अस्थाई व्यवस्था की। नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार की शुरूआत करते ही साध्वीजी संघ के साथ भाद्राजून के लिये रवाना हो गई। रास्ते में बालोतरा में नये व्यवस्थापक के साथ रूकी और यहां श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी के साथ बालोतरा जैन श्री संघ के सामने नाकोड़ा तीर्थ में सेवा पूजा के लिये साधन जुटाने की चर्चा की। साध्वीजी की प्रेरणा एवं श्री पूज्यजी के मार्गदर्शन से बालोतरा जैन श्री संघ ने करीबन 500 रूपये एकत्रित कर दिये। इस धनराशि से नाकोड़ा में सेवा पूजा की सामग्री की जो कमी थी उसकी पूर्ति कर श्री सरदारमलजी पुनः नाकोड़ा आए ओर साध्वीजी के निर्देशानुसार यहां के मंदिरों की देखभाल, जीर्णोद्धार, जिन प्रतिमाओं की सेवापूजा आदि को सम्भालने

लगे। आपने इसी तीर्थ की करीबन 23 वर्ष तक लगातार साध्वीजी सुन्दरश्रीजी के मार्गदर्शन एवं निर्देशों पर सेवा दी। जिसकी स्वयं साध्वीजी ने कई बार कई स्थानों पर मुक्त कण्ठ से प्रशंसा भी की।

नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा करने की खुशी का साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी एवं इनकी साध्वियों को अपार खुशी हुई। वहां तीर्थ की दुर्दशा को देखकर इनका मन अधिक दु:खी भी हुआ। अपने इस तीर्थ की यात्रा के बाद इसके जीर्णोद्वार करने का मानस बना लिया और उसके लिये प्रयत्न भी आरम्भ कर दिये। बालोतरा से विहार कर आप भाद्राजून होते हुए गोड़वाड़ क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर नाकोड़ा तीर्थ की महिमा के साथ जीर्णोद्वार के लिये लोगों को अवगत करवाते हुए अपनी गुरूणीजी साध्वी श्री शणगारश्रीजी के पास घाणेराव पहुंची। यहां पहुंचने के बाद आपने नाकोड़ा तीर्थ की वस्तुस्थिति से गुरूवर्या के साथ घाणेराव संघ को भी अवगत करवाया। आपने गुरूवर्या से इस तीर्थ के जीर्णोद्वार करवाने की आज्ञा चाही। गुरूणी श्रीशणगारश्रीजी ने भी इनकी तीर्थोद्धारक की प्रबल भावना को देखकर इन्हें आशीर्वाद सहित तीर्थ उत्थान, विकास एवं इसके जीर्णोद्धार करने की बड़ी खुशी के साथ आज्ञा प्रदान की।

गुरूणीजी की नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार करवाने की आज्ञा के साथ कई ग्रामीण क्षेत्रों में विहार करते हुए आपने लास गांव में वि.सं. 1962 का चातुर्मास वहां किया। पूरे चातुर्मास के दौरान आपके मन मे केवल नाकोड़ा तीर्थ एवं इसके उत्थान की भावना घर किये रही। आपके सम्पर्क में जो कोई भी आया। उन्हें भी नाकोड़ा तीर्थ के दर्शन करने एवं इनके जीर्णोद्धार के लिये यथाशक्ति सहयोग करने के लिये बराबर प्रेरित करती रही। साध्वीजी की इस प्रेरणा से कई लोग प्रभावित भी हुए।

लास का चातुर्मास पूर्ण करने के बाद नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार हेतु आर्थिक सहयोग के लिये आपने लोगों को उपदेश, प्रेरणा देनी शुरू की। जिसका प्रभाव यह हुआ कि आपको अपने चातुर्मास के बाद लास सहित मणादर, वरलुट, जावाल आदि कई स्थानों की यात्रा करते हुए करीबन साढे ग्यारह हजार रूपये की धनराशि लोगों ने नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार हेतु दी। इस राशि को तत्काल बालोतरा भिजवाया और स्वयं विभिन्न क्षेत्रों में विहार के साथ तीर्थ की महिमा का गुणगान करते हुए इसकी वर्तमान दुर्दशा के बाद इसके जीर्णोद्धार हेतु लोगों को बराबर उपदेश

देती हुई बालोतरा में जैन श्रीसंघ के साथ श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी से तीर्थ के जीर्णोद्धार, व्यवस्था आदि की चर्चा करते हुए नाकोड़ा तीर्थ पर अपनी साध्वियों के साथ उग्रविहार के साथ रास्ते की विभिन्न कठिनाईयों की परवाह किये बिना नाकोड़ा पहुंची और यहां पूर्व में आरम्भ में किये छोटे स्तर के जीर्णोद्धार कार्य में गति देते हुए तीर्थ के जीर्णोद्धार का कार्य गति के साथ आरम्भ करवाया। तीर्थ के व्यवस्थापक श्री सरदारमलजी सोमपुरा श्री रतनचंद से तीर्थ के जीर्णोद्धार का कार्य करवाते रहे।

नाकोड़ा तीर्थ पर आकर आपने भक्तिभाव से श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रभु के दर्शन किये। यहां की चलने वाली व्यवस्था को देखा और किये जाने वाले लघु स्तर के जीर्णोद्धार की जानकारी ली। कुछ समय यहां विराजने के बाद तीर्थ के जीर्णोद्धार हेतु धन एकत्रित करने की प्रेरणा एवं उपदेश देने के लिये बाड़मेर की ओर विहार किया। बाड़मेर एवं इसके आसपास के क्षेत्र में निवास करने वाले जैन बन्धुओं का इस तीर्थ के प्रति अच्छा रूझान भी था। बाड़मेर की ओर विहार करते समय आपको असहनीय कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। आहार-पानी की दिक्कतों के साथ, रेतीले टीबों में व्यवस्थित मार्ग नहीं होने की असुविधा से भी जूझना पड़ा। रेगिस्तानी क्षेत्र में पैदा होने वाली कंटिली झाड़ियों, भुरट के कांटों के साथ घासफूस की विशालता के बीच में से होकर अपनी कठिन यात्रा, कई स्थानों जैन बस्ती नहीं होने के कारण आहार-पानी का अभाव भी झेलना पड़ा। इतना ही नहीं जैन धर्म के प्रति अज्ञानियों के साथ आपको कई तर्क वितर्कों के बीच कोपभाजन भी होना पड़ा। विहार में नाना प्रकार की कठिनाईयों, असुविधाओं, बाधाओं, परेशानियों, संकटों के साथ प्राकृतिक प्रकोपों, अज्ञानी लोगों की फबतियों के बीच में से सकुशल आप अपनी साध्वियों के साथ बाड़मेर पधारी।

बाड़मेर यद्यपि जैनों की अच्छी बस्ती थी। श्रद्धा एवं भक्ति यहां के श्रावक-श्राविकाओं में अधिक होते हुए धर्म के मर्म की अधिक जानकारी का अभाव था। आपने कुछ समय यहां रहकर अज्ञान के अंधकार को दूर कर जैन धर्म की प्राथमिक क्रिया कलापों से श्रावक-श्राविकाओं को उपदेश के माध्यम से समझाया। यहां के जैन धार्मिक स्थलों की देखभाल, सेवा पूजा आदि के करने की विधि आदि के सम्बन्ध में जैन संघ को अवगत करवाया। इतना ही नहीं नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिये हर सम्भव बाड़मेर जैन श्री संघ को सहयोग देने की ओर प्रेरित किया। जैन

श्री संघ ने नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार हेतु पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन के साथ तत्काल सहयोग भी दिया।

बाड़मेर से साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी अपनी साध्वियों के साथ जैसलमेर तीर्थ की यात्रा के लिये दुर्गम मार्गों की संकटग्रस्त यात्रा करती हुई वहां पहुंची। जैसलमेर तीर्थ के साथ यहां की पंचतीर्थी में अमरसागर, लोद्रवा, ब्रह्मसर, पोकरण आदि तीर्थों की यात्रा की। यहां के जैन मंदिरों, मूर्तियों, बारीक शिल्पकला, ज्ञान भंडार में उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थों आदि को देखकर अत्यधिक आनन्द विभोर हुई। जैसलमेर की सुखद यात्रा के बाद पुनः प्राकृतिक के कठिन मार्गों से विहार करती हुई बाड़मेर पधारी।

बाड़मेर के जैन श्री संघ ने आपको अतिआग्रह के साथ यहां पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति को दर्शाते हुए चातुर्मास करने की विनती की। आपने भी यहां के संघ की भक्ति एवं श्रद्धा को देखकर चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की। चातुर्मास आरम्भ होने में कुछ समय बाकी रहने के कारण आपने बाड़मेर के आसपास के क्षेत्रों में विहार कर खूब जोर की धर्म प्रभावना की। इन स्थानों पर नाकोड़ा तीर्थ की महिमा बताने के साथ इसके जीर्णोद्धार के लिये करीबन साढे तीन हजार रूपये एकत्रित कर उसे बालोतरा भिजवाये।

विभिन्न क्षेत्रों में धर्म प्रचार कर साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी जैसे ही अपने साध्वी समुदाय के साथ बाड़मेर पधारी तब आपका गर्म जोशी के साथ स्वागत किया गया। इस अवसर पर ढोल एवं थाली बजाने की विशेष व्यवस्था की गई। कई लोग आपके स्वागत जुलूस में सम्मिलित हुए और जगह-जगह आपका स्वागत करते हुए खागल-पाधर मोहल्ले की धर्मशाला में आपके चातुर्मास करने की व्यवस्था की गई। आपका बाड़मेर का चातुर्मास बड़े ही ठाट-बाट से हुआ और इस चातुर्मास में कई प्रकार की धर्म आराधना के रूप में तपस्या आदि का भी आयोजन किया। साध्वीजी ने भी चातुर्मास के दौरान धर्म के मर्म को अत्यन्त ही बारीकी से जनसाधारण को समझा। यद्यपि उस समय जैन धर्म की प्राथमिक क्रियाकलापों से भी अनभिज्ञ श्रावक-श्राविकाओं को इसकी जानकारी करवाने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बाड़मेर चातुर्मास के दौरान विशेष रूप से नाकोड़ा की जीर्ण-शीर्ण अवस्था का मार्मिक चित्रण कर आपने इसके जीर्णोद्धार के साथ अन्य प्रकार की व्यवस्था में

बाड़मेर जैन श्री संघ को विस्तार से अवगत करवाया। जीर्णोद्धार के लिये आर्थिक सहयोग देने के साथ-साथ नाकोड़ा जैन मंदिरों में प्रतिष्ठित प्रतिमाओं के प्रक्षालण हेतु दूध के अभाव में मिटाने के लिये कुछ गायें तत्काल बाड़मेर जैन श्री संघ ने नाकोड़ा पहुंचाई। साथ ही साथ अन्य कई प्रकार की मंदिर उपयोग वस्तुएं भी भेजी।

बाड़मेर का सानन्दपूर्वक चातुर्मास सम्पन्न कर साध्वी समुदाय पुनः नाकोड़ा पधारी। बाड़मेर एवं नाकोड़ा के बीच में आने वाले गांवों में जैन धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार करते हुए नाकोड़ा की व्यवस्था एवं जीर्णोद्धार के लिये जैन श्री संघों को सहयोग देने- के लिए तैयार किया। जब आप नाकोड़ा पधारी तो यहां चल रही व्यवस्था और जीर्णोद्धार के कार्य को देखकर संतोष किया और इसमें आवश्यक सुधार एवं गति लाने के लिये प्रयत्नशील बन गई। लेकिन प्राकृतिक प्रकोप के कारण यहां भयंकर प्लेग की बीमारी फैलने से नाकोड़ा के आस-पास के क्षेत्रों में भयंकर महामारी ने मौत का तांडव नृत्य कर रखा था। नाकोड़ा में भी प्लेग फैल गया। यहां निवास करने वाले मात्र दो-जिसमें व्यवस्थापक श्री सरदारमलजी एवं सोमपुर श्री रतनचंदजी प्लेग की चपेट में आकर भीषण रूप से बीमार पड़ गये। ऐसी स्थिति में नाकोड़ा पधारी साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी आदि ठाणा के लिये आहार पानी की व्यवस्था भी एक गम्भीर समस्या बन गई। लेकिन धर्म आराधक साध्वी मंडल ने इस प्राकृतिक विपदा से मुक्ति पाने के लिये सभी ने अट्ठाई (आठ उपवास) का तप किया।

साध्वी समुदाय की तपश्चर्या का प्रभाव और नाकोड़ा पहाड़ी पर पैदा होने वाली जड़ी-बूटियों को मंगवाकर साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी ने प्लेग से पीड़ित लोगों को उपचार के लिये सेवन करने का संकेत दिया। जिसके परिणाम स्वरूप नाकोड़ा में जीर्णोद्धार का कार्य कर रहे सोमपुरा श्रीरतनचंदजी तो आठ दिन में ठीक हो गये और मुनिम श्री सरदारमलजी भी दो मास तक लगातार उपाचार लेने के बाद हैजे की बीमारी से मुक्त हो गये। वहां कुछ साध्वियां जो प्लेग बीमारी से ग्रसित थी उन्होंने तपस्या कर इसी बीमारी से मुक्ति प्राप्त की। इस प्राकृतिक विपदा से जन-जन मुक्ति प्राप्त करे इसी उद्देश्य को लेकर साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने अट्ठाई (आठ उपवास) की तपस्या के बाद पुनः ग्यारह उपवास के बाद पारणा कर सात उपवास किये। साध्वी श्रीजी की तपश्चर्या के प्रभाव से धीरे-धीरे प्लेग की बीमारी शांत हुई।

नाकोड़ा में प्लेग की बीमारी के फैलने के साथ यहां मंदिरों की देखभाल,

जिन प्रतिमाओं की पूजा अर्चना करने वाला भी कोई नहीं रहा। जो थे वे सभी प्लेग की बीमारी से भयंकर रूप से ग्रसित होने के कारण जिन प्रतिमाओं की पूजा करने की हिम्मत भी नहीं जुटा पा रहे थे। ऐसी विकट स्थिति में साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी यहां के एक भील बालक को साथ लेकर जसोल पधारी और वहां प्लेग की बीमारी की भयंकरता के बीच एक साध लड़के को पांच रूपया प्रतिदिन वेतन पर नाकोड़ा लाई। इस लड़के ने करीबन सवा महीने तक यहां भगवान की जिन प्रतिमाओं आदि की सेवा पूजा की। जब व्यवस्थापक श्री सरदारमलजी एवं सोमपुरा श्री रतनचंदजी पूर्णरूप से स्वस्थ हो गये तब इन्होंने पुन: नाकोड़ा का कार्यभार सम्भाल लिया।

साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी के मार्गदर्शन में नाकोड़ा तीर्थ में जीर्णोद्धार का कार्य सीमित उपलब्ध साधन सुविधा के आधार पर चल रहा था। जीर्णोद्धार के कार्य गति प्रदान करने के लिये साध्वीजी ने नाकोड़ा से अपनी साध्वियों के साथ पद विहार कर मालाणी क्षेत्र, सिवान्ची क्षेत्र, गोड़वाड़, जालोरी पटी, बीकानेर सहित कई गांवों, कस्बों आदि में जाकर जैन संघों को नाकोड़ा जैन तीर्थ के जीर्णोद्धार का उपदेश देने के साथ इस तीर्थ के लिये बर्तन, बिस्तर, जेवर, रूपये आदि एकत्रित करने का युद्ध स्तर पर अभियान चला दिया। जिसका परिणाम सुखद रहा। नाकोड़ा तीर्थ के लिये सभी क्षेत्रों से रूपये पैसे, जेवर, बर्तन, बिस्तर आदि आने शुरू हुए। इस कार्य के लिये व्यवस्थापक श्री सरदारमलजी ने बहुत कष्ट उठाने के बाद तीर्थ की सेवा भावना को नहीं छोड़ा। यहां तक साध्वी समुदाय ने भी जहां-जहां से जो-जो सामग्री आदि मिली उसे अपनी क्षमतानुसार अपनी पीठ पर लाद-लादकर नाकोड़ा तीर्थ पर पहुंचाना शुरू कर दिया।

जिन-जिन क्षेत्रों में साध्वीश्री सुन्दर श्रीजी अपने साध्वी मंडल के साथ पधारती तो वहां नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार की चर्चा एवं इस तीर्थ के लिये सामग्री एकत्रित करने का वातावरण स्वत: ही बन जाता। साध्वीजी के उपदेशों का प्रभाव ऐसा पड़ा कि लोग स्वत: ही अपनी क्षमतानुसार सहयोग रूप में रूपया पैसा, बर्तन, बिस्तर, जेवर आदि स्थानीय संघ के पास जमा करवाने को आतुर होने लगे। एकत्रित सामग्री आदि को नाकोड़ा पहुंचाने की समुचित व्यवस्था स्थानीय संघ अपने स्तर पर करने लगा। चारों ओर नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार की चर्चा और सामग्री का एकत्रित होने के कारण जन-जन की जुबान पर नाकोड़ा नाम उजागर होने लगा। सभी इस

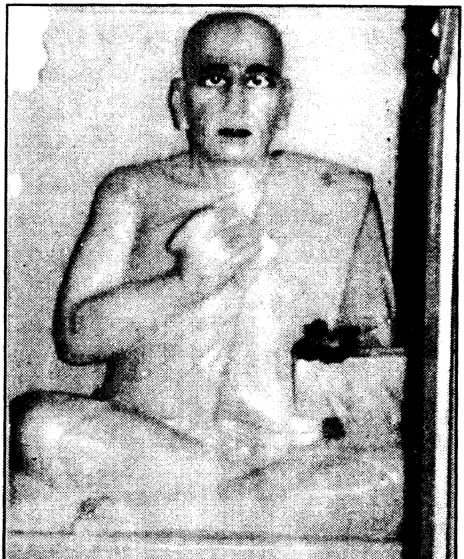

पन्यास प्रवर श्री हितविजयजी महाराज

पुण्य कार्य में योगदान देने लगे।

नाकोड़ा तीर्थोद्धार को लेकर साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी अपने साध्वी समुदाय के साथ गोड़वाड़ की यात्रा पर थी। तब वि.सं. 1964 में तपागच्छ समुदाय के तपागच्छीय अनुयोगाचार्य पन्यास प्रवर श्री हितविजयजी अपने साधु समाज के साथ नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा पर पधारे। आपने यहां के चिन्तामणि पार्श्वनाथजी की मनमोहक प्रतिमा के दर्शन कर आत्म विभोर हो गये। नाकोड़ा भैरव देव के दर्शन कर अत्यन्त ही आनन्दित हुए। आपको पता चला कि श्री नाकोड़ा भैरवदेव ने साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को कई बार स्वप्न में इस तीर्थ के जीर्णोद्धार करने का संकेत भी दिया है। इतना ही नहीं आपको यहां आने पर मालूम हुआ कि साध्वी श्रीसुन्दर श्रीजी नाकोड़ा भैरवदेव का नाकोड़ा में मूल प्रवेश द्वार अर्थात् हाथियों के पीछे एक आले में जहां वर्तमान में श्री हनुमानजी की प्रतिमा विराजमान है यहां स्पूत था और इसके आगे घंटों तक ध्यान मग्न होकर जाप जपती थी, आराधना करती थी, ध्यान करती रहती थी। जिसके कारण वि.सं. 1958 में आपको स्वप्न में साक्षात् नाकोड़ा भैरवदेव ने दर्शन देते हुए नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा करने और इसके पुनरोद्धार का संकेत दिया

था।

पन्यास प्रवर श्री हित विजयजी ने नाकोड़ा में चल रहे जीर्णोद्धार कार्य को देखकर बड़े प्रभावित हुए और साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी द्वारा नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार हेतु किये जाने वाले कार्यों को देखा और जगह-जगह से तीर्थ के लिये तीर्थ उपयोग वस्तुओं के एकत्रित करने की जानकारी प्राप्त की और इस कार्य में अपने समुदाय की जैन साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी के जुड़े होने पर अपार खुशी एवं आनन्द की अनुभूति हुई। पन्यास प्रवर श्रीहित विजयजी नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा कर गोड़वाड़ की ओर विहार किया। यहां पर नाकोड़ा तीर्थोद्धार के लिये जैन श्रीसंघों से सहायता के लिये प्रयत्नशील साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को आशीर्वाद देते हुए तीर्थ के उद्धार के लिये प्रेरित किया। अपने समुदाय के पन्यास प्रवर की प्रेरणा और आशीर्वाद मिलने के बाद साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने अति उत्साह, दूने जोश के साथ नाकोड़ा तीर्थ के उत्थान, विकास के लिये कार्य आरम्भ कर दिया।

गोड़वाड़ की यात्रा के दौरान उरी (पाली) गांव के सेठ श्री किशनाजी के यहां श्रीमती सदी बाई की कोख से वि.सं. 1927 में जन्मी मगनी बाई का जन्म हुआ और युवा अवस्था में आते ही इसकी शादी बलदरा के सद्धर्मानुरागी श्रावक श्री भावाजी के साथ सम्पन्न हुई। करीबन छः माह शादी के बीते ही होंगे कि श्री भावाजी का स्वर्गवास हो गया और श्रीमती मगनी बाई विधवा हो गई। विधवा होने के बाद दु:खद पारिवारिक परिस्थितियों में इन्होंने जिनधर्म के प्रति अपना अनुराग बढाना आरम्भ कर दिया। संयोग से आपको नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी के दर्शन हुए और आप साध्वी श्रीजी की धर्मवाणी, सत्संगत से बड़ी प्रभावित होकर इनसे आपने परिवार एवं ससुराल पक्ष की सहमति एवं अनुमति लेकर वि.सं. 1969 में दीक्षा स्वीकार कर ली। श्रीमती मगनी देवी के दीक्षित होने पर इनका नाम साध्वी श्री माणेकश्रीजी रखा गया। साध्वी श्री माणेक श्रीजी ने अपनी गुरूवर्या (गुरोणीजी) साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी के साथ विचरण कर खूब धर्म आराधना की और जन समुदाय को करवाई। आपने करीबन 45 वर्ष का निर्मल चरित्र चलते हुए वि.सं. 2009 में आपका गुड़ाबालोतान में समाधिपूर्वक स्वर्गवास हो गया।

नाकोड़ा तीर्थ में जीर्णोद्धार कार्य के गति पकड़ने, जगह-जगह से सामान आदि आने के साथ-साथ नाकोड़ा के आसपास के क्षेत्रों, मालाणी, सिवान्ची, गोडवाड़,

जालोरी पट्टी, अड़तालीसी आदि स्थानों से लोग भी नाकोड़ा तीर्थ के दर्शन करने आने लगे। यहां चल रहे जीर्णोद्धार कार्य में बालोतरा के श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरि जी का बराबर सहयोग मिलता रहा। आपने तीर्थ के प्रति लोगों के बढते रूझान को देखते हुए इस तीर्थ की व्यवस्था के लिये वि.सं. 1965 में बालोतरा संघ को एकत्रित किया और तीर्थ की व्यवस्था सम्भालने के लिये प्रेरित किया। बालोतरा जैन श्री संघ ने इस तीर्थ की देखभाल एवं व्यवस्था के लिये श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी की देखरेख में दांती श्री ताराचंद सागरमलजी कुंकुं (कुकड़) चौपड़ा और वेद मुता श्री बच्छराज हजारीमलजी को सौपा। इन सभी प्रकार की कार्यवाही से नाकोड़ा तीर्थ का जीर्णोद्धार करवा रही साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को बराबर अवगत करवाया जाता रहा।

सदियों से उपेक्षा, असामाजिक तत्वों के कोपभाजन एवं प्राकृतिक थपेड़ों से जीर्ण-शीर्ण नाकोड़ा तीर्थ का साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी द्वारा जीर्णोद्धार करवाने और बालोतरा के भावहर्षगच्छ के श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी के मार्गदर्शन में बालोतरा जैन श्री संघ के कुछ सेवा भावी श्रावकों द्वारा यहां की व्यवस्था सम्भालने के पश्चात् तीर्थ प्रगति एवं विकास की सीढियां चढने लगा। इस दौरान वि.सं. 1965 के दरम्यान जोधपुर के ख्याति प्राप्त ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता, विद्वान, पंडित एवं जैन धर्म के ज्ञाता यति श्री जवारमलजी इस तीर्थ के दर्शनार्थ आये। यहां की खराब स्थिति के बाद साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी द्वारा जीर्णोद्धार करवाये जाने से बड़े प्रभावित हुए और इस तीर्थ के विकास के लिये अपनी भावनाऐं बालोतरा के श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी एवं यहां देखभाल करने वाले बालोतरा के श्रावकों के सामने रखी। आपने श्रीपूज्यजी के साथ इस तीर्थ के विकास एवं विस्तार के साथ इसकी जानकारी जन-जन को हो यहां भगवान श्री पार्श्वनाथजी के जन्म दिवस पोष वदी दसमी को मेला आयोजित करने के लिये योजना बनाई। पोषवदी दसमी को प्रथम मेला वि.सं. 1965 में आयोजित करने के साथ मेले में अधिक से अधिक जैन श्रावक-श्राविका भाग लें इसके लिये यति श्री जवारमलजी ने जोधपुर जैन श्री संघ के श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित किया। वहां बालोतरा के अधिक से अधिक श्रावक-श्राविका नाकोड़ा में आयोजित किये जाने वाले मेले में भाग लेने हेतु श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी ने लोगों को आह्वान किया। मेला सफल बने इसके लिये जैन साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी एवं इनके साध्वी समुदाय ने भी जहां-जहां विहार किया वहां-वहां आपने भी नाकोड़ा में

भगवान श्री पार्श्वनाथजी के पोषवदी दसमी के जन्म दिवस पर अधिक से अधिक लोगों को मेले में भाग लेने के साथ-साथ नाकोड़ा तीर्थ यात्रा करने के लिये उपदेश देकर प्रेरित किया। ऐसी स्थिति में नाकोड़ा जैन तीर्थ पर प्रथम पोष वदी दसमी को भगवान श्री पार्श्वनाथजी के जन्म दिवस पर वि.सं. 1965 में मेले का शुभारम्भ हो गया।

जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी के जन्म महोत्सव पर पोष वदी दसमी पर आयोजित इस मेले की समुचित देखभाल जोधपुर के यति श्री जवारमलजी, बालोतरा के श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी के मार्गदर्शन में व्यवस्था समिति के श्री ताराचंद दांती, श्री सागरमलजी कुंकु चौपड़ा, वेदमुता श्री बच्छराज हजारीमलजी, श्री चिमनीरामजी आदि ने व्यवस्था की। जिसमें व्यवस्थापक श्री सरदारमलजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। लेकिन तीर्थ पर मेलार्थियों की सुविधा के लिये पर्याप्त एवं उचित कोटड़ियो (कमरों) आदि की व्यवस्था नहीं होते हुए भी मेलार्थियों ने तीर्थ की महिमा एवं तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी का जन्म महोत्सव मनाकर अपनी धार्मिक श्रद्धा के साथ आस्था व्यक्त की। वि.सं. 1965 के प्रथम मेले के अवसर पर सर्वश्री ताराचंदजी दांती, सागरमलजी कुकुं चौपड़ा, वेदपुता बच्छराज हंजारीमलजी, चिमनीरामजी ने व्यवस्था समिति में रहकर कार्य किया। इन सेवाभावी श्रावकों ने अपनी सेवा तीर्थ की नई व्यवस्था समिति वि.सं. 1987 में बनी उससे पहले वि.सं. 1986 तक इन्होंने अपनी 21 वर्ष तक सेवाएं दी।

नाकोड़ा तीर्थ पर पहली बार पोष वदी दसमी को आयोजित मेले में भाग लेने वाले जैन श्रावक-श्राविकाओं ने इसका अपने क्षेत्र में मेला समाप्ति के पश्चात तीर्थ की महिमा के साथ इसके जीर्णोद्धार की आवश्यकता का व्यापक प्रचार प्रसार किया। जिसके कारण जैन धर्मावलम्बियों का धीरे-धीरे इस तीर्थ के दर्शन करने की ओर आकर्षण बढ़ने लगा। उधर तीर्थ जीर्णोद्धारिका साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिये विभिन्न स्थानों को भ्रमण कर जैन श्री संघों को तीर्थ के प्रति जागरूक करने में बराबर जुटी रही।

श्री नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिये धन के साथ साधन सुविधाओं का अभाव खटकने लगा। ऐसी स्थिति में साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी के मार्ग दर्शन एवं बालोतरा के श्रीपूज्य श्री फतेन्द्रसूरिजी की दूरदर्शिता एवं बालोतरा जैन संघ के

आगेवान श्रावकों के साथ अन्य क्षेत्र के लोगों ने तीर्थ के जीर्णोद्धार हेतु धन की व्यवस्था को जुटाने के लिये विचार विमर्श करना शुरू किया। आखिर मालाणी, सिवान्ची में जैन धर्मावलम्बियों में होने वाली शादी के अवसर पर तीर्थ को धनराशि मिले इसके लिये वि.सं. 1960-61 में सिवान्ची, मलाणी आदि चवरी लाग देना स्वीकार किया।

जैन तीर्थ नाकोड़ा के जीर्णोद्धार के साथ-साथ इसके विकास विस्तार के लिये वि.सं. 1960-61 में सिवान्ची-मालाणी आदि क्षेत्रों में चंवरी लाग लगा दिया। जिसे इन क्षेत्रों में निवास करने वाले सभी जैन धर्मावलम्बियों ने हर्ष के साथ स्वीकार तो किया लेकिन इसकी पूर्ण समझ और व्यापक प्रचार के अभाव में कुछ ढील नजर आने लगी। इसके उपरान्त जब लोगों में इसकी जानकारी के साथ महत्व समझ में आने लगा तब चंवरी लाग एकत्रित करने में लोगों में उत्साह भी बढ़ने लगा। इस चंवरी लाग को व्यापक समर्थन वि.सं. 1965 में जब नाकोड़ा तीर्थ पर प्रथम बार भगवान श्री पार्श्वनाथजी के जन्मोत्सव मेले के रूप में मनाया जाने लगा तो इस चंवरी लाग की चर्चा ने न केवल जन जागरण किया अपितु लोगों को इसमें विशेष रूचि लेते भी देखा गया। परिणाम स्वरूप चंवरी लाग की साधारण रकम ने तीर्थ के जीर्णोद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका ही नहीं निभाई अपितु जैन धर्मावलम्बियों के दिल में तीर्थ के प्रति विशेष श्रद्धा एवं भक्ति के भाव पैदा कर दिये।

श्री पार्श्वनाथजी के जन्म कल्याणक पर यहां पोषवदी दसमी को मेला आयोजित होने के बाद साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी ने अपनी शिष्याओं के साथ विभिन्न स्थानों पर पद विहार कर जैन धर्मोपदेश देने के साथ-साथ नाकोड़ा तीर्थ की महिला का गुणगान करते हुए कहती थी कि इस तीर्थ के मूल नायक 23 वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ प्रभु एवं अधिष्टायक नाकोड़ा श्री भैरव देव को जो सदा अच्छे एवं बूरे समय में याद करेगा उसका कभी भी अनिष्ट नहीं होगा। इसके साथ नाकोड़ा तीर्थ के प्राचीन ऐतिहासिक महत्ता को बताते हुए इसके लिये जीर्णोद्धार हेतु जन समुदाय को बराबर प्रेरित किया जाने लगा। जिसके सुखद एवं संतोषजनक परिणाम के साथ-साथ आर्थिक सहयोग एवं सहानुभूति भी मिलने लगी। सभी प्रकार से सहयोग एवं सहानुभूति मिलने के बाद नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार का कार्य गति पकड़ने लगा। सर्वप्रथम नाकोड़ा जैन मंदिरों के चारों तरफ कांटों की बाड़ की हुई थी उसके स्थान

पर पक्की चार दिवारी का चौभिता बनाया गया और कुछ स्थानीय कर्मचारियों एवं यात्रियों के ठहरने की सुविधाओं के लिये कमरे आदि का निर्माण करवाया गया।

नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार की जगह-जगह अलख जगाती हुई साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी एवं इनकी शिष्य साध्वियों ने खूब प्रयास एवं परिश्रम किया। जिसके सुखद एवं संतोषजनक परिणाम दिखाई देने लगे। एक-एक करके कई दानदाता जुड़ने लगे और तीर्थ के श्रद्धालू भक्तों ने इसकी सेवा करने का बीड़ा उठा लिया। साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी की गुरूणीजी साध्वी श्री शणगारश्रीजी म.सा. के वृद्धावस्था होने के कारण इनकी सिद्धाचल-पलीताणा यात्रा करने की भावना प्रबल हो उठी तब साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी अपनी गुरूणीजी के साथ अपनी शिष्या साध्वियों को लेकर सिद्धाचल-पालीताणा की यात्रा करने की भावना के साथ नाकोड़ा में चातुर्मास पूर्ण कर विहार कर दिया। रास्ते की सुखद यात्रा के अनुभवों के साथ साध्वी मंडल सुखशातापूर्वक पालीताणा पहुंच गये।

पालीताणा-सिद्धाचल की यात्रा करने पर इन्हें अद्भूत अनुभूति हुई। इस बीच इन्हें खबर मिली कि तखतगढ (राजस्थान) के मूल निवासी भीमराज देवाजी गुप्त रूप से सांसारिक सुखों का परित्याग कर संयम अंगीकार करने के लिये पालीताणा आये हुए है। अचानक भीमराज देवाजी गुरूणीजी श्रीशरणारश्रीजी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी के दर्शन वन्दन करने आये। यह समय वि.सं. 1982 का है। तखतगढ के सुश्रावक एवं धर्मप्रेमी भीमराज देवजी के गुप्त रूप से दीक्षा लेने के समाचार सुनकर साध्वी मंडल को कुछ अटपटा सा लगा और साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने भीमराज देवाजी से धार्मिक आचार विचार के साथ दीक्षा सम्बन्धी चर्चा करनी आरम्भ की। तब भीमाजी ने खुलकर स्वयं द्वारा दीक्षा लेकर जैन धर्म की सेवा करने की बात कही। इस पर साध्वीजी ने फरमाया कि आपके विचार एवं भाव निश्चित रूप से उत्तम है, मैं आपकी भावनाओं का अन्तःकरण से सादर एवं सम्मान करती हूं लेकिन आप गुप्त रूप से दीक्षा लेने की अपेक्षा मालानी-मारवाड़ (राजस्थान) के जैन तीर्थ नाकोड़ा की सेवा करें तो आप निश्चित रूप से पुण्य अर्जित करेंगे। साध्वीजी ने जैन तीर्थ नाकोड़ा की प्राचीनता, इसकी धार्मिक महत्ता एवं वर्तमान में इसके होने वाले जीर्णोद्धार के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए इन्हें अपनी सेवाऐं नाकोड़ा तीर्थ को देने की भावभरी प्रार्थना की। साध्वीजी के मुख से जैन तीर्थ नाकोड़ की महिमा

के साथ इसके विकास हेतु किये जाने वाले जीर्णोद्धार की बात पर भीमाजी को सोचने को मजबूर कर दिया और साध्वी समुदाय के साथ भीमाजी जैन भगवती दीक्षा नहीं लेने का विचार कर तखतगढ़ आये। यहां आने पर साध्वी ने भीमाजी देवाजी को तत्काल नाकोड़ा का जीर्णोद्धार के कार्य की देखरेख के साथ अन्य व्यवस्थाऐं सम्भालने के लिये नाकोड़ा भेजा।

तखतगढ के मूल निवासी भीमराज देवाजी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. आदि के उपदेश एवं प्रेरणा से प्रभावित होकर नाकोड़ा आये। श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथजी आदि तीर्थंकरों के दर्शन के साथ नाकोड़ा तीर्थरक्षक अधिष्टायक श्री भैरवदेवजी के दर्शन कर इन्हें अद्भूत अनुभूति हुई और नाकोड़ा तीर्थ की सेवा करने का मानस बना लिया। इधर साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी भी अपने साध्वी मंडल के साथ पधार गई और भीमाजी को वि.सं. 1982 में नाकोड़ा तीर्थ के मुनिम का कार्यभार सम्भलाया। मुनिम का कार्य करते हुए भीमाजी देवाजी कई वर्षों तक नाकोड़ा ट्रस्ट मंडल में कई बार ट्रस्टी रहकर निःशुल्क सेवा देते हुए तीर्थ की अनुपम सेवा की जो चिरस्मरणीय रहेगी। यदि नाकोड़ा तीर्थ के विकास में कुछ नाम गिनाये जावेंगे तो उसमें तखतगढ के श्री भीमाजी देवाजी का नाम अवश्य प्रथम गिना जाने वाले नामों में आवेगा। आपने जीवन के अंतिम समय अर्थात् वि.सं. 2024 तक अर्थात् करीबन 42 वर्षों तक निःस्वार्थ सेवा करने का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। आपने अंतिम सांस भी जैन तीर्थ नाकोड़ा में ली। ये ऐसे निःस्वार्थ, सेवाभावी, धर्मानुरागी तीर्थ भक्त रहे हैं जिनकी स्मृति सदैव तीर्थ के इतिहास के सुनहरे पृष्ठों में अंकित रहेगी। तीर्थ की तत्कालिन व्यवस्था समिति ने इनके सम्मान में तीर्थ की मुख्य पेढी पर इनकी तस्वीर सेवाभावी के रूप में लगा रखी है जो सदियों तक आगुन्तकों को तीर्थ की सेवा करने की ओर प्रेरित करती रहेगी।

योग्य, दक्ष, अनुभवी, सेवाभावी मुनिम भीमाजी देवाजी के अतिरिक्त तीर्थ की व्यवस्थापक समिति में कई स्थानों के गणमान्य व्यक्ति जुड़ने लगे। परिणाम स्वरूप तीर्थ की दिनों दिन ख्याति बढने लगी और साध्वीजी की प्रेरणा से तीर्थ का जीर्णोद्धार होने के कारण जनसमुदाय का इस तीर्थ के प्रति लगाव के साथ आस्था एवं विश्वास बढ़ने लगा। धीरे-धीरे तीर्थ के व्यापक प्रचार-प्रसार और पोष वदी दसमी को प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले मेले के कारण जनसमुदाय का रूझान, झुकाव इस

तीर्थ की ओर तीव्र गति के साथ बढ़ने लगा। तीर्थ में यात्रियों के आने की संख्या में भी बढ़ोतरी होने लगी और यात्रियों की सुविधा के लिये साध्वीजी के मार्गदर्शन में यहां की व्यवस्थापक समिति ने साधन मुहैया करवाने भी आरम्भ कर दिये।

साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी के मार्गदर्शन में तीर्थ की विधिवत् व्यवस्था समिति के रूप में वि.सं. 1987 में कार्य आरम्भ कर दिया। इस समिति के जसोल निवासी एवं चीफ कोर्ट के प्रसिद्ध वकील श्री हिन्दुमलजी कोठारी को अध्यक्ष, पचपदरा के श्री गुलाचंदजी सालेचा को उपाध्यक्ष और बाड़मेर के सुविख्यात वकील श्री लक्ष्मणदासजी बोथरा को सेकेट्री बनाया गया और इनके अतिरिक्त सर्वश्री मोहनलाल सांवतमलजी, बंदामुथा-बालोतरा, नारायणदास भैरचंदजी जसोल, बस्तीरामजी बनाणी-बालोतरा, कालूराम अचलाजी पटवारी-बालोतरा, बच्छराज मानजी-जसोल, बख्शीराम गुणेशमलजी पचपदरा, सिरेमल दौलतरामजी सिवाना, प्रसादीराम भानाजी-बालोतरा, नगराज सुखराजजी मेहता जोधपुर, जसराजजी सेठ आहोर को ट्रस्टी बनाया गया। इस समिति ने तीन वर्ष तक कार्य किया। समिति ने अपने कार्यकाल में तीर्थ के विकास विस्तार के कई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करवाये।

वि.सं. 1987 (सन् 1930) में नाकोड़ा तीर्थ की व्यवस्था समिति साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से गठित हुई। जिसमें कई सदस्यों-ट्रस्टियों ने अपने जीवनकाल में तीर्थ से सम्बन्धित रहते हुए अमूल्य सेवाएं दी। कुछ ऐसे सदस्य (ट्रस्टी) के परिवार वालों ने समय-समय पर अपनी सेवाएं तीर्थ को दी। जो इस प्रकार रही।

प्रथम समिति के जसोल निवासी अध्यक्ष वकील श्री हिन्दुमल कोठारी रहे। इनके साथ पचपदरा के श्री गुलाबचंद सालेचा उपाध्यक्ष रहे। इनकी एवं इनके परिवार के सदस्य ने तीर्थ को अपनी सेवाएं इस प्रकार दी।

1. श्री गुलाबचंद हंजारीमलजी - सालेचा

उपाध्यक्ष	-	15.12.1930 से 12.12.1933
अध्यक्ष	-	12.12.1933 से 2.4.1937

श्री चम्पालाल गुलाबचंद जी सालेचा

सलाहकार	-	25.12.1978 से 22.12.1981

कोषाध्यक्ष	-	21.12.1981 से 17.12.1984
कोषाध्यक्ष	-	17.12.1984 से 16.12.1987
कोषाध्यक्ष	-	17.12.1987 से 12.12.1970
ट्रस्टी	-	12.12.1990 से 7.1.1994
कोषाध्यक्ष	-	8.1.1994 से 4.1.1997
ट्रस्टी	-	4.1.1997 से 29.4.2000
सलाहकार	-	29.4.2000 से 19.12.2002

2. श्री लक्षमणदास सागरमलजी बोथरा, बाड़मेर तीर्थ के प्रथम सेकेट्री बने और इनके परिवार की सेवाएं इस प्रकार रही।

सेकेट्री	-	15.12.1930 से 12.12.1933
सहा.सेकेट्री	-	13.12.1941 से 18.12.1943
सभापति	-	19.12.1943 से 15.12.1949
वाईस प्रेसीडेंट	-	15.12.1949 से 12.12.1952
सदस्य	-	12.12.1952 से 30.12.1953
सेकेट्री	-	30.12.1953 से 6.1.1956
सेकेट्री	-	7.1.1956 से 2.1.1959
मंत्री	-	3.1.1959 से एडहोक समिति
अध्यक्ष	-	25.12.1959 से 21.12.1962
अध्यक्ष	-	21.12.1962 से 11.12.1963
सदस्य	-	11.12.1963 से एडहोक समिति
चेयरमेन	-	28.12.1964 से 15.1.1965

श्री आसुलाल लक्षमणदासजी बोथरा- बाड़मेर

वाईस चेयरमेन	-	17.12.1965 से 15.12.1968
वाईस चेयरमेन	-	15.12.1968 से 30.12.1972
वाईस चेयरमेन	-	30.12.1972 से 20.12.1975
अध्यक्ष	-	29.12.1975 से 9.5.1976
सदस्य	-	9.5.1976 से 25.12.1978

श्री सोहनलाल आसूलालजी बोथरा- बाड़मेर

कोषाध्यक्ष	-	26.12.1978 से 22.12.1981
ट्रस्टी	-	21.12.1981 से 17.12.1984
ट्रस्टी	-	17.12.1984 से 16.12.1987
ट्रस्टी	-	2.1.1989 से 12.12.1990
कोषाध्यक्ष	-	13.12.1990 से 7.1.1994
ट्रस्टी	-	17.12.1995 से 4.1.1997
ट्रस्टी	-	4.1.1997 से 29.4.2000
कोषाध्यक्ष	-	30.4.2000 से 19.12.2002
ट्रस्टी	-	18.12.2003 से 2005

3. श्री कालूराम अचलदासजी पटवारी-बालोतरा तीर्थ की प्रथम व्यवस्था समिति के सदस्य (ट्रस्टी) रहे और इनके परिवार की सेवाएं इस प्रकार रही।

श्री कालूराम अचलदासजी पटवारी- बालोतरा

सदस्य (ट्रस्टी)	-	15.12.1930
सदस्य (ट्रस्टी)	-	12.12.1933 से 2.4.1937

श्री कानमल कालूरामजी पटवारी-बालोतरा

सदस्य (ट्रस्टी)	-	15.12.1949 से 12.12.1952
सदस्य (ट्रस्टी)	-	12.12.1952 से 30.12.1953
सदस्य (ट्रस्टी)	-	30.12.1953 से 6.1.1956
सदस्य (ट्रस्टी)	-	7.1.1956 से 2.1.1959
सदस्य (ट्रस्टी)	-	21.12.1962 से 11.12.1963
सदस्य (ट्रस्टी)	-	17.12.1965 से 15.12.1968
सदस्य (ट्रस्टी)	-	15.12.1968 से 30.12.1972
सदस्य (ट्रस्टी)	-	30.12.1972 से 20.12.1973
सदस्य (ट्रस्टी)	-	29.12.1975 से 25.12.1978

श्री गणपतचंद कानमलजी पटवारी- बालोतरा

ट्रस्टी	-	17.12.1984 से 16.12.1987

सलाहकार	-	16.12.1987 से 12.12.1990

4. श्री प्रसादीराम भानाजी ढेलरिया-बालोतरा

तीर्थ की प्रथम व्यवस्था समिति सदस्य (ट्रस्टी) रहे और इनके परिवार की सेवाएं इस प्रकार रही।

सदस्य	-	15.12.1930 से 12.12.1933
सदस्य	-	13.12.1941 से 19.12.1943
सदस्य	-	30.12.1953 से 6.1.1956
कोषाध्यक्ष	-	7.1.1956 से 2.1.1956
सलाहकार	-	28.12.1964 से 17.12.1965
सलाहकार	-	17.12.1965 से 15.12.1968

श्री चन्दनमल प्रसादीरामजी ढेलरिया- बालोतरा

ट्रस्टी	-	4.1.1997 से 29.4.2000

5. श्री नारायणदास भैरचंदजी- जसोल तीर्थ के प्रथम व्यवस्था समिति के सदस्य (ट्रस्टी) रहे और इनके परिवार की सेवाएं इस प्रकार रही।

श्री नारायणदास भैरचंदजी- जसोल

सदस्य	-	15.12.1930 से 12.12.1933

श्री केवलचंद नारायणदासजी- जसोल

सदस्य	-	21.12.1981 से 17.12.1984
ट्रस्टी	-	17.12.1984 से 16.12.1987
ट्रस्टी	-	2.1.1989 से 12.12.1990
ट्रस्टी	-	12.12.1990 से 7.1.1994
उपाध्यक्ष	-	8.1.1994 से 4.1.1997
ट्रस्टी	-	9.1.1997 से 29.4.2000
सलाहकार	-	29.12.2002 से 2005

6. श्री बस्तीराम चौधरी- सिवाना तीर्थ के द्वितीय व्यवस्था समिति के सदस्य (ट्रस्टी) रहे और इनके परिवार की सेवाएं इस प्रकार रही।

श्री बस्तीराम चौधरी- सिवाना

ट्रस्टी	-	12.12.1933 से 2.4.1937

श्री शंकरलाल चौधरी- सिवाना

सलाहकार	-	12.1.1991 से 7.1.1994

श्री सोहनलाल चौधरी- सिवाना

ट्रस्टी	-	4.1.1997 से 29.4.2000
सलाहकार	-	29.4.2000 से 19.12.2002
उपाध्यक्ष	-	29.12.2002 से 2005

वि.सं. 1990 में तीर्थ की दूसरी बार नई समिति बनाई। जिसके अध्यक्ष श्री गुलाबचंद सालेचा-पचपदरा, सेकेट्री-श्री लक्ष्मणदासजी बोथरा वकील बाड़मेर को बनाया गया। जिसमें सर्वश्री कालूराम अचलाजी पटवारी बालोतरा, बस्तीरामजी चौधरी सिवाना, मिश्रीमलजी मूथा मोकलसर, सिरेमल हंसाजी खण्डप, लक्ष्मणदास जुगराजजी, किशनरामजी भंसाली जोधपुर, सांकलचन्द किस्तुरचंदजी जालोर, चुन्नीलालजी मांडवला, चन्दनमल जोगीदास जी आहोर, सुरतसिंह खूमाजी कवराडा एवं छोगालाल नथाजी तखतगढ़ ने भी तीन वर्षों तक नाकोड़ा तीर्थ में साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी के तीर्थ के जीर्णोद्धार के साथ अंजनशलाका प्रतिष्ठा आदि कई धार्मिक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए तीर्थ को उन्नति की ओर आगे बढ़ाने का भरपूर प्रयास किया।

तखतगढ में चातुर्मास हेतु विराजमान साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी समय को देखते हुए और नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार से संतुष्ट होकर आपने मुनिम भीमाजी सहित व्यवस्थापक समिति के आगेवान सेवाभावी लोगों को यहां अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित करने के निर्देश दिये। नाकोड़ा के व्यवस्थापक भीमाजी तत्काल जालोर पहुंचे और साध्वीजी से अनुरोध किया कि आप नाकोड़ा तीर्थ पर अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन करवा रही है यह बहुत अच्छी बात है लेकिन अंजनशलाका प्रतिष्ठा के आयोजन के लिये साधन सुविधाओं का अभाव है। इस शुभ कार्य के लिये उपयुक्त धनराशि का जुगाड़ भी नहीं है। ऐसी स्थिति में तीर्थ की समिति कैसे व्यवस्था करें। इस पर साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने आर्थिक

जुगाड़ जुटाने के लिये जैन धर्मावलम्बियों को उपदेश देकर प्रेरित किया। आप सभी साध्वियों के साथ इस कार्य के लिये सिवाना पधारी लेकिन आशाजनक एवं उपयुक्त रकम एकत्रित नहीं होने पर साध्वी श्री प्रसन्न श्रीजी आदि को पुनः तखतगढ़ चांदराई, कबराड़ा भेजा और यहां आर्थिक सहयोग प्राप्त करने के लिये जैन श्री संघों से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास किया। कबराड़ा के श्री सुरतानजी खुमाजी ने तत्काल पन्द्रह हजार और बलदरा के श्री कपूरचंदजी हकमाजी व हजारीमलजी ने अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा के लिये दस-दस हजार रूपये देने की घोषणा की और तखतगढ संघ ने अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा की अन्य सारी व्यवस्थाऐं सम्भालने की स्वीकृति दी।

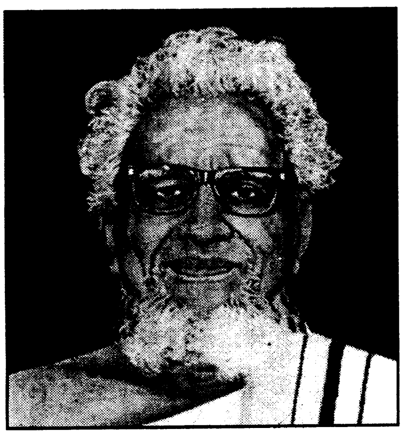

पन्यास श्री हिम्मतविजयजी
(आचार्य श्री हिमाचलसूरीश्वरजी म.सा.)

नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार के बाद पहली अंजनशलाका प्रतिष्ठा की तैयारी करने के लिये साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने कई साध्वियों के साथ वि.सं. 1990 का नाकोड़ा में चातुर्मास भी किया। अंजनशलाका प्रतिष्ठा की जोरदार युद्ध स्तर पर सुगमता से सुलभत साधन सुविधाओं के साथ तैयारियां आरम्भ की जाने लगी। इस प्रतिष्ठा को सम्पन्न करवाने के लिये आगमादिशारछवेत्ता अनुयोगाचार्य प.पू. स्व. पन्यास जी म. श्री हितविजयजी गणिवर्य श्री के पट्टधर ज्योति शिष्पादि शास्त्र निष्णात् पूज्य पन्यास महाराज श्री हिम्मतविजय जी म.सा. (आचार्य श्री हिमाचल सूरीश्वरजी म.सा.) पू. श्री गुमान विजयजी म.सा. की पावन निश्रा में अंजनशलाका

का प्रतिष्ठा महोत्सव की भव्य पैमाने पर तैयारियां आरम्भ की गई। इस शुभ एवं मंगल अवसर पर पू. आचार्य श्री वल्लभ सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पू.पन्यास जी म.पू. श्री दानविजयजी म., पू. गुणविजयजी आदि भी उपस्थित रहे। साध्वी समुदाय में तीर्थ पर अंजनशलाका का प्रतिष्ठा करवाने का उपदेश देने वाली पूज्य साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म. एवं आप श्रीजी की शिष्या प्रशिष्या पू. श्री माणक श्रीजी म., पू. श्री धनश्रीजी म., पू. श्री चेतना श्रीजी म., पू. प्रसन्न श्रीजी म., पू. श्री करणी श्रीजी म., पू. नवल श्रीजी म. आदि भी उपस्थित रही।

अंजनशलाका का प्रतिष्ठा की भव्य पैमाने पर तैयारियां आरम्भ की गई। तीर्थ को उपलब्ध साधन सुविधाओं से सजाया संवारा गया। इस धार्मिक आयोजन में भाग लेने आने वाले श्रद्धालू भक्तों-यात्रियों की सुविधाओं के लिये माकूल प्रबन्ध किये गये। प्रतिष्ठा की तैयारियों को देखकर अजैन लोगों ने भी तीर्थ की सहकार देना शुरू किया। चारों तरफ नाकोड़ा तीर्थ पर अंजनशलाका प्रतिष्ठा की चर्चा होने लगी और कई धार्मिक आस्था एवं विश्वास रखने वाले श्रद्धालू लोग इसमें जुड़ने लगे। परिणाम स्वरूप नाकोड़ा तीर्थ यात्रियों, दर्शकों, आगुन्तकों, भक्तों की आवाजावी का केन्द्र बन गया।

नाकोड़ा तीर्थ पर सम्भवतः करीबन चार सौ वर्षों के बाद अंजनशलाका का प्रतिष्ठा के आयोजन पर नवकारसियों का लाभ लेने के लिये भाग्यशालियों में आपसी बन्धुत्व-भाईचारे के साथ लाभ लेने की होड़ लग गई। यहां आयोजित नवकारसियों में सभी जैन धर्मावलम्बी एकत्रित होने का था लेकिन 17 वीं शताब्दी में जैन संखलेचा गोत्र पर स्थानीय शासक पुत्र के अव्यवहार के कारण नाकोड़ा का परित्याग कर जैसलमेर जाकर बसने के बाद संखलेचा गोत्र ने नाकोड़ा का जलपान आदि का त्याग करने का संकल्प ले लिया। इस संकल्प के कारण नाकोड़ा में आयोजित होने वाली अंजनशलाका प्रतिष्ठा पर नवकारसियों में संखलेचा जैन गोत्र का भाग नहीं लेना एक गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गई। प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजन में व्यवधान खड़ा हो गया।

जैन संखलेचा गोत्र को मनाने का बहुत प्रयास किया गया तब मालूम हुआ कि 17 वीं शताब्दी में नाकोड़ा तीर्थ क्षेत्र के वीरमपुर में निवास करने वाले करीबन 2700 जैन परिवारों में शंखवालेचा (संखलेचा) गोत्र के सेठ मालाशाह निवास करते

थे। इनके गोत्र में धनाढ्य जो अनगिनत धन सम्पदा के स्वामी धन कुबेर के रूप में अपनी प्रसिद्धि के साथ पहचान बनाये नानकजी सपरिवार रहते थे। अपने मित्रों आदि के साथ आप स्थानीय जलाशय में जलक्रिडा करने के लिये गये। आपके सिर पर लम्बे बालों की चोटी अर्थात् सिरशिखा थी। जलाशय में जल क्रिड़ा करने के बाद आप अपनी लम्बी चोटी को सुखाकर संवार रहे थे कि स्थानीय नगराधिपति शासक के पुत्र राजकुमार ने आपकी लम्बी चोटी देखकर मोहित हो गये और सेठ नानकजी की चोटी का अपने घोड़े पर बैठने वाली मखियों को उड़ाने के लिये झवरी बनाने की बात कही। जो नानक सेठ को अत्यधिक गम्भीरता के साथ चुभी। इन्होंने भविष्य की ओर झांकते हुए सोचा कि यदि यह राजकुमार जब कभी शासक बनेगा तो बड़ा अनर्थ कर सकता है क्योंकि इनके विचार एवं सोच अच्छे नहीं है। ऐसा सोचते हुए अपने परिवार, जातिगोत्र, जैन धर्मावलम्बियों के हितों को ध्यान में रखते हुए वीरमपुर छोड़ने का मानस बना दिया।

वीरमपुर-नाकोड़ा छोड़ने से पूर्व आपने अपने परिवार, परिजनों, जाति गोत्र भाईयों, जैन बन्धुओं से आंतरिक गुप्त मंत्रणा कर जैसलमेर क्षेत्र में रहने के साथ यहां आवासीय भवन बनाने की बात की। यह सब कार्य गोपनीय रूप से चल रहा था, जब जैसलमेर क्षेत्र में आवासीय भवन बनने की सूचना मिलते ही सेठ नानकशाह आदि सभी जैन बन्धुओं ने वीरमपुर-नाकोड़ा के शासक से तीर्थ यात्रा पर जाने की चर्चा की और यात्रा मार्ग में सुरक्षा के लिये अपने व्यक्तियों अर्थात् जाबता को भेजने का आग्रह किया। इन लोगों ने शासक को जाबता पर होने वाले खर्च को वहन करने की बात भी कही। स्थानीय शासक ने जैन धर्मावलम्बियों की यात्रा सुविधा के लिये करीबन 500 सुभट सैनिकों की व्यवस्था कर दी और सेठ नानकसेठ आदि यात्रा के बहाने वीरमपुर छोड़कर चल दिये। इन जैन धर्मावलम्बियों द्वारा वीरमपुर सदा-सदा के लिये छोड़ने की भनक स्थानीय शासक को नहीं होने दी।

जैसलमेर की यात्रा पर वीरमपुर नाकोड़ा के जैन धर्मावलम्बी रवाना हुए तब इनके साथ करीबन एक हजार बैलगाड़ियों, इतने ही ऊंट, सात सौ घोड़े, तीन हजार से अधिक जैन, कुछ जैनेतर भी जैसलमेर तीर्थ यात्रा के लिये रवाना हुए। जैसलमेर सकुशल पहुंचने के बाद लोद्रवा श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ के दर्शन करने संघ के साथ पहुंचे। यहां पहले से अपने लिये और अन्य लोगों के लिये बनाये

आवासीय भवनों में निवास करना शुरू कर दिया। जब संघ के साथ अन्य जैनेतरों ने सेठ नानकशाह आदि को वापिस वीरमपुर-नाकोड़ा चलने का आग्रह किया तब इन्होंने चोटीवाली घटना बताते हुए वापिस चलने के लिये मना कर दिया। वीरमपुर से लोद्रवा जैसलमेर यात्रा पर आने से पूर्व सेठ नानकशाह ने वीरमपुर स्थाई रूप से छोड़ने के कारण सहित एक शिलालेख जिसमें लिखवाया कि 'संखलेचा गोत्र के हमारे कोई वंशज इस गांव का पानी तक नहीं पियेंगे।' गुप्त रूप से वीरमपुर में से कुछ दूरी पर इस आशय से लगवा दिया कि इसकी तत्काल.भनक स्थानीय शासक आदि को नहीं पड़े।

वीरमपुर के जैन धर्मावलम्बियों द्वारा निकाले यात्रा संघ से वापिस लौटे लोगों ने वीरमपुर के शासक को वस्तुस्थिति बताई तो उन्होंने अपने राजकुमार से जानकारी करने पर चोटी वाली चर्चा सामने आई। शासक ने अपने राजकुमार को खूब जोर की फटकार देते हुए कहा कि तुम जैसलमेर जाकर सेठ नानकशाह से माफी मांगकर उन्हें वापिस वीरमपुर ले आवो। अन्यथा तुम वापिस आकर मुझे मुंह नहीं दिखाना। तुम्हारी इस बचकानी हरकत के कारण वीरमपुर उजड़ने लगा है। राजकुमार अपने कुछ चुने हुए व्यक्तियों के साथ जैसलमेर के लिये रवाना हुए। सेठ नानकशाह से अपने किये पर क्षमा मांगते हुए वापिस वीरमपुर चलने का आग्रह किया। जिसे सेठों ने स्वीकार नहीं किया। इस पर राजकुमार ने भी स्थाई रूप से जैसलमेर में रहना आरम्भ कर दिया।

जैन संखलेचा गोत्र द्वारा तब से वीरमपुर-नाकोड़ा का पानी पीने का त्याग करने के बाद जब कभी भी कोई संखलेचा गोत्र का व्यक्ति नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा पर आता था तब अपने साथ भोजन एवं पानी की दिवड़ी भरकर लाते थे। जब पानी की कमी होती थी तब जसोल जाकर पानी लाते थे। इस प्रतिज्ञा के कारण नाकोड़ा में होने वाली अंजनशलाका का प्रतिष्ठा में संखलेचा गोत्र की उपस्थिति के बाद पानी आदि नहीं पीने के कारण नवकारसी में व्यवधान होने लगा। इस गम्भीर समस्या को मिटाने के लिये वीरमपुर (जो जैन धर्मावलम्बियों के छोड़ने के बाद मेवानगर के रूप में पहचाने जाने लगा।) अर्थात् मेवानगर के जागीरदारों, पू.पन्यास श्री हिम्मतविजय जी (आचार्य श्री हिमाचल सूरीश्वरजी), पू. साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी म. एवं इनकी शिष्याएं प्रशिष्यियों आदि के साथ तीर्थ की व्यवस्थापक समिति के सदस्यों ने

संखलेचा गोत्र को मनाने का खूब प्रयास एवं प्रयत्न किये लेकिन संखलेचा गोत्र के लोग अपने पुरखों के संकल्प प्रतिज्ञा पर अडिग रहते हुए नाकोड़ा का पानी तक ग्रहण करने को तैयार नहीं हुए।

नाकोड़ा तीर्थ की प्रतिष्ठा के आयोजन में आये इस व्यवधान को सदा-सदा के लिये मिटाने के लिये पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने अष्टम तप का पच्चक्खाण लेते हुए मेवानगर के जागीरदारों, पू. पन्यास श्री हिम्मत विजयजी म.सा. आदि साधु-साध्वियों, तीर्थ व्यवस्था समिति के सदस्यों, प्रतिष्ठा में भाग लेने को एकत्रित हुए सभी श्रावक-श्राविकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब तक सम्पूर्ण जैन श्री संघ जिसमें संखलेचा गोत्र भी सम्बन्धित है तीर्थ की अंजनशलाका प्रतिष्ठा में भाग नहीं लेंगे मैं बराबर उपवास रखूंगी। यदि इस बीच मेरे प्राण भी चले जाय तो भी इसकी चिन्ता नहीं है। यदि श्री जिनेश्वर प्रभु का उपासक प्रतिष्ठा महोत्सव से बाहर रहता है तो मेरा जीना बेकार है। यदि फिर यहां धार्मिक दृष्टि से होने वाले मांगलिक कार्यक्रम भी अधूरे ही है।

साध्वीश्री सुन्दर श्रीजी म.सा. की इस प्रतिज्ञा की चर्चा चारों ओर चर्चित होने लगी। सभी संखलेचा गोत्र के लोगों को मनाने के लिये प्रयत्न एवं प्रयास करने शुरू कर दिये। इस दौरान मेवानगर के जागीरदारों में ठाकुर श्री दानसिंह एवं इनके चाचा श्री मानसिंह भी संखलेचा गोत्र को मनाने के लिये नाकोड़ा में पू. पन्यास श्री हिम्मतविजय (आचार्य श्री हिमाचल सूरीश्वरजी) एवं पू. साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. व्यवस्था समिति के सदस्यों आदि के पास आये और संखलेचा गोत्र को मनाने के प्रयत्न करते हुए कहा कि हमारे पूर्वजों की मजाक के कारण आपने नाकोड़ा का अन्न-जल त्यागा है अब हम सभी आपसे आग्रह करते है कि आप पुरानी गुजरी बात को भूल जाए और यहां का अन्न-पानी ग्रहण करे। स्थानीय जागीरदारों-ठाकुरों की बात पर गुरूणीजी ने भी संखलेचा गोत्र से कहा कि अब आप लोग भी जागीरदारों की तरह दिल बड़ा रखते हुए अपने पुरखों के पूर्व में नाकोड़ा का पानी त्यागने के संकल्प को भूल जाय और बड़ा दिल रखकर नाकोड़ा की प्रतिष्ठा में तन, मन एवं धन से सहयोग दिरावे।

साधु-साध्वियों के समझाने पर संखलेचा गोत्र वाले मान गये और इस पर जागीरदारों-ठाकुरों ने इनका माला पहनाकर स्वागत किया वहां संखवाल गोत्र के

लोगों ने उपस्थित राजपूत ठाकरों को माला पहनाकर अपने पुराने संकल्प को छोड़ दिया। उस समय अपार खुशी के साथ सभी श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथजी एवं अधिष्टायक श्री नाकोड़ा भैरवदेवजी की जय-जयकार करने लगे। इस प्रतिष्ठा के अवसर पर संखलेचा गोत्र ने 501 रूपये का चढावा लिया और यहां का अन्न-जल ग्रहण करते हुए पुराने पानी त्यागने वाले शिलालेख को हटा दिया। इस अवसर पर ठाकुरजी ने दादाजी की छतरी के दोनों तरफ और गौशाला के लिये भूमि तीर्थ को भेंट की। इस पर ठाकुरजी का हर्षोल्लास के साथ बहुमान किया गया।

संखलेचा गोत्र के जैन बन्धुओं द्वारा नाकोड़ा के त्यागे जल संकल्प को छोड़ने के पश्चात् नाकोड़ा में आयोजित अंजनशलाका प्रतिष्ठा बड़े ही हर्षोल्लास एवं आनन्द के साथ सम्पन्न हुई। इस प्रतिष्ठा के अवसर पर स्वयं साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. जब भी नाकोड़ा प्रवास किया तब प्रतिदिन नाकोड़ा अधिष्टायक श्री भैरवदेवजी के श्री पार्श्वनाथ जी के मंदिर के प्रवेश द्वार के बाहर (जहां वर्त्तमान श्री हनुमान जी की मूर्ति है) बने श्री भैरवजी के स्पूत के आगे घंटो तक ध्यान, आराधना, उपासना आदि करती रही। नाकोड़ा तीर्थ में पन्यास श्री हिम्मतविजयजी (आचार्य श्री हिमाचल सूरिजी) की पावन निश्रा एवं साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी की प्रेरणा से होने वाली दीक्षा के अवसर पर स्वयं नाकोड़ा अधिष्टायक श्री भैरवदेवजी ने साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को स्वप्न में संकेत देकर अपने स्पूत को जो तीर्थ के मूलनायक श्री पार्श्वनाथ मंदिर के प्रवेश द्वार के बाहर था उसे मंदिर में विराजमान करने को कहा। इस पर साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने तीर्थ में प्रतिष्ठा के अवसर पर उपस्थित साधु-साध्वियों की उपस्थिति में शुभ मुहूर्त एवं मंगल वेला में श्री नाकोड़ा भैरवदेव जी के स्पूत का उथापन विधि विधानानुसार किया और उसी स्पूत को श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथजी के मंदिर के मूल गम्भारे के बाहर गूढ मंडप के दाहिनी ओर प्रतिष्ठित किया गया। यह घटना वि.सं. 1990 की है। भैरवदेवजी के स्पूत की जगह अर्थात् वीर का स्थान खाली नहीं रहे आपने तत्काल श्री हनुमानजी की मूर्ति स्थापित कर दी। जो आज भी श्री पार्श्वनाथजी मंदिर के प्रवेश द्वार के बाहर दाहिनी ओर के क़क्ष में हाथी के पीछे एक प्राचीन गोख में विद्यमान है। इसी पिण्डाकार स्पूत को मूर्ति स्वरूप प्रदान करने के लिये पन्यास श्री हिम्मतविजयजी (आचार्य श्रो हिमाचलसूरिजी) एवं मुनिम श्री भीमाजी देवाजी को श्री भैरवदेवजी ने स्वप्न में मूर्ति स्वरूप का संकेत दिया। इस

स्वप्न के आधार पर पन्यास श्री हिम्मतविजयजी, मुनिम श्री भीमाजी देवाजी एवं सोमपुरा श्री किस्तुराजी ने स्वप्न के संकेत आधार पर श्री भैरवजी के पिण्डाकर स्वरूप को मुखारबिन्द का स्वरूप दिया। जिसकी प्रतिष्ठा भी नाकोड़ा के जीर्णोद्धार के बाद वि.सं. 1991 माघ शुक्ला 13 को होने वाली प्रतिष्ठा के अवसर पर की गई।

प्रतिष्ठा के अवसर पर साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने अपने तपागच्छ गुरू अनुयोगाचार्य श्री हित विजयजी म.सा. की प्रतिमा।

इस प्रतिष्ठा के अवसर पर सगसा के श्री लखमीचंद जी जोधाजी, रायथल के जीवराजजी मूलचंदजी, मोडवाड़ा के कपूरचंदजी हजारीमलजी, मूंगड़ा के मिश्रीमलजी जुहारमलजी, गढ सिवाना के श्री पन्नाजी रूपचंदजी एवं जालोर के श्री सांकलचंदजी आईदानजी ने इस नवकारसियों करने का लाभ लिया। प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर तीर्थ की व्यवस्था समिति की ओर से नवकारसियों का लाभ लेने वाले भाग्यशालियों को साधु-साध्वियों अर्थात् समस्त श्री जैन संघ की उपस्थिति में साफा चूंदड़ी से बहुमान किया गया।

आपके शिष्य पन्यास श्री हिम्मत विजयजी ने वि.सं. 1991 माघ शुक्ल 13 को मलादर के शाह नोपोजी एवं गुड़ा के श्री अचलाजी द्वारा तैयार करवाई। मूर्ति की प्रतिष्ठा मेवानगर में करवाई गई। मूर्ति वर्त्तमान समय में नाकोड़ा तीर्थ के मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी के मंदिर में दाहिनी ओर बनी श्री श्यामला पार्श्वनाथजी मंदिर की साल में एक गोख में विराजमान है। जिस पर शिलालेख इस प्रकार है।

॥ सं. 1991 माघ शुक्ला 13 श्रीमद्प्राचीन अनुयोगाचार्य श्री हितविजयजी महाराज की मूर्ति करापितं मलादर वास्तव्य शा. नेपाजी तथा गुड़ा वास्तव्य शा.अचलाजी की तरफ से दर्शनार्थ प्रतिष्ठितं आपका ही शिष्य पं. हिम्मतविजयेन गुरू भक्त्यर्थ स्थापित॥ श्री मेवानगरे श्रीरस्तु॥ॐ॥

अनुयोगाचार्य श्री हितविजयजी की प्रतिमा कक्ष के बाहरी भाग अर्थात् गोख के आने के स्थान पर दाहिनी तरफ प.साध्वी श्री स्वरूप श्रीजी एवं बांये तरफ पू.साध्वी श्री शणगार श्रीजी की चरण पादुकाऐं भी वि.सं. 1991 माघ शुक्ला 3 शनिवार को मेवानगर में होने वाली प्रतिष्ठा स्व. अनुयोगाचार्य श्री हितविजयजी के शिष्य पन्यास श्री हिम्मतविजयजी ने साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी की प्रेरणा से करवाई। इन दोनों चरण पादुकाओं पर इस प्रकार लेख है।

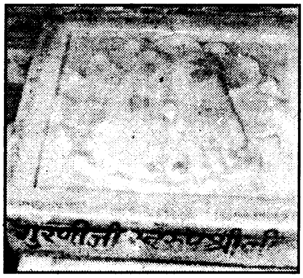

गुरणीजी स्वरूपश्रीजी की चरण पादुका

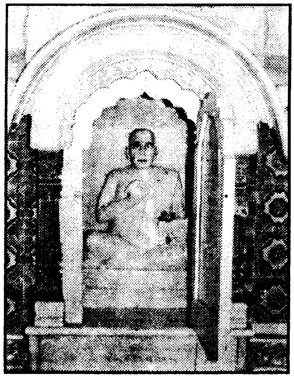

पन्यास श्री हितविजयजी म.सा. की छतरी

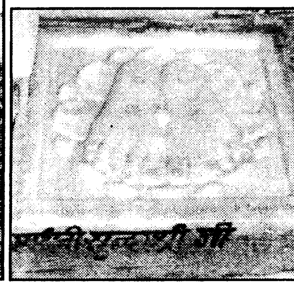

साध्वी सुन्दरश्रीजी की चरण पादुका

साध्वी श्री स्वरूपश्रीजी-चरण पादुका

॥ संवत् 1991 रा माघ शु. 13 शनिवारे गुरणीजी स्वरूपश्रीजी चर्ण पादुका साध्वी सुन्दरश्री स्वपरदर्शनार्थ कारापितं तपागच्छाधिप अनुयोगाचार्य श्रीमद् स्वर्गस्थ गुरूदेव पं. हितविजयजी महाराज के शिष्य श्री पं. हिम्मतविजययेन प्रतिष्ठितं मेवानगरे लि. पं. चतुसागर

साध्वी श्री शणगारश्रीजी चरण पादुका

संवत् 1991 माघ शुक्ल 13 शनिवारे गुरणीजी श्री सणगारश्रीजी चर्ण पादुका साध्वी सुन्दरश्री स्वपरदर्शनार्थ करापितं तपागच्छाधिप अनुयोगाचार्य श्रीमद् स्वर्गस्थ गुरूदेव श्री पं. । हितविजयजी महाराज के शिष्य पं. हिम्मतविजयेन प्रतिष्ठितं श्रीमेवानगरे लि.पं. चतुरसागर पीपाड़ निवासी.

नाकोड़ा में पूर्ण ठाट-बाट से वि.सं. 1991 माह सुदि 13 तदनुसार फरवरी 1935 में प्रतिष्ठा सम्पन्न कर साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी अपनी शिष्य प्रशिष्यों के साथ गढ सिवाना के लिये विहार किया और यहां अपना चातुर्मास कई उपलब्धियों के साथ सम्पन्न किया। सिवाना जैन श्री संघ ने भी नाकोड़ा तीर्थ के लिये कई बिस्तरों के साथ हर प्रकार की मदद दी।

सिवाना से पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. अपनी शिष्य प्रशिष्यों के साथ तखतगढ़ पधारी। यहां आप सभी का अभूतपूर्व स्वागत सत्कार किया गया। यहां के श्रावक श्री केसरीमलजी अचलाजी एवं इनकी धर्मपत्नी श्रीमती मगी बाई पू. गुरूणीजी

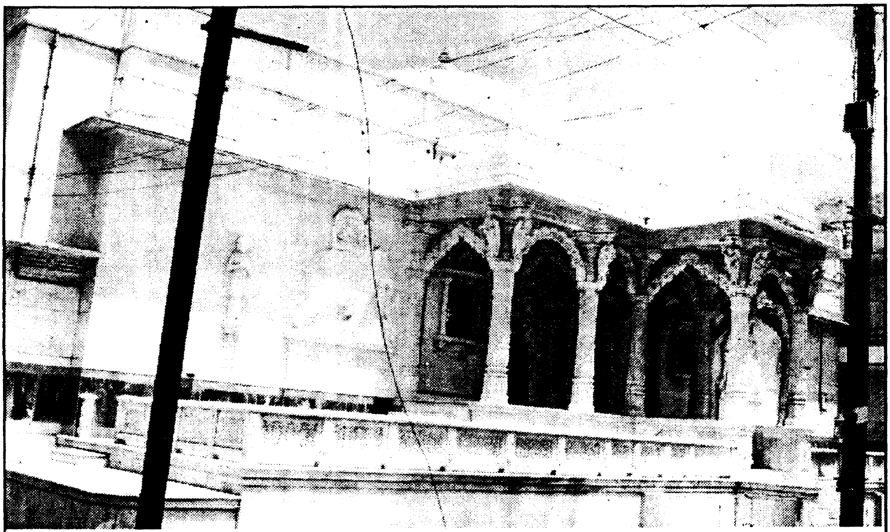

तखतगढ का श्री आदेश्वर भगवान का बड़ा प्राचीन मंदिर

एवं पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी के प्रमुख श्रद्धालू भक्त थे। वे इनकी हर आज्ञा को स्वीकार करने में कदापि पीछे नहीं रहते थे। साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने धार्मिक प्रवचन के दौरान ब्रह्मचर्य व्रत का सविस्तार से न केवल वर्णन किया अपितु इसकी जीवन में महत्ता पर सारगर्भित प्रवचन दिया। जिसका प्रभाव यह हुआ कि श्रावक श्री केसाजी अचलाजी (श्री केसरीमलजी) एवं इनकी धर्मपत्नी श्रीमती मगी बाई पर गहरा प्रभाव पड़ा और दोनों ने बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ आजीवन तक ब्रह्मचर्य व्रत पालने का व्रत धारण किया। उस समय श्री केसरीमलजी के सर्वश्री सूरजमलजी, रखनीचंदजी, फूलचंदजी, भबुतमलजी एवं बाबूलालजी पांच पुत्र थे।

साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी ने नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिये आवश्यक सामग्री के साथ धन एकत्रित करने हेतु महिलाओं को अगवानी करने का एक विशेष अभियान आरम्भ किया। आपने महिलाओं को कहा कि नाकोड़ा तीर्थ के उद्धार हेतु आप अपने परिजनों को प्रेरित करें ताकि वे इस तीर्थ के लिये आगे आकर सहयोग करें। महिलाओं को उद्बोधित करते साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी कहती थी कि यदि महिलाएं स्वयं नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिये अगवानी करें तो तीर्थ के लिये बहुत कुछ सहयोग मिल सकता है। साध्वीजी के महिलाओं को प्रेरित करने का प्रभाव यह रहा कि कई महिलाओं ने अपने परिवार के पुरुषों को नाकोड़ा जीर्णोद्धार

के पुनित कार्य में भागीदार बनने की योजना बनाई और मुक्तहस्त से दान देना आरम्भ किया। तखतगढ के श्री केसरीमलजी अचलाजी की धर्मपत्नी श्रीमती मगीबाई तो साध्वीजी के प्रवचनों से इतनी अधिक प्रभावित हुई कि इन्होंने अपने परिवार के पुरुषों को नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार के लिये दिल से सहयोग करने के लिये तैयार ही नहीं किया अपितु यथासम्भव सहयोग भी दिया।

महिलाओं में नाकोड़ा तीर्थ की महिमा, वहां के अधिष्टायक श्री भैरवदेवजी के चमत्कार एवं तीर्थ के जीर्णोद्धार की आवश्यकता ने एक विशेष जगह बनाली। परिणामस्वरूप महिलाएं जीर्णोद्धार में सहयोग करने को आगे आई। जिससे पुरुष वर्ग में नाकोड़ा तीर्थ के उद्धार की चेतना जाग उठी और सभी सहयोग देने के लिये आगे आये।

सुश्रावक श्री केसरीमलजी स्वयं सपरिवार के साथ पू. साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. के दर्शन वन्दन प्रतिदिन करते थे। इनकी गुरूवर्या के प्रति गहरी आस्था रही। यद्यपि उस समय श्री केसरीमलजी की आर्थिक स्थिति अधिक सुदृढ़ नहीं थी। रोज कमाकर खाने के बाद भी यथा सम्भव धार्मिक कार्यों में यथाशक्ति धन खर्च करते थे। लेकिन वह नगण्य सा था। अधिष्टायक श्री नाकोड़ा भैरव देव के पक्के ईष्ट के कारण पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी को तखतगढ से नाकोड़ा पैदल संघ निकालने का संकेत मिला। इन्होंने यह बात अपने सुश्रावक श्री केसरीमलजी एवं इनकी धर्मपत्नी श्रीमती मगी बाई के सामने व्यक्त की। उस समय श्री केसरीमलजी की आर्थिक हालात संघ निकालने के अनुकूल नहीं होने पर भी आपने गुरूवर्या से फरमाया कि यदि आपका आशीर्वाद रहा तो आपकी आज्ञा का निश्चित रूप से पालन होगा। आपका वचन सिद्ध हो और हमारा परिवार संघ निकालने योग्य बने।

गुरूवर्या श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. का आशीर्वाद लेकर श्री केसरीमलजी व्यापार निमित बम्बई (मुम्बई) के लिये रवाना हो गये। गुरू कृपा एवं धर्मकृपा से इन्हें व्यापार में खूब आर्थिक लाभ होने लगा। लगातार आर्थिक सम्पन्नता बढने लगी तब इनकी भावना भी परोपकारिका, सदुपदेशदात्री गुरूवर्या श्री सुन्दर श्रीजी म. की तरफ अधिक बढने लगी और गुरूवर्या द्वारा फरमाये तखतगढ से नाकोड़ा संघ निकालने की भावना बलवन्ती होने लगी।

तखतगढ से पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म. अपने शिष्य प्रशिष्य समुदाय के

साथ वि.सं. 1992 का चातुर्मास बलदरा करने पहुंची। यहां आपका जैन श्री संघ ने जोश खरोश, हर्षोल्लास, आनन्द विभोर होकर खूब शानदार स्वागत सत्कार के साथ प्रवेश करवाया। प्रवेश के समय आस-पास के गांवों, कस्बों एवं नाकोड़ा तीर्थ के कुछ सेवाभावी भी उपस्थित रहे। यहां के चातुर्मास में नित्य प्रति की जाने वाली धर्म आराधना के साथ आप प्रतिदिन नाकोड़ा तीर्थ को सहयोग करने की बात अपने प्रवचन में कहने से नहीं चूकती थी और अवसर प्राप्त कर तीर्थ के लिये योग्य भाग्यशालियों, दानदाताओं से सहयोग भिजवाने को प्रेरित करती रहती। अक्सर जनसमुदाय आपको नाकोड़ा जैन तीर्थ की साध्वी से पहचानने लग गये थे। जब कभी भी, जहां कहीं पर भी साधु-साध्वियों के आचार विचार, उपदेशों, त्याग तपस्या आदि की चर्चा होती थी तब आपका नाम भी उस चर्चा में प्रमुख होता था। जब कोई इस चर्चा में पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी के नाम से अपनी अपरिचिता प्रकट करता था तब उसे कहा जाता था कि पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी नाकोड़ा वाली, तो वह झट से पहचान लेता था। वहां जब भी नाकोड़ा तीर्थ के जीर्णोद्धार की जहां कहीं चर्चा होती थी तब पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म. का नाम श्रद्धा, भक्ति, सम्मान के साथ लिया जाता था।

पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म. अपने जीवन के अंतिम समय में श्री जैन तीर्थ नाकोड़ा का पर्यायवाची बन चुकी थी। इस तीर्थ के उत्थान, विकास इनकी रग-रग में रम चुका था। तीर्थ के अधिष्टायक श्री भैरवदेवजी की इन पर असीम कृपा होने से इनके द्वारा चाहे गये जलकल्याणकारी एवं तीर्थ उद्धारक कार्य सदैव पूर्ण होते रहे। वलदरा में आपका चातुर्मास आशा से अधिक सफलीभूत रहा। चातुर्मास में धार्मिक कार्यक्रमों का विशेष ठाट रहा वहां नाकोड़ा तीर्थ के लिये यहां से एवं आपके दर्शन करने यहां आने वाले लोगों ने खूब सहायता दी।

आप सदैव की भांति प्रतिदिन प्रातः करीब साढे तीन बजे के आस-पास ध्यान करती थी। कार्तिक शुक्ला दसमी को आप प्रातः जल्दी उठकर पाट पर ही ध्यान मग्न होकर ध्यान कर रही थी कि एक सर्प आपके पाटे पर आपके पास बैठा हुआ झूल रहा था। जब पू. साध्वी श्री माणक श्रीजी प्रातः 4 बजे उठी और आपके चरण स्पर्श करने आपके पास गई तो सर्प को झूलते देख घबरा गई और अन्य साध्वियों एवं उपाश्रय में सोई श्राविकाओं को जगाया और झूलते हुए सांप को

दिखाया। सभी सांप को झूलते देख घबराने लगी और पू. साध्वी श्री माणक श्रीजी आदि ने महाराज साहब को आवाज देते हुए पाट पर झूलते सांप की जानकारी दी। लेकिन ध्यान में मग्न पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने किसी आवाज की तरफ ध्यान नहीं दिया। प्रातः साढे पांच बजे तक सांप पाट पर झूलता ही रहा। साध्वियों एवं श्राविकाएं पू. साध्वी गुरूवर्या की सावचेत होने के लिये कहती रही। लेकिन ध्यान में मग्न पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ध्यान करती रही। सांप करीबन साढ़े पांच बजे के बाद अलोप हो गया। जब प्रातः 6 बजे पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने ध्यान पूरा किया तब सभी साध्वियों एवं श्राविकाओं ने पाट पर सांप के झूलने की बात बताई। आपने सबकी बाते सुनी लेकिन इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया और उस दिन आपने चावल के एक फीके दाने का ठाम चौबिहार आयंबिल किया।

दोपहर को अपनी प्रशिष्या पू. साध्वी श्री प्रसन्न श्रीजी म. को अपने पास बुलाते हुए कहा कि आपने पाट पर सर्प लटकने की बात कहने वाली थी, बताओं क्या घटना थी। पू. साध्वी श्री प्रसन्न श्रीजी म.सा. प्रभात में गुरूवर्य पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. के ध्यान मग्न होने पर पाट पर लटकने की बात गुरूवर्या को सुना रही थी। पू. गुरूवर्या ने आंखे बंद कर सारी बाते पू. साध्वी श्री प्रसन्न श्रीजी के मुख से सुनी। बात खत्म होते ही पू. साध्वी श्री सुन्दर श्री ने अपनी आंखे खोलते हुए पू. साध्वी श्री प्रसन्न श्रीजी को कहा- वत्स! जीवन का अंतिम समय निकट आ गया है। अब मैं छः मास ही जीऊंगी। जन्म मरण पर गहरी चर्चा के बाद आपने पू. साध्वी श्री प्रसन्न श्रीजी को नाकोड़ा तीर्थ की तरफ पूर्ण ध्यान देने का संकेत दिया।

वलदरा में चातुर्मास के अंतिम समय कार्तिक शुक्ला 14 एवं पूर्णिमा को छठ (बेला) किया और पूर्णिमा को ही वलदरा के पास आये कवला तीर्थ की यात्रा की। यहां से आप मिगसर वद एकम को पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. शिष्य प्रशिष्याओं के साथ भूती हुई सांय पुनः वलदरा पधार गई।

वलदरा में आप जैन धर्म के व्यापक प्रचार-प्रसार के साथ नाकोड़ा तीर्थ के उत्थान विकास करने में सच्चे मन से लगी रही। जब कभी, जो कोई आपको वन्दन करने आता तो उन्हें नाकोड़ा तीर्थ में स्वेच्छा से, शक्तिनुसार सहयोग देने के लिये बराबर प्रेरित करती रहती। इस बीच तखतगढ के आपके परम श्रद्धालू भक्त श्री केसरीमलजी अपनी पत्नी श्रीमती मगी बाई और बड़े पुत्र श्री सूरजमलजी के साथ

मिगसर वदी 3 को वलदरा दर्शन करने पधारे। इनके अतिरिक्त बलाना के श्री भीकमचंदजी, बाली वाले श्री चुन्नीलालजी भी दर्शनार्थ पधारे। इन श्रावकों एवं श्राविकाओं के साथ धर्म चर्चा के साथ नाकोड़ा तीर्थ के विकास की बात करने में साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. अत्यन्त ही व्यस्त थी। श्रावक-श्राविकाओं से नाकोड़ा तीर्थ को दिये जाने वाले सहयोग वचनों से बड़ी खुश थी। इस बीच तखतगढ़ के श्री केसरीमलजी ने कहा-गुरूवर्या! मैं और मेरी पत्नी व पुत्र आदि आपकी सेवा में हाजिर है और आपके उपदेश को साकार करने के लिये तखतगढ से नाकोड़ा तीर्थ के लिये छः रीपाल संघ निकालने के लिये तैयार है। आप मुझ सेवक को इस पुण्य कार्य करवाने का आशीर्वाद प्रदान करावें। तखतगढ से नाकोड़ा छःरीपाल संघ निकलवाने की पू.साध्वी जी मनोकामना को पूरी होते देख इनकी खुशी का कोई पार नहीं था।

इस खुशी के मारे इन्होने अपनी साध्वियों को एकत्रित कर इस शुभ समाचार को ही नहीं सुनाया अपितु उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को भी ऐसे पुण्य कार्य करवाने वाले सुश्रावक श्री केसरीमलजी एवं इनके परिवार को धर्मलाभ लेते हुए इनकी भावना पर खूब साधुवाद दिया। इस दौरान आपके श्रद्धालू भक्त श्री केसरीमलजी ने तखतगढ से नाकोड़ा छरीपाल संघ निकालने के लिये शीघ्र पधारने की अपने परिवार के सदस्यों के साथ गुरूवर्या एवं साध्वी मंडल को श्रद्धापूर्वक वन्दन के साथ प्रार्थन

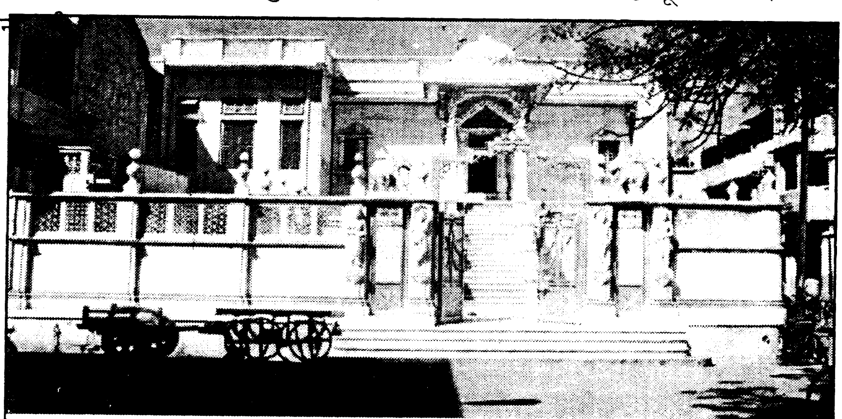

श्री ऋषभदेव का मंदिर-तखतगढ (राजस्थान)

तखतगढ से नाकोड़ा तीर्थ पैदल छ:रीपाल संघ की साध्वीजी उपस्थित लोगों के साथ श्री केसरीमल जी के साथ उसकी व्यवस्था एवं स्वरूप पर चर्चाकर रही थी कि श्री केसरीमलजी के बड़े पुत्र श्री सूरजमलजी (श्री सिरेमलजी) ने कहा- गुरूवर्या! हम संघ निकालने को तैयार है। यदि आप फरमावे तो इस वर्ष संघ निकाला जाय। यदि आपकी आज्ञा हो तो अगले वर्ष! क्योंकि इस साल वर्षा के अभाव में अकाल की स्थिति के कारण पशुओं के लिये चारे एवं जन साधारण के लिये पीने के पानी का अभाव दिखाई देता है। मेरी तो प्रार्थना है कि आप अगले वर्ष में संघ निकालने के लिये अपनी स्वीकृति फरमावें। श्री सूरजमलजी (श्री सिरेमलजी) के इन विचारों को सुनते ही हर्षोल्लास मुद्रा में पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने कहा कि- जैसी आपके परिवार की इच्छा एवं भावना। यदि अगले वर्ष आप संघ निकालेंगे तो मैं इस संघ में सम्मलित भी नहीं हो पाऊंगी और न ही आपके संघ को देख सकूंगी।

संघ यात्रा की इस चर्चा में श्री सूरजमलजी (श्री सिरेमलजी) साध्वीजी की भावना को समझ नहीं पाये और बार-बार साध्वीजी को अगले चातुर्मास के बाद संघ निकालने की बात दोहराने लगे तब उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मेरा आयुष्य अब केवल मात्र छः महीने शेष रहा है। मैं इस संसार में अलोप हो जाऊंगी। ऐसी स्थिति में जैसी आपकी भावना हो वैसा करें। मैं आप सभी की भावनाओं की कद्र करूंगी। पू. साध्वीजी के मुख से अपने जीवन के अंतिम समय की बात सुनकर आपके श्रद्धालू भक्त श्री केसरीमलजी ने हाथ जोड़ते हुए कहा- गुरूवर्या! मैं एवं मेरा परिवार ऐसी स्थिति में इसी वर्ष संघ निकालेंगे। आप तो हमे इसके लिये शुभ मुहूर्त दिरावे और संघ की तखतगढ से तैयारियों करवाने के लिये मार्गदर्शन देने हेतु शीघ्र आपश्री अपनी साध्वियों के साथ तखतगढ़ पधारे। श्री केसरीमलजी के पुत्र श्री सिरेमलजी (श्री सूरजमलजी) ने अपनी बात पर अफसोस हाजिर करते हुए पू. मा.सा. आदि साध्वियों को शीघ्र तखतगढ से संघ निकालने हेतु पधारने की विनती करने में भी पीछे नहीं रहे।

तखतगढ़ के पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. के श्रद्धालू एवं सुश्रावक श्री केसरीमलजी के परिवार सहित उपस्थित अन्य श्रावक-श्राविकाओं ने तखतगढ से नाकोड़ा तीर्थ से छ:रीपाल संघ निकालने की साध्वीश्री ने जैसे ही स्वीकृति दी सारा वातावरण श्री जिनशासन देव की जय, पू. साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. की जय-

जयकार से गूंज उठा। इस खुशी से गद्‌गद्‌ हुए श्री केसरीमलजी ने पू. साध्वीजी को संघ यात्रा सफल करने के आशीर्वाद देने हेतु शीघ्र साध्वी मंडल के साथ तखतगढ पधारने की अर्न्तमन से भावपूर्वक विनती की। साध्वी श्रीजी ने भी अपने श्रद्धालू भक्त श्री केसरीमलजी एवं इनके परिवार की विनती को स्वीकार करते हुए वलदरा से विहार कर वि.सं. 1993 फाल्गुन सुद 7 को साध्वी परिवार के साथ तखतगढ पधारी।

पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल का तखतगढ जैन श्री संघ ने अभूतपूर्व स्वागत किया। ऐसा स्वागत किया जो ऐतिहासिक बन गया। भव्य स्वागत के बाद तखतगढ जैन श्री संघ के सामने श्री केसरीमलजी ने खड़े होकर हाथ जोड़कर अनुनय विनय करते हुए कहा कि-मेरे परिवार द्वारा परम पूज्य गुरूवर्या श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. के आशीर्वाद से मैं तखतगढ से जैन तीर्थ श्रीनाकोड़ा जी का छःरीपाल संघ निकालना चाहता हूं अतः इस संघ को निकालने एवं संघ व्यवस्था सम्भालने के लिये तखतगढ जैन श्री संघ मुझे आज्ञा प्रदान करावें। श्री केसरीमलजी के परिवार द्वारा तखतगढ से नाकोड़ा तीर्थ का छःरीपाल संघ निकालने की चर्चा तखतगढ जैन श्री संघ कुछ समय से सुनता रहा। जैसे ही पू. साध्वी जी के तखतगढ प्रवेश के स्वागत एवं अभिनन्दन अवसर पर जैसे ही श्री केसरीमलजी ने अपने परिवार द्वारा तखतगढ से नाकोड़ा तीर्थ तक छःरीपाल संघ निकालने की भावना जैन श्री संघ के सामने रखी तो तखतगढ जैन श्री संघ के सभी लोगों ने एक स्वर के साथ उन्हें संघ निकालने की स्वीकृति देने के साथ श्री जिन शासन देव, पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. की जय-जयकार करने लगे और श्री केसरीमलजी एवं इनके परिवार वालों को उत्साह, उमंग एवं उल्लास के साथ बधाई देते थक नहीं रहे थे। सभी ओर खुशी का माहौल बन गया और सभी ने मिलकर तखतगढ से नाकोड़ा तीर्थ तक निकाले जाने वाले छःरीपाल संघ की सफलता में जीजान से जुट गये। पू. साध्वी जी के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में पैदल छःरीपाल यात्रा संघ की बड़े पैमाने पर युद्धस्तर से तैयारियों करनी शुरू कर दी।

तखतगढ़ से जैन तीर्थ नाकोड़ाजी तक पैदल छःरीपाल संघ निकालने के लिये जैन श्री संघ के सभी वर्ग के लोग जुटकर अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार व्यवस्थाऐं सम्भालने लगे। पैदल संघ की व्यवस्था को सुचारू रूप से सम्भालने के

लिये युवा वर्ग में अति उत्साह एवं जोश देखने को मिला। वहां अजैन बन्धु भी अपने गांव की प्रतिष्ठा के लिये यथाशक्ति योगदान देने के लिये पैदल संघ की व्यवस्थाओं में जुट गये। तखतगढ जैन श्रीसंघ की देखरेख में पैदल छःरीपाल संघ यात्रा की व्यवस्थाओं का कार्य आरम्भ हुआ और इन सारी व्यवस्थाओं पर होने वाले सभी प्रकार के व्यय भार को हंसी खुशी के साथ श्री केसरीमलजी का परिवार वहन करने में बड़ी उदारता के साथ उत्सुकता दिखा रहा था।

पैदल यात्रा संघ के लिये सभी प्रकार की तैयारियां युद्ध स्तर पर आरम्भ कर दी। संघ यात्रा की आवश्यक आवश्यकताओं के लिये साधन जुटाने शुरू कर दिये। इतना ही नहीं इस धार्मिक पैदल छःरीपाल यात्रा संघ में अधिक से अधिक जैन साधु-साध्वियों का सानिध्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये तखतगढ जैन श्री संघ सहित श्री केसरीमलजी के परिवार-परिजन उन्हें विनती करने के लिये रवाना हुए। इसी प्रकार संघ में अधिक से अधिक जैन श्रावक-श्राविकाऐं सम्मलित होकर धार्मिक यात्रा का लाभ उठाते हुए संघ को सफल बनावे। इसके लिए गांव-गांव कस्बों, नगरों आदि जाकर विनती करनी शुरू कर दी। इस कारण सारे क्षेत्र में तखतगढ से नाकोड़ा जैन तीर्थ के लिये पैदल छःरीपाल संघ की खूब जोरों से चर्चा होने लगी। इसके साथ ही संघ निकालने वाले श्री केसरीमलजी एवं इनके परिवार की इतने बड़े धार्मिक कार्य करवाने की हिम्मत की दाद देते लोग थक नहीं रहे थे। इतना ही नहीं कई लोग इस परिवार को बधाई एवं शुभकामना देने तखतगढ पहुंच गये।

तखतगढ से जैन तीर्थ नाकोड़ा के लिये निकलने वाले छःरीपाल संघ में सम्मलित होने एवं मार्गदर्शन करने के लिये करीबन 20 जैन साधु, 80 साध्वियों अग्रिम रूप से तखतगढ पधारी। इनका जैन श्री संघ के साथ श्री केसरीमलजी के परिवार द्वारा खूब स्वागत सत्कार के साथ भाव भक्ति की गई। डहेला वाले परमशासन प्रभावक प्रशान्त मूर्ति स्व. परम पू. पन्नयासनी म. श्री धर्मविजयजी गणिवर श्रीजी के पट्टधर विद्वान पू. पन्यास प्रवर श्री सुरेन्द्र विजयजी गणिवंर आदि ज्योति शिल्पादि विद्या विशारद पू. पन्यास जी श्री हिम्मत विजयजी गणिवर, पू. प्रशान्त मूर्ति मुनि श्री जयविजयजी म., पू. मुनिवर श्री गुमान विजयजी म., पू. मुनि श्री भुवन विजयजी म. आदि विशाल साधु समुदाय तखतगढ पधारे। यहां उपस्थित साधु-साध्वियों ने धर्म

की खूब जमकर आराधना उपासना करवाई। जिसके कारण सम्पूर्ण तखतगढ कस्बा धार्मिक रंग में रमने लगा। इस अवसर पर पू. पन्यास श्री सुरेन्द्र विजयजी गणिवर्य श्रीजी ने यहां एक श्रावक को जैन दीक्षा अंगीकार करवाई जिसका सम्पूर्ण खर्चा तखतगढ जैन श्री संघ की अनुमति से श्री केसरीमल जी एवं इनके परिवार वालों ने वहन करने का लाभ लिया।

धर्मधरा तखतगढ से जैन तीर्थ नाकोड़ा के लिये चतुर्विध संघ जिसमें साधु-साध्वियों-श्रावक-श्राविकाओं के साथ पैदल छःरीपाल संघ ने वि.सं. 1993 फाल्गुन सुदी सप्तमी को खूब गाजों बाजों की मधुर धुनों, महिलाओं की धार्मिक स्वर लहरियों, हजारों लोगों की जय-जयकार की ध्वनी के साथ संघ ने तखतगढ से नाकोड़ा तीर्थ के लिये प्रस्थान किया। जिसे विदा करने के लिये सम्पूर्ण तखतगढ की जनभेदनी ही नहीं आसपास के क्षेत्रों के हजारों नर-नारी वहां उपस्थित हुए। इस अवसर पर तखतगढ के सभी जैन धार्मिक स्थलों को खूब शानदार तरीके से सजाया गया था। जैन धार्मिक स्थल से जहां से संघ ने प्रस्थान किया वहां से तखतगढ के बाहरी क्षेत्र के मार्गों को खूब सजाया संवारा गया। जिन मार्गों से संघ ने अपनी पैदल यात्रा शुरू की उन मार्गों पर जैन धर्मावलम्बियों के अतिरिक्त अजैन भाई बहनों ने संघ में सम्मलित जैन साधु-साध्वियों के दर्शन वन्दन का लाभ लिया वहां संघ के आयोजन श्री केसरीमलजी के परिवार परिजनों को मालाऐं पहनाकर उनका स्वागत किया गया और संघ में पैदल यात्रा करने वाले जनसमुदाय का तखतगढ कस्बे के लोगों एवं परिजनों ने भी इन्हें मालाऐं पहनाकर इन पर पुष्पवृष्टि कर खूब हर्षोल्लास के साथ स्वागत करते हुए इनकी यात्रा सानन्द सम्पन्न ही कामनाऐं की गई।

पैदल छःरीपाल जैन यात्रा संघ तखतगढ से प्रस्थान किया तब इसमें 20 साधु 80 साध्वियों, 1500 से अधिक श्रावक-श्राविकाऐं सम्मलित हुए। इस संघ की सम्पूर्ण व्यवस्था तखतगढ के आदिनाथ मंडल के करीबन 150 जैन नवयुवकों ने सम्भाल रखी थी। पैदल संघ यात्रा की सफलता के लिये 200 से अधिक बैलगाड़ियों के साथ कुछ सवारी मोटरें एवं माल ढोहने वाले ट्रक (लारियों), टेन्ट आदि सम्मलित थे। ऊंटों एवं घोड़ों पर नगाड़ा वादन के अतिरिक्त सुरक्षा सवार संघ की सुरक्षा में लगे रहे। सुरक्षा कर्मियों के साथ संघ की सम्पूर्ण अस्थाई आवास व्यवस्था, सामान के उतारने चढाने, खाना बनाने, पानी की व्यवस्था आदि करने के लिये कई

अस्थाई वेतन भोगी कर्मचारी मजदूर भी संघ सेवा करने के लिये साथ में थे। संघ में जिनेश्वर प्रभु की भक्ति करने के लिये एक सुन्दर बैलगाड़ी पर परमात्मा की भक्ति का इन्तजाम कर रखा था।

संघ जिस मार्ग से प्रस्थान कर एक गांव से दूसरे गांव, एक कस्बे से दूसरे कस्बे तक, एक नगर दूसरे नगर की पैदल यात्रा करने जब रवाना होता था तो उसके आगे जैन ध्वजा चलती थी। पीछे शहनाई बजाने वाले, ढोल थाली पर थापमारने वाले, आदि वाद्य यंत्र बजाने वाले चल रहे थे। जिनके पीछे जैन साधुओं, श्रावकों, साध्वियों, श्राविकाओं के झुण्ड के झुण्ड जयघोष करते हुए पैदल संघ यात्रा का आनन्द लेते हुए चल रहे थे। रास्ते की दुर्गमता, कंटिली झाड़ियों, उबड़-खाबड़ पगदंडियों, जंगली जीव-जन्तुओं, जानवरों आदि की कठिनाईयां झेलने की परवाह किये संघ अपने गंतव्य स्थल जैन तीर्थ नाकोड़ा की यात्रा करने की उत्सुकता उमंग, उल्लास के साथ आगे बढ रहा था।

उस समय साधन सुविधाओं, आवासीय स्थल, पीने के पानी की किल्लत आदि होते हुए भी संघ का पड़ाव झूपों, खुले समतल खेत खलियान, तालाब के किनारों, मंदिरों की ओट में कठिनाईयों के बावजूद भी टेन्ट लगाकर उसमें ठहराव होता हुआ संघ तखतगढ से उम्मेदपुर, गुढा बालोतान, विशनगढ, रायथल, सिवाना, बालोतरा, जसोल आदि बड़े कस्बों के साथ कई गांवों की सुखद यात्रा करता हुआ जैन तीर्थ नाकोड़ा सकुशल पहुंचा। इस बीच पैदल संघ यात्रा के दौरान जितने भी जैन मंदिर जहां-जहां भी आये उनके दर्शन करने का सौभाग्य भी प्राप्त किया। संघ निकालने वाले श्री केसरीमलजी के परिवार ने जगह-जगह पर दान देकर पुण्य अर्जित करने का सौभाग्य प्राप्त किया। वहां पैदल छःरीपाल जैन यात्रा संघ के नियमों का पालन करते हुए सभी यात्रीगण बराबर जैन साधु साध्वियों के मुखारबिंद से धर्मोपदेश सुनकर कई नियमों को स्वीकार करते रहे। कई यात्रियों एवं संघ प्रवास स्थल वाले लोगों ने तो आजीवन तक कई नियम व्रतों की शपथ ग्रहण की।

पैदल जैन यात्रा संघ का जहां भी अस्थाई पड़ाव होता था वहां टैन्टों की नई नगरी बस जाती थी। जंगल में मंगल होता था। रात्रि के अंधियारे में जलती मशालें एक अद्भूत छावनी सी दिखाई देती थी। संघ में सम्मलित यात्रियों के लिये नाश्ते पानी, खाने-पीने की शुद्ध सात्विक सामग्री बनाई जाती थी। जिसके लिये भोजन कक्ष

के साथ भोजन बनाने वालों का एक अलग से हजूम कार्यरत रहता था। इतना ही नहीं संघ जिस गांव, ढाणी, कस्बे, नगर आदि बस्तियों से गुजरता था वहां पर राजस्थानी परम्परानुसार संघ का, संघ आयोजकों का सामेलिया के साथ स्वागत, सत्कार किया जाता था।

तखतगढ का छ:रीपाली पैदल यात्रा संघ तखतगढ का पैदल संघ, पन्यास श्रीहिम्मत विजयजी (आचार्य श्री हिमाचल सूरीश्वरजी) का पैदल संघ, प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी का पैदल संघ, सेठ श्री केसरीमलजी के पैदल संघ के नामों से अपनी पहचान बढ़ाता हुआ, जैन धर्म की धर्म ध्वजा फहराता हुआ, जैन धर्म के सत्य, अहिंसा का शंखनाद करता हुआ ज्यों-ज्यों नाकोड़ा की तरफ आगे बढता था, सभी संघ के यात्रियों की जिज्ञासा शीघ्रताशीघ्र नाकोड़ा के श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथजी, नाकोड़ा के अधिष्टायक श्री भैरवदेवजी के दर्शन करने की जिज्ञासा बढ़ रही थी। वहां संघ प्रेरिका साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी अपने दिव्य छ:रीपाल संघ नाकोड़ा के लिये निकालने के स्वप्न को शीघ्र पूरा होने की बाट जो रही थी। संघ के आयोजक श्री केसरीमलजी एवं इनका परिवार संघ शीघ्र सकुशल नाकोड़ा पहुंचे ऐसी गुरूजनों, गुरूवर्या के साथ नाकोड़ा श्री पार्श्वनाथजी एवं अधिष्टायक श्री भैरवदेवजी को प्रार्थना करते रहते थे।

नाकोड़ा तीर्थ के समीप आये ऐतिहासिक नगरी जसोल में छ:रीपाल संघ पहुंचा तो यहां इनका परम्परागत भव्य स्वागत किया गया। संघ जसोल से चलकर जैसे ही नाकोड़ा की परिधि में पहाड़ी की टेकरी पर बनी दादावाड़ी के समीप पहुंचा तो यहां अभूतपूर्व एवं रोमांचकारी दृश्य पू.साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. एवं इनकी शिष्या पू. साध्वी श्री प्रसन्न श्रीजी म.सा. सहित तखतगढ से नाकोड़ा संघ निकालने वाले श्री केसरीमलजी एवं इनकी धर्मपत्नी श्रीमती मगीबाई को देखने को मिला। केवल इन्होंने पहाड़ी की ओट में चट्टानों के बीच फण फैलाये नाग नागिनी दिखाई दिये। इसे देख देवी चमत्कार एवं शुभ संकेत समझते हुए श्री केसरीमल जी ने अपनी पत्नी के साथ नागनागिनी के जोड़े की अर्न्तमन से भक्ति करते हुए दूध एवं शक्कर से इनकी पूजा की। यह दृश्य केवल इन चार भाग्यशालियों को ही दिखाई दिया।

संघ को नाकोड़ा तीर्थ में प्रवेश से पूर्व नागनागिनी के दर्शन को शुभ मानते हुए पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने संघ को शुभ मुहूर्त का अवसर कहते हुए नाकोड़ा

तीर्थ में प्रवेश करने का संकेत दिया। छ:रीपाल संघ गाजे बाजे के साथ श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथजी एवं अधिष्टायक श्री नाकोड़ा भैरव देवजी की जय-जयकार करते हुए संघ में सम्मलित साधु-साध्वियों की जय-जयकार के साथ बड़े ही प्रसन्नचित मन से और अत्यन्त ही आनन्द विभोर होकर जैन तीर्थ नाकोड़ा में खुशी-खुशी प्रवेश किया। प्राकृतिक के नयनाभिराम दृश्यों में पहाड़ियों की ओट में टापू की भांति बसे नाकोड़ा तीर्थ के मंदिरों के शिखरों के दर्शन कर संघ यात्री आनन्द से नाच उठे। जिन्होंने पहली बार नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा की उनकी खुशी का कोई पार नहीं था।

संघ के नाकोड़ा पहुंचने पर यहां की व्यवस्था समिति की ओर से संघ का शहनाई बजाकर ढोल की थाप पर और थाली की झंकार के साथ भव्य स्वांगत किया गया। संघ में सम्मिलित साधु-साध्वियों को भावपूर्वक वंदन करते हुए उन्हें पूर्ण सम्मान एवं बहुमान के साथ नाकोड़ा तीर्थ पर लाया गया। सभी साधु-भगवन्तों, साध्वियों, संघ के आयोजक परिवार, यात्रियों, कर्मचारियों, श्रमिकों आदि को पूर्व में व्यवस्था किये स्थानों पर ठहराया गया। संघ यात्रा में आई सैंकड़ों बैलगाड़ियों, ऊंटों, घोड़ों आदि के लिये नाकोड़ा की परिधि में उचित स्थान पर डेरा डलवाया गया। पहली बार सैकड़ों वर्षों के बाद नाकोड़ा जैन तीर्थ पर पैदल छ:रीपाल यात्रा संघ आने से ऐसा लग रहा था कि यहां भव्य मेला लग गया है। संघ में पशुओं की अधिक संख्या से तो ऐसा महसूस किया जा रहा था कि नाकोड़ा की परिधि में कोई विशाल पशु मेला लगा हो।

छ:रीपाल संघ के नाकोड़ा सकुशल पहुंचने पर सभी यात्रियों आदि ने निर्धारित स्थान पर अपना सामान आदि रखकर तत्काल साधु भगवन्तों एवं साध्वियों के साथ तीर्थ नायक श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथजी, श्री आदिनाथजी एवं श्री शांतिनाथजी के मंदिरों के साथ श्री नाकोड़ा अधिष्टायक भैरव देवजी के दर्शन करने संघ के यात्री सामुहिक रूप से मंदिर परिसर में दर्शन करने पहुंचे। उस समय सामुहिक दर्शन करते हुए सभी अत्यन्त ही सुख का अनुभव कर रहे थे। सभी की शारीरिक थकान जैसे स्वत: ही लुप्त हो गई है। सभी देव दर्शन के प्यासे से लग रहे थे। चारों ओर आनन्द, उल्लास, उमंग का वातावरण दिखाई दे रहा था। सभी एक दूसरे को सकुशल नाकोड़ा यात्रा पर पहुंचने पर बधाई दे रहे थे। संघ के आयोजक भाग्यशाली परिवार के लोगों को बधाई देते थक नहीं रहे थे। वहां संघ की प्रेरिका पू. साध्वी श्री सुन्दर

श्रीजी म.सा. को उनकी मनोकामना पूर्ण होने पर वन्दन के साथ बधाई देते लोगों को देखकर खुशी के मारे लोग झूम रहे थे। पू. साध्वीजी के इस सफल प्रयास पर संघ में सम्मलित साधु भगवन्तों ने भी पू. साध्वीजी के सफल प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथजी मंदिर के साथ अन्य मंदिरों में प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाओं, रक्षक देव-देवियों आदि के दर्शन कर संघ अपने निर्धारित स्थलों पर विश्राम करने पहुंच गया।

नाकोड़ा तीर्थ के कुंए पर पानी भरने के समय आसातना होने के करण कुएं का पानी तत्काल समाप्त सा हो गया। इस घटना की जानकारी जैसे ही संघ में सम्मलित साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं संघ के आयोजक एवं इनके परिवार सहित नाकोड़ा में उपस्थित जनसमुदाय को मालूम हुई तो सभी चिन्तातुर हो गये। इस बड़ी आसातना की घटना से संघ आयोजक श्री केसरीमलजी अचलाजी एवं इनकी धर्मपत्नी श्रीमती मगी बाई सबसे अधिक दु:खी एवं परेशान होने लगे। दोनों ने विचार किया कि हमने तो गुरूवर्या के आदेश को पूर्णरूप से सिरोधार्य करके पैदल यात्रा संघ निकाला है फिर ऐसी दुर्घटना हमारी कमी बताती है। जब तक कुंए में पुन: पानी नहीं आवेगा तब तक हम पति पत्नी अपने संसारिक सम्बन्ध विच्छेद रखेंगे और दोनों गुरूवर्या का आशीर्वाद लेकर मंदिर में अलग-अलग श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जी एवं अधिष्टायक नाकोड़ा श्री भैरवदेव की आराधना भक्ति में बैठ गये। दोनों की अर्न्तमन की भक्ति से अधिष्टायक श्री नाकोड़ा भैरवदेवजी के चमत्कार से चन्द घंटों के बाद कुएं में पानी भर गया। जब यह खबर सबको मिली तो सभी खुशी से झूम उठे। गुरूवर्या एवं उपस्थित साधु-साध्वियों ने संघ आयोजक परिवार पर वासक्षेप डालते हुए धर्म लाभ दिया। इस अवसर पर संघ आयोजक श्री केसरीमलजी अचलाजी एवं इनकी धर्मपत्नी श्रीमती मगी देवी ने जो संसारिक सम्बन्ध विच्छेद करने की प्रतीक्षा की थी उसके पूर्ण होने पर इस दम्पत्ति ने नवदम्पत्ति की भांति फेरे खाने के लिये छेड़ा-छेड़ी बांधे और प्रभु के निज मंदिर की परिक्रमा कर अपना नया संसारिक जीवन की शुरूआत की।

नाकोड़ा तीर्थ में सैकड़ों वर्ष के बाद पैदल छ:रीपाल संघ के आने पर यहां की व्यवस्था समिति ने संघ की आवभगत में किसी प्रकार की कमी नहीं रखी। संघ

में सम्मलित पन्यास श्री हिम्मत विजय जी (आचार्य श्री हिमाचलसूरीश्वरजी म.सा.) एवं पन्यास प्रवर श्री सुरेन्द्र विजयजी गणिवर आदि साधु-साध्वियों की निश्रा में तीर्थ की व्यवस्था समिति ने संघ के आयोजक श्री केसरीमलजी एवं इनके परिवार का खूब जोरों से बहुमान किया गया और श्री केसरीमलजी एवं इनके परिवार को जैसे ही संघपति की पहली माल श्री कस्तुरजी परखजी ने पहनाई तो सारा तीर्थ जय-जयकार से गूंज उठा और श्रीकेसरीमलजी एवं इनके परिवार को संघपति के अलंकार से सम्मलित किया गया। तब से इनका परिवार संघवी परिवार से आदर के साथ सम्बोधित किया जाता रहा है। वहां इस संघ के नाकोड़ा तीर्थ पर सैकड़ों वर्षों के बाद पहुंचने पर यह तीर्थ शाश्वत तीर्थ के रूप में अपनी पहचान बनाने में सक्षम बन सका। इतना ही नहीं नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी का नाकोड़ा तीर्थ के लिये पैदल छ:रीपाल संघ लाने की भावना भी सफल हुई।

तखतगढ से नाकोड़ा आये पैदल छ:रीपाल संघ ने तीर्थ पर कुछ समय के लिये विश्राम के साथ तीर्थ में प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाओं के दर्शन, पूजन के साथ साधु साध्वियों के वन्दन आदि का लाभ लिया। इसके बाद तखतगढ का पैदल यात्रा संघ वापिस पू. साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी आदि के साथ पुन: तखतगढ के लिये पैदल रवाना हुआ। तखतगढ के लिये रवाना होने से पूर्व पू. साध्वी श्रीसुन्दर श्रीजी म.सा. अपनी साध्वी मंडल के साथ नाकोड़ा के मूलनायक श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जी के दर्शन करने के बाद जैसे ही नाकोड़ा अधिष्टायक श्री भैरवदेवजी के दर्शन करने उनके समक्ष पहुंची तो भाव विभोर हो उठी। इनकी आंखे न केवल भीगी अपितु इनकी आंखों से आंसू टपकने लगे। जिसे देख आपकी शिष्या पू. साध्वी श्री प्रसन्न श्रीजी ने कहा-गुरूवर्य! इस खुशी के अवसर पर आपकी आंखों में आंसू क्यों? तब नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका पू. प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी ने रूंधे स्वर में कहा-वत्स! अब मेरा अंतिम समय नजदीक है और नाकोड़ा तीर्थ के मैं अंतिम दर्शन कर रही हूं अब मैं वापिस नाकोड़ा जी नहीं आ सकूंगी।

नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका पू. प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. आदि ढाणा के साथ जिस उत्साह, उमंग, उल्लास के साथ आनन्द विभोर होकर तखतगढ से जैन तीर्थ नाकोड़ा के लिये पैदल छ:रीपाल संघ लेकर जिस ठाट के साथ पधारी थी पुन: उसी संघ के लोगों के साथ नाकोड़ा से नाकोड़ा तीर्थ के अंतिम दर्शन कर

वि.सं. 1994 चैत्र शुक्ला 12 को सकुशल तखतगढ पधारी। जब तखतगढ में संघ की वापसी हुई तब भी वहां संघ का शानदार ढंग से परम्परागत गाजे-बाजे के साथ सम्मान किया गया। इस अवसर पर पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी एवं संघपति श्री केसरीमलजी एवं इनके परिवारजन खुशी के मारे फूले नहीं समा रहे थे। यह दिन इन सभी के लिये अपार खुशी का दिन था।

पैदल यात्रा संघ नाकोड़ा से वापिस तखतगढ आने से पूर्व संघपति श्री केसरीमलजी अचलाजी परिवार ने पैदल यात्रा संघ के साथ करीबन सात सौ किलो वजन का चांदी का रथ बनाया था उसे नाकोड़ा तीर्थ को भेंट में दे दिया। जो आज भी नाकोड़ा तीर्थ की एक ऐतिहासिक पैदल यात्रा के आगमन एवं संघपति परिवार की उदारता एवं दानशीलता का परिचय दे रहा है। जिसकी मरम्मत संघवी श्री केसरीमल अचलाजी के पोते संघवी श्री कांतिलाल सूरजमलजी ने बड़ी धनराशि खर्च करके करवाई थी।

तखतगढ से जैन तीर्थ नाकोड़ा का नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका पू. प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. की प्रबल इच्छा पर आप श्री की निश्रा में छ:रीपाल संघ आनन्दपूर्वक निकालकर संघवी श्री केसरीमलजी पुन: व्यवसाय के लिये बम्बई (मुम्बई) प्रस्थान कर गये। बम्बई (मुम्बई) पहुंचे उन्हें करीबन 17 दिन ही हुए थे कि वि.सं. 1994 वैशाख शुक्ला 13 के दिन सामायिक में बैठे नवकार मंत्र का जाप कर रहे थे कि इन्हें अचानक घुंघरू की आवाज सुनाई दी और इन्हें आभास हुआ कि

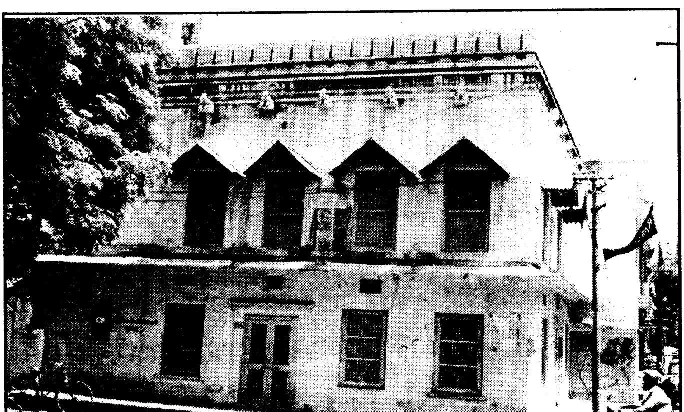

तखतगढ का जैन उपाश्रय जहां साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. अंतिम समय में विराजमान रही

कोई इनकी पीठ थपथपा रहा है। इन्होंने पीछे मुड़कर देखा लेकिन कोई दिखाई नहीं दिया। इस पर संघवी ने पूछा कौन है ? तब इन्हें अदृश्य रूप से जवाब मिला – मैं! नाकोड़ा का अधिष्टायक भैरवदेव हूं और तुम्हे आगाह करने आया हूं कि तुम्हारी परोपकारी गुरूणीजी श्री सुन्दरश्रीजी मा. के जीवन का अंतिम समय चल रहा है। यदि तुम्हें अपनी गुरूणीजी के दर्शन करने हैं तो तत्काल तखतगढ चले जाओं, अन्यथा फिर पछताओगे, बाद में गुरणीजी के दर्शन नहीं होंगे। इस अभूतपूर्व आवाज के बाद फिर इन्हें कुछ सुनाई नहीं दिया। संघवी श्री केसरीमलजी ने अपनी सामायिक की क्रिया पूर्णकर तत्काल मिलने वाली रेल से रवाना होकर वि.सं. 1994 वैशाख शुक्ला 14 को तखतगढ पहुंच गये।

तखतगढ पहुंचते ही संघवी श्री केसरीमलजी ने अपना सामान तत्काल घर में रखते हुए शीघ्र जैन धर्मशाला के लिये, जहां परम उपकारणी नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका प्रवर्तिनी पू.साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी अपने शिष्य प्रशिष्य साध्वियों के साथ विराजमान थी दर्शन करने पहुंच गये। यहां आते ही भाववंदन करते हुए उनकी सुखशाता पूछी। अपनी गुरूवर्या की अस्वस्थ शारीरिक स्थिति देखकर संघवी श्री केसरीमलजी के आंखों से आंसू टपकने लगे, इनका मन व्याकुल होने लगा। रूंधे स्वर में अपनी गुरूवर्या को भावपूर्ण उनके उपकारों को याद कर भाव विभोर हो रहे थे और बार-बार इनके उपकारों की चर्चा करते थक नहीं रहे थे। इतना ही नहीं संघवी श्री केसरीमलजी कहने लगे मुझ जैसे रंक पर कृपा कर जो खुशहाली का आशीर्वाद दिया मैं उसे जन्म-जन्मांतरण कभी भूल नहीं सकूंगा। मैं ही क्या मेरा परिवार आपको उपकार को कभी भी भूल नहीं पायेगा। आप मुझे आज्ञा देने की कृपा करावें। मैं और मेरा परिवार आपकी हर प्रकार से सेवा करने को तैयार है।

संघवी श्री केसरीमलजी अचलाजी साध्वी गुरूवर्या के अपने परिवार पर उपकारों की चर्चा करते थक नहीं रहे थे। उन्होंने कहा कि मेरे बड़े बेटे श्री सूरजमल को शादी किये कई वर्ष गुजर गये लेकिन उन्हें औलाद नहीं हुई। तब मैं और मेरे परिवार के लोग श्री सूरजमल की दूसरी शादी करने की बात कर रहे थे तब आपने कहा था कि श्री नाकोड़ा भैरव बाबा पर विश्वास करो। सब ठीक हो जाएगा। श्री सूरजमल को औलाद के लिये दूसरे विवाह की जरूरत नहीं होगी। बाद में श्री भैरवदेव की कृपा से श्री सूरजमलजी के औलाद हो जावे तो सर्वप्रथम उसे नाकोड़ा

के अधिष्टायक देव श्री भैरवदेव के चरणों में सुलाकर उसे श्री भैरव बाबा के दर्शन अवश्य करवा दे। आपके आशीर्वाद के बाद हमारे परिवार ने श्री सुरजमलजी के औलाद हेतु दूसरी शादी करने का विचार त्याग दिया। कुछ वर्षों के बाद अर्थात् तखतगढ से नाकोड़ा छःरीपालित संघ के करीबन डेढ साल बाद श्री सूरजमलजी को पुत्र रत्न (श्री कांतिलाल) की प्राप्ति हुई। इस खुशी में श्री सुरजमलजी अपनी पत्नी श्रीमती लीलाबेन को लेकर श्री केसरियाजी दर्शन करने पहुंचे। जैसे ही आप वहां पहुंचे आपका बच्चा गम्भीर रूप से बीमार हो गया। सभी प्रकार के उपचार करवाये लेकिन बच्चे की हालत और अधिक गम्भीर होने लगी। तब इस दम्पत्ति की अदृश्य आवाज सुनाई दी बच्चे को श्री नाकोड़ा भैरव के चरणों में रखकर दर्शन कराओ सब ठीक हो जावेगा। तब श्री सूरजमलजी तत्काल नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा पर आये। यहां आते ही उन्हें रात्रि में स्वप्न आया कि बच्चे के तोल के बराबर श्री नाकोड़ा भैरव जी को तेल चढावो। सब ठीक हो जावेगा। प्रातः श्री सूरजमलजी अपनी पत्नी के साथ बच्चे को लेकर श्री नाकोड़ा भैरवदेव की मूर्ति के सामने पहुंची। बच्चे को श्रद्धा के साथ श्री भैरवदेव के चरणों में सुलाया ओर दर्शन करवाने के बाद उसके वजन के बराबर तेल चढाते ही बच्चा जो पहले गम्भीर रूप से बीमार था तत्काल स्वस्थ होकर श्री भैरवदेव की प्रतिमा को गहरी निगाहों से निहारने लगा और परिजनों के सामने हंसने लगा।

ऐसे कई गुरूवर्या के उपकारों की संघवी श्री केसरीमलजी चर्चा करते थक नहीं रहे थे।

साध्वी श्री सुन्दरश्रीजी ने अस्वस्थ अवस्था में संघवी श्री केसरीमलजी को मातृत्व की भावना से निहारा और धर्मलाभ देते हुए कहा-तुम आ गये अच्छा किया। अब मुझे किसी उपचार की जरूरत नहीं है। मेरे तो नाकोड़ा श्री पार्श्वनाथ जी ही वैध है और इनका नाम स्मरण ही मेरी औषध है। इस औषध से मेरा भव रोग का नाश हो जावेगा। इन्हीं विचारों के साथ इन्होंने किसी प्रकार के उपचार की आवश्यकता न समझते हुए वि.सं. 1994 ज्येष्ठ शुक्ला 4 शनिवार को प्रातः अपनी धार्मिक क्रिया सम्पन्न करते हुए श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जी का स्मरण करते हुए अपनी जीवन यात्रा पूर्ण की।

नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका प्रवर्तिनी महाश्रमणी श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. के काल

धर्म (स्वर्गवास) होने के समाचार सुनते ही अपार जनसमुदाय पूज्य साध्वीजी के अंतिम दर्शन करने के लिये धर्मशाला की ओर उमड़ पड़ा। पू.साध्वी जी के कालधर्म (स्वर्गवास) के समाचार बिजली की भांति तखतगढ के आसपास के गांवों, ढाणियों, कस्बों, नगरों आदि में फैलते ही हजारों लोग गुरूवर्या के अंतिम दर्शन करने के लिये तखतगढ मिलने वाले सभी प्रकार के यातायात के साधनों के माध्यम से पहुंचने लगे। तखतगढ में अपार जनसमुदाय एकत्रित होने लगा। पू. महाश्रमणी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. की अंतिम यात्रा के लिये पालखी (अरथी) तैयार की गई। जिसमें पूज्यवर्या जी के पार्थिव देह को विराजमान किया गया। जिनके दर्शन करने अपार जन समुदाय के अतिरिक्त छत्तीस कौमों के लोगों का जन सैलाब उमड़ पड़ा। सभी पूज्य गुरूवर्या के अंतिम दर्शन कर अपने को अहोभाग्यशाली समझते हुए महाश्रमणीजी के आदर्श जीवन के गुणवान करते थक नहीं रहे थे। इस अवसर पर तखतगढ़ के सभी वर्गों के लोगों ने अपना कारोबार स्वेच्छा से बंद रखा और महाश्रमणीजी की अंतिम यात्रा में सम्मलित होने के लिये जैन धर्मशाला के समीप एकत्रित होने लगे।

महाश्रमणी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. की अंतिम यात्रा पर ग्यारह बैण्डों की व्यवस्था की गई। कई वर्गों की भजन मंडलियां अंतिम यात्रा में महाश्रमणीजी के जीवन पर आधारित एवं अन्य भक्ति संगीत से वातावरण को शुद्ध बनाने में गाती रही। जैन धर्मशाला से नाकोड़ा तीर्थोद्धारक महाश्रमणी पू. श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. अरथी (पालखी) सर्वप्रथम बोली बोलने वाले भाग्यशालियों ने उठाई और अंतिम संस्कार स्थल के लिये सुन्दर श्री जी अमर रहे गगनभेदी नारों के साथ रवाना हुई। इस अरथी (पालखी) को कंधा देने के लिये अपार जनसमुदाय में होड़ सी लग गई जो पालखी को कंधा देता वह अपने आपको भाग्यशाली समझता और उसके चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कराहट दिखाई देती। अरथी (पालखी) सम्पूर्ण तखतगढ के प्रमुख गली मोहल्ले, चौराहे अर्थात् सम्पूर्ण कस्बे में फिरती हुई अंतिम संस्कार स्थल पर पहुंच गई। इस अंतिम यात्रा के दौरान भक्त जनों ने, श्रद्धालूओं ने खूब गुलाल उड़ाकर सभी को सुन्दर श्री जी की भक्ति में सरोबार कर दिया।

पूज्यवरा श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. के पार्थिव देह को अंतिम संस्कार स्थल पर लाया गया और यहां अंतिम संस्कार सम्बन्धी कई बोलियां बोली गई। जिसे प्राप्त करने के लिये भाग्यशालियों में आपसी होड़ लग गई। पैसे की परवाह किये, पैसे के

सद्पयोग को देख खूब जोरों की बोलियां जैन श्री संघ को प्राप्त हुई। जिन भाग्यशालियों ने पूज्य गुरूवर्या के अंतिम संस्कार की बोलियां ली उन्होंने अंतिम संस्कार की सभी प्रकार की रस्में पूर्ण की। पूज्य गुरूवर्या की देह अग्नि को समर्पित हो गई। अग्नि की लपेटों में पूज्यवर्या की देह जल रही थी वहां अंतिम संस्कार स्थल पर उपस्थित असंख्य लोग गुरूवर्या के आदर्श जीवन के कई संस्मरणों को एक-दूसरे को सुनाते हुए थक नहीं रहे थे।

अंतिम संस्कार स्थल पर महाश्रमणी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. की अरथी में रखी देह जल रही थी कि कुछ भक्तों के दिल में आया कि पूज्य गुरूवर्या की चिरस्मृति बनाये रखने के लिये अग्नि संस्कार स्थल पर छतरी बनाई जाय। इन गुरूभक्तों की चर्चा अंतिम संस्कार स्थल पर एकत्रित अपार जन समुदाय में चर्चा का विषय बन गई। सभी यहां छतरी बनाने को एकमत ही नहीं अपितु महाश्रमणी की छतरी बनाने के लिये आगे आने लगे। इसी बीच संघवी श्री केसरीमलजी ने उपस्थित जैन श्री संघ एवं छत्तीस कौमों के आगे निवेदन करते हुए तत्काल अपने सिर पर पहनी पगड़ी को उतारकर जैन श्री संघ के चरणों में रखकर पूज्य गुरूवर्या नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका महाश्रमणी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. की छतरी बनाने का आदेश मांगा। इस पर कुछ समय तक अंतिम संस्कार स्थल पर सन्नाटा छा गया लेकिन कुछ समय बाद जैन श्री संघ के आगेवान लोगों ने सलाह मशविरा करते हुए संघवी श्री केसरीमलजी के परिवार को पूज्य गुरूवर्या की छतरी बनाने का आदेश दे दिया। इस पर संघवी श्री केसरीमलजी ने जैन श्री संघ तखतगढ एवं तखतगढ के छत्तीस कौमों का आभार व्यक्त किया।

जन-जन की कल्याणकारिणी नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका महाश्रमणी श्री सुन्दरश्रीजी म.सा. की देहपूर्ण रूप से अग्नि में समर्पित होते देख इनकी अंतिम यात्रा में आई जनभेदनी ने अपने साथ लाये चन्दन लकड़ी के टुकड़ों एवं नारियल, खोपरों को उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि देने के रूप में पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा के साथ समर्पित किये। उसके बाद सम्पूर्ण जन समुदाय अंतिम यात्रा पर जलती महाश्रमणी श्री सुन्दर श्रीजी की देह को अंतिम वन्दन, नमन् कर सभी अपने-अपने घरों के लिये रवाना हो गये।

संघवी श्री केसरीमलजी अचलाजी भी अपने परिवार वालों के साथ घर आये। इनके मन में विचार आया कि गुरूवर्या सदैव कहती थी कि व्यवसाय आदि

में जो लाभ रहे उसका कुछ हिस्सा (भाग) श्री नाकोड़ा तीर्थ के लिये अवश्य रखना। आज भी संघवी परिवार में व्यवसाय आदि में होने वाले लाभ का कुछ हिस्सा श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ के लिये अवश्य अलग रखकर तीर्थ के विकास आदि में खर्च करते आ रहे है। इस सम्बन्ध में इनके परिवार वाले अब भी दीपावली पर्व पर श्री महालक्ष्मी जी के पूजन से पूर्व व्यवसाय लाभ नाकोड़ा तीर्थ का हिस्सा अलग कर श्री लक्ष्मीपूजन करने के बाद मिष्ठान का उपयोग करते है।

तखतगढ (राज.) में परम पूजनीय प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. की स्मृति में बनी छतरी

अपने शान्त स्वभाव, मिलन सरिता, ममत्व के कारण जन-जन में लोकप्रिय नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका महाश्रमणी पू. श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. की पावन स्मृति में तखगढ़ जैन श्री संघ ने बड़े पैमाने पर खूब जोरों की धर्मप्रभावना के साथ श्री जिनेश्वर भक्ति से अष्टानिका महोत्सव मनाया गया। पू. महाश्रमणी की पावन स्मृति सदैव बनी रहे। इनके अंतिम संस्कार स्थल पर संघवी श्री केसरीमलजी के परिवार ने संगमरमर की छतरी का निर्माण करवाकर अपनी परोपकारी, परम उपकारी गुरूवर्या श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ श्रद्धांजलि अर्पित की। संघवी श्री केसरीमलजी ने तालाब के किनारे पर जहां नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका महाश्रमणी श्री सुन्दर श्रीजी की छत्री बनाकर उसमें गुरूवर्या के चरण पादुका की भी स्थापना करवाई गई। चरण पादुका पर लेख इस प्रकार है-

विक्रम सं. 2000 फाल्गुन सु. 4 खै शुभ योगे परम पुज्य गुरूदेव अनुयोगाचार्य पन्यासजी श्री हितविजयजी महाराज साहिब के समुदाय के

गुरुणीजी शणगार श्रीजी की शिष्या प्रवर्त्ति सा.जी. श्री सुन्दरश्रीजी का चरण पादुका करावित श्री तखतगढ वास्तव्य प्रागवटर्स शायः संघवी केसरीमल अचलाजी ने स्व. पर दर्शनार्थे करापितः प्रतिष्ठित पं. हिम्मतविजयजी श्री तखतगढ नगरे श्री नाकोड़ा तीर्थे उद्धारिका। लि.ह. शिवचंद।

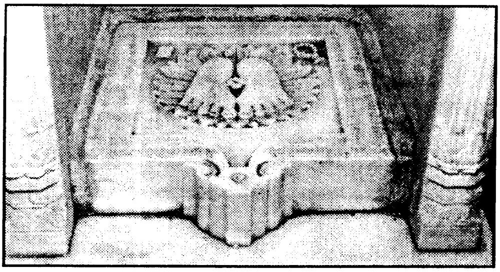

यह छत्री वर्षों तक खुली रही। इस पर संघवी श्री केसरीमलजी के पोते एवं संघवी श्री सूरजमलजी के बड़े पुत्र संघवी श्री कांतिलाल ने छत्री की सुरक्षा हेतु एवं भविष्य में आसातना न हो उस पर कमरा बनाकर उसकी छत पर गोलाकर गुम्बज बनाकर ऊपर कलश की स्थापना करवाई। समय-समय पर इस छत्री की देखभाल एवं सार-सम्भाल संघवी श्री केसरीमलजी अचलाजी के परिवार वाले बराबर करते आ रहे है।

नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका महाश्रमणी श्री सुन्दरश्रीजी के स्वर्गवास होने के बाद उसी वर्ष नाकोड़ा तीर्थ की व्यवस्था अर्थात् ट्रस्ट कमेटी के लिये तखतगढ के संघवी श्री केसरीमलजी अचलाजी न केवल ट्रस्टी बने अपितु आप इस तीर्थ ट्रस्ट कमेटी के सर्वसम्मति से प्रेसीडेन्ट (अध्यक्ष) बनाये गये। आपने वि.सं. 1994 में अर्थात् सन् 1937 से 1943 तक ट्रस्ट के प्रेसीडेन्ट रहते हुए आपने अपनी परोपकारिणी गुरूवर्या नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. की तीर्थ पर स्थाई स्मृति के लिये श्री नाकोड़ा चिन्तामणि पार्श्वनाथजी के मंदिर प्रांगण में बनी श्री श्यामला पार्श्वनाथ जी की शाल में पूर्व की प्राचीर की ओर श्री सरस्वती मां की प्रतिमा छतरी के पास वि.सं. 1996 में छत्री बनाकर उसमें आपकी मूर्ति प्रतिष्ठित की गई। साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी की मूर्ति पर लेख इस प्रकार है।

॥ सं. 1996 कार्तिक कृष्णपक्ष 8 दिने गुरूपुष्ययोगे तीर्थोद्धार साध्वीजी श्रीसुन्दरश्रीजी महाराज की मूर्ति स्थापित॥

इस मूर्ति की प्रतिष्ठा तपागच्छ के अनुयोगाचार्य श्री हितविजय जी म. के शिष्य आचार्य श्री हिमाचलसूरिजी ने 2011 मिति मगसर 7 को अपने समुदाय की साध्वी श्री मांणकश्रीजी, साध्वी श्री प्रसन्न श्रीजी इनकी शिल्प साध्वी श्री करण श्रीजी, साध्वी श्रीभुवनश्रीजी की उपस्थिति में इस तीर्थ का पुनरूद्धार करने वाली प्रवर्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी की छत्री की प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई। जिस पर शिलालेख इस प्रकार है।

प्रवर्त्तिनी साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी की छत्री पर लेख

श्रीश्रीश्री 1008 श्री हितविजयजी महाराज के समुदाय की स्वर्गस्थ स्थविरा साध्वीजी श्रीसणगार श्रीजी की सुशिष्या स्वर्गीय सुशीला प्रवर्त्तिनी साध्वीजी श्री सुन्दरश्रीजी ने महान् परिश्रम द्वारा अनेका अनेक भविजनों को सदुपदेश देकर इस महान् प्राचीन पवित्र तीर्थ का पुनरूद्धार कराया है। विशेष यह है कि उक्त सद्गुरूदेव महाराज के शिष्यरत्न प्रतिष्ठां जनशलाकादिविविधक्रियाकुशल प्रवर श्री श्री श्री 1008 श्री श्री श्री आचार्य महाराज श्री हेमाचलसूरीजी महाराज और उक्त साध्वी श्री माणकश्रीजी तथैववत् शिष्या साध्वीजी प्रसन्नश्रीजी के शिष्या करणश्री भुवनश्री आदि संवत् 1966 सुं इस प्राचीन पवित्र तीर्थ की आज दिन तक देखरेख करते है। लेख सं. 2011 मिती मगसर 7.

जिसकी प्रतिष्ठा पू.साध्वी श्रीजी के गच्छ गुरू तपागच्छाचार्य श्री विजय हिमाचल सूरीश्वरजी म.सा. ने करवाई। इतना ही नहीं पूज्य साध्वी श्रीजी के कालधर्म होने के बाद से प्रतिवर्ष नाकोड़ा जैन तीर्थ पर भगवान श्री पार्श्वनाथजी के पोषवदी दशमी को आयोजित होने वाले मेले की जो पत्रिका छपती है उसमें नाकोड़ा तीर्थोद्धारिका के रूप में पू. महाश्रमणी श्री सुन्दर श्रीजी म.सा. का नाम अवश्य छपता है।

नाकोड़ा तीर्थ के उत्थान, विकास, विस्तार, जीर्णोद्धार में प्रवर्तिनी महाश्रमणी श्री सुन्दर श्रीजी की महत्वपूर्ण ही नहीं अहम् भूमिका रही है जो सदियों तक इनकी तीर्थ भक्ति का स्मरण करवाती रहेगी। आपके ही उपदेश से नाकोड़ा तीर्थ को शाश्वत तीर्थ का स्वरूप मिले इसके लिये आपकी प्रेरणा से आपके श्रद्धालू भक्त तखतगढ़ के संघवी श्री केसरीमलजी अचलाजी ने करीबन 400 वर्षों के बाद भव्य पैदल छ:रीपाल संघ तखतगढ से नाकोड़ा के लिये आयोजित किया। इसके बाद

महाश्रमणी के परम भक्त संघवी श्री केसरीमलजी अचलाजी एवं इनका परिवार श्री नाकोड़ा तीर्थ की सेवा में पू. साध्वी श्री सुन्दर श्रीजी की प्रेरणा से श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्टं कमेटी संघवी परिवार-तखतगढ (राजस्थान) हाल पूना (महाराष्ट्र) सेवारत रहा है। जो इस प्रकार है।

श्री केसरीमलजी अचलाजी संघवी

अध्यक्ष	–	2.4.1937 से 23.12.1940
अध्यक्ष	–	24.12.1940 से 13.12.1941
अध्यक्ष	–	13.12.1941 से 18.12.1943

श्री सूरजमलजी केसरीमलजी संघवी

उपाध्यक्ष	–	15.12.1949 से 12.12.1952
ट्रस्टी	–	12.12.1952 से 30.12.1953
उपाध्यक्ष	–	30.12.1953 से 6.1.1956
उपाध्यक्ष	–	7.1.1956 से 2.1.1959
उपाध्यक्ष	–	3.1.1959 से एडहोक समिति
ट्रस्टी	–	25.12.1959 से 21.12.1962
उपाध्यक्ष	–	21.12.1962 से 11.12.1963
ट्रस्टी	–	11.12.1963 से एडहोक समिति
उपाध्यक्ष	–	28.12.1964 से 14.1.1965
अध्यक्ष	–	15.1.1965 से 17.12.1965
अध्यक्ष	–	17.12.1965 से 15.12.1968
अध्यक्ष	–	15.12.1968 से 30.12.1972
ट्रस्टी	–	30.12.1972 से 20.12.1975
ट्रस्टी	–	29.12.1975 से 10.11.1976

श्री कांतिलालजी सूरजमलजी संघवी

अध्यक्ष	–	26.12.1978 से 22.12.1981

ट्रस्टी	-	22.12.1981 से 17.12.1984
ट्रस्टी	-	6.1.1986 से 16.12.1987
ट्रस्टी	-	16.12.1987 से 11.12.1990
ट्रस्टी	-	12.12.1990 से 7.1.1994
ट्रस्टी	-	7.1.1994 से 4.1.1997
ट्रस्टी	-	4.1.1997 से 29.4.2000
ट्रस्टी	-	29.4.2000 से 19.12.2002

सन् 2002 में ट्रस्ट मंडल के गठन पर आपको ट्रस्ट सलाहकार बनाया। आपने इस पद को स्वीकार नहीं किया। वर्तमान में श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर की समवसरण मंदिर प्रकोष्ठ के सदस्य के रूप में तीर्थ को सेवा दे रहे है।

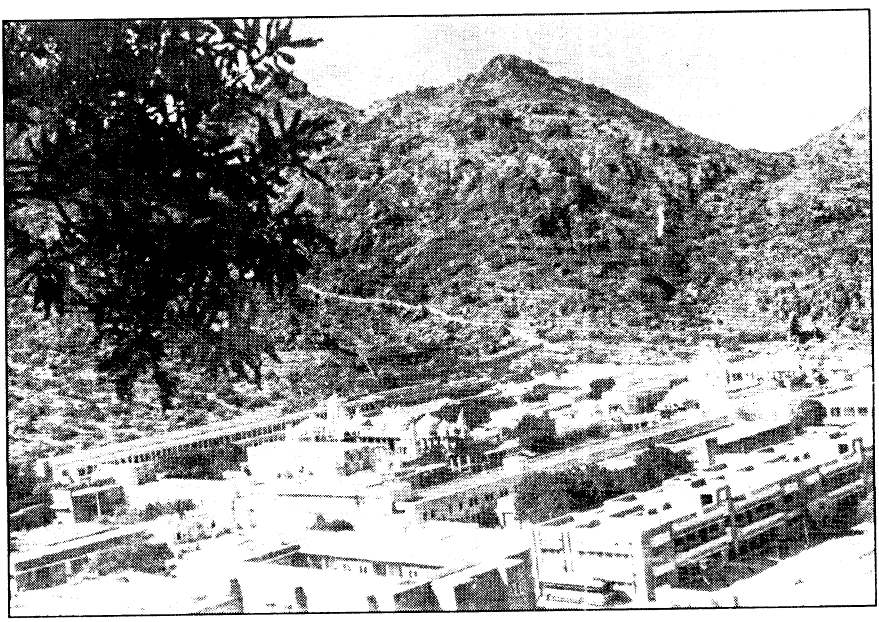

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ मेवानगर (जिला-बाड़मेर) राजस्थान के दर्शनाथ सपरिवार अवश्य पधारें।

लेखक परिचय

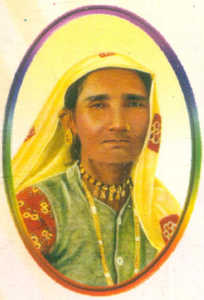

स्व. श्रीमती मथरीदेवी

धर्मपत्नी स्व. श्री सुरतानमलजी जैन बोहरा

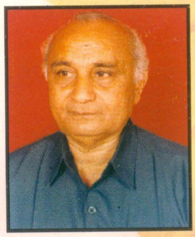

श्रीमती देवी धर्मपत्नी भूरचन्द जैन

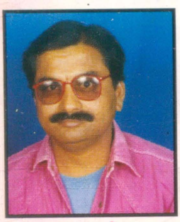

प्रकाश बोहरा

श्रीमती गीगीदेवी

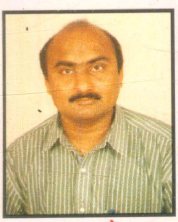

अमृत जैन

श्रीमती मंजूदेवी

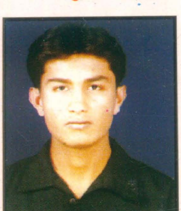

महेन्द्र प्रकाश बोहरा

सुरेन्द्र प्रकाश बोहरा

मनीष अमृत जैन

हर्षवर्द्धनअमृतजैन

नाम	:	भूरचन्द जैन
पिता का नाम	:	श्री सुरतानमलजी बोहरा
माता का नाम	:	श्रीमती मथरीदेवी
जन्मतिथि	:	10 जुलाई, 1936
शिक्षा	:	मैट्रिक - इन्टर
बहन	:	श्रीमती अजोतीदेवी धर्मपत्नी श्री शंकरलालजी छाजेड़
पत्नी	:	श्रीमती देवी पुत्री श्री सोनराजजी छाजेड़
पुत्री	:	श्रीमती पुष्पादेवी धर्मपत्नी श्री पारसमलजी वडेरा
पुत्र	:	प्रकाशचन्द बोहरा, अमृत जैन

सरकारी नौकरी 17 सितम्बर 1958 से 1 अक्टूबर 1983 तक स्वेच्छा से सेवानिवृति 2 अक्टूबर 1983, पत्रकारिता - 1 अप्रेल 1984 से जनसत्ता संवाददाता व अन्य कई राष्ट्रीय स्तर के पत्रों के संवाददाता, कई साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक समाचार पत्र पत्रिकाओं के सम्पांदक प्रधान सम्पादक आदि। अब तक राष्ट्रीय राज्य स्तर के समाचार पत्र पत्रिकाओं में स्वयं के खेंचे फोटो के साथ करीब 2000 से अधिक रचनाऐं आदि प्रकाशित। एक सौ से अधिक रचनाएं आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से वाताओं के रूप में प्रसारित। अब तक 62 पुस्तकों का प्रकाशन। दस से अधिक पुस्तकें प्रेस में छप रही हैं। बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशन के लिए तैयार। 15 रंगीन पोस्टरों का प्रकाशन। सोलह से अधिक स्मारिकाओं का सम्पादन। राष्ट्रीय, राज्य, जिला एवं नगर की विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, कला, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि समाजसेवी पच्चास से अधिक संस्थाओं से संबंध। साहित्य सृजन पर राज्य स्तरीय सम्मान, समाज में मानवसेवा के लिए 'समाजसेवी' सम्मान। सार्वजनिक उपयोग के लिए दानदाताओं को प्रेरित करने पर 'भामाशाह' सम्मान। अहिंसा, नैतिकता, चरित्र निर्माण के प्रचार-प्रसार के लिए 'अणुव्रत सेवी', जैन समाज व शासन सेवा के लिए 'समाज रत्न' सम्मान। के अतिरिक्त कई धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, कला आदि संस्थाओं में कार्य करने पर कई बार सम्मान। रूचि-समाजसेवी, साहित्य सृजन, फोटोग्राफी, पत्रकारिता। पत्ता-जूनी चौकी का वास, बाड़मेर (राज़स्थान)

समाजसेवी

श्री चम्पालाल पारख

अध्यक्ष

श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट मण्डल

मेवानगर (बालोतरा) जिला-बाड़मेर (राज.)